Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक संस्कृति में गोधन

डॉ. रचना तिवारी

बैल ऊर्जा
विक कृषि
3
रतीय दर्शन
दिक संस्कृति
पर्यावरण संतुलन
आत्मनिर्भर भारत
रोजगार के अवसर
संवैधानिक अधिकार
पंचगव्य आयुर्वेद के द्वारा शतायु निरोगी जीवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक संस्कृति में गोधन

aarshsahitya@gmail.com
@aarshsahitya
ओ३म्
+ 91 9541417278
+ 91 9541317278
आर्ष साहित्य ऑनलाईन बुक स्टोर
वेद
वेदांग
मनुस्मृति
योग ग्रंथ
संस्कृत साहित्य
आयुर्वेद साहित्य
सभी प्रमुख
आर्ष साहित्य
प्राप्त करने के लिए
उपवेद
ब्राह्मण ग्रंथ
उपनिषद्
इतिहास ग्रंथ
संपूर्ण गुरुदत्त साहित्य
www.aarshsahitya.com
पर आपका स्वागत है।

डॉ. रचना तिवारी

081
167990
आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com
Central Library
167990
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक संस्कृति में गोधन

R
089.9143
TIW-V

© लेखकाधीन

मूल्य	:	रु. 350 ₹-180-=
संस्करण	:	प्रस्तुत रूप में प्रथम बार 2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	9213527666, 07065618655, 011–23553624
ऑफिशियल व्हाट्सऐप	:	9213527666
पृष्ठ संयोजन	:	विकास सैनी (09971840182)
मुद्रक	:	संजीव आफसेट, दिल्ली

Vaidik Sanskriti Mein Godhan

By Dr. Rachna Tiwari

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	भूमिका	11
1.	वैदिक संस्कृति का परिचय	15
2.	वैदिक संस्कृति में गोधन	35
3.	वैदिक संस्कृति में गोधन के उपयोग एवं महत्त्व	55
4.	वैदिक संस्कृति में गोधन के महत्त्व का परवर्ती संस्कृति पर प्रभाव	76
5.	वर्तमान में गोधन का समीक्षात्मक मूल्यांकन	92
6.	गोधन एवं गोसंरक्षण के लिए निर्मित संवैधानिक प्रावधानों की समीक्षा	111
7.	भारतीय आहार–व्यवस्था में गोधन के योगदान	128
	प्रासंगिक सुझाव एवं उपसंहार	145

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामना संदेश

ॐ
जय श्री कृष्ण — गावो विश्वस्य मातरः — जय श्री राम

भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद
गोवंश हत्या एवं मांस निर्यात निरोध परिषद, राष्ट्रीय गोरक्षा आन्दोलन समिति

केन्द्रीय कार्यालय : संकट मोचन आश्रम हनुमान मंदिर रामकृष्णा पुरम सेक्टर - 06 नई दिल्ली - 22 (फोन नं. - 011-26174732)

उमेश चन्द्र पोरवाल
केन्द्रीय मंत्री
पालक गुवाहाटी क्षेत्र
70009-67150
77738-59023

विश्व हिन्दू परिषद
पांचजन्य भवन
बरठाकुर मिल रोड, उलुबारी,
गुवाहाटी -781 007 (असम)
0361-2469810, 2469981

प्रत्रांक : दिनांक :

।। ॐ।।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि डा.रचना तिवारी जी ने गाय का आध्यात्मिक महत्व पर शोध कर **वैदिक संस्कृति में गौधन** नामक ग्रंथ के लेखन में वो विषय वस्तु दी है जो मानव जीवन के वे सब संस्कार जो लौकिक और परलौकिक उन्नति का मार्ग को प्रशस्त करते हैं एवं मानव व कृषि स्वास्थ्य में स्वस्थ सम्पन्न राष्ट्र के सर्वांगीण ग्राम विकास में स्वावलम्बी व समृद्धिशाली का मार्ग प्रशस्त करती है जो भारतीय संस्कृति का दर्शन कराती है जो भारत की बहुआयामी संस्कृति, विविधता एवं अनेकता में एकता का सन्देश देती है। भारतीय गौधन सभी मनोकामाओं की पूर्ति करता है इसलिए कामधेनु सर्वदेवमयी गौमाता भारतीय संस्कृति की परिचायक है गौसेवा, गौरक्षा, गौसंवर्धन, गोपालन तथा पंचगव्य भारतीयों के जीवन के अन्नय अंग है।

प्राचीन काल में महाराजा दिलीप ने पुत्र प्राप्ति हेतु गुरू वशिष्ठ के आश्रम में जाकर सपत्नीक नन्दिनी गौमाता की सेवा की गौमाता के आशीर्वाद से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

ऐसे ही भगवान श्री कृष्ण जी ने अनन्त गौसेवा एवं गौ चारण किया एवं ग्वाल वालों व गौमाता के रक्षार्थ गोवर्धन पर्वत भी उठाया और गोपाल गोविन्द कहलाये।

भारत के ऋषि मुनियों का चिन्तन रहा है "गावोविश्वस्य मातारःगावों रक्षति रक्षितः"अर्थात गाय विश्व की माता है गाय की जो रक्षा करता है गाय उसकी रक्षा करती है। इसलिए वैदिक काल में जिसके पास जितना गौधन रहता था वह उतना ही गौरवशाली माना जाता था।

वेदों में धर्मशास्त्रों में गौमाता की अनन्त महिमा का वर्णन है। गाय को बहुत पूज्य और पुनीत माँ मानते हैं। कहते हैं। **"जिसके घर तुलसी और गाय उस के घर वैद्य न जाय"**। यानि तुलसी और गाय में अनेक गुण है घर आंगन में तुलसी और घर के बाहर गाय। यह दोनों सकारात्मक ऊर्जा निर्माण करती है।

आज•वैज्ञानिकों के शोध में सिद्ध हो चुका है। भारतीय देशी गाय (गौवंश) ही उत्तम है जिसका गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी, पंचगव्य है। जो जन्म से लेकर शरीरांत तक उपयोगी ही उपयोगी है। देशी गाय का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ लाभदायक है जो ए-2 दूध के नाम से जाना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गोमूत्र अनेक असाध्य रोगों के निदान में सफल सिद्ध हुआ। व कृषि में फसल रक्षक, कीट नियंत्रण के रुप में सफल हुआ। अनेक गो उत्पादों का एवं पंचगव्य औषधियों का सफलता से निर्माण हो रहा है।जो मानव स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। गोमूत्र अर्क, गोमूत्र नीम के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पांच पेटेंट *गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार नागपुर महाराष्ट्र को प्राप्त हो चुके हैं।

डा.रचना जी के इस ग्रंथ से वैदिक संस्कृति में गौधन की कितनी आज महत्वता है को दर्शाता है

आज जमीन की घटती उर्वराशक्ति, पर्यावरण असन्तुलन एवं जलप्रदूषण, गिरता स्वास्थ्य, कुपोषण व गरीबी जैसी समस्याओं से मुक्ति गौधन के द्वारा पूर्णतः संभव है।

गौवंश आधारित कृषि जो पर्यावरण रक्षक है जैवविविधता को बनाये रखने वाली, स्वास्थ्य वर्धक एवं आरोग्यकारी है, स्वावलम्बी है, अहिंसक है,।

भारतीय संस्कृति हमें सिखलाती है, हम स्वस्थ रहे, प्रकृति स्वस्थ रहे, हवा और जल स्वस्थ रहे, यानि गौ ग्राम का विकास, गौवंश आधारित कृषि हर मेढ पर पेड, हर घर आंगन में वृक्ष, स्वदेशी बीज खाद औषधियाँ हर हाथ को काम हर खेत को पानी स्वदेशी स्वाभिमानी युक्त जीवन रचना यानि गौ आधारित कृषि नीति, *अर्थ नीति, उद्योग नीति, स्वास्थ्य नीति, शिक्षा नीति से ही*इस वैदिक संस्कृति में गौधन ग्रन्थ समाज जागरण में एवं नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा ऐसा विश्वास करता हूँ। ग्रन्थ कि लेखिका डा.रचना तिवारी जी ने बहुत ही प्रखरता प्रस्तुत किया इसकी सफलता के लिए अनन्त हार्दिक शुभकामनाएँ।मैं इस हिन्दी साहित्य सदन को इस ग्रन्थ के प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ। तथा इसके सफल प्रकाशन की मंगलमय कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

ॐ जय गौमाता

उमेश चन्द्र पोरवाल
केन्द्रीय मंत्री
भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद
मो. 7000967150/7773859023

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि सौ. डॉ. रचना तिवारी ने विशेष परिश्रम करके वैदिक संस्कृति में गोवंश नामक पुस्तक का कार्य संपन्न किया है। यह कठोर तपस्या जैसा कार्य रहा है। भारतीय देशी गोवंश के प्रति किया गया यह कार्य उत्तम श्रेणी का है। ज्ञान विज्ञान के धरातल पर तथा व्यावहारिक स्तर पर यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है।

हमारी असंख्य मंगलकामनाऐं
सुनील मानसिंहका
गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपुर महाराष्ट्र.

◆ ◆ ◆ ◆

मुझे एवं पत्नी राधा देवी को गर्व का अनुभव हुआ जब हमारी पुत्री ने गौमाता के विषय को समाज के सामने पुस्तक रूप में लाने निर्णय लिया। मुझे हमेशा लगता कि इस विषय पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। इस पुस्तक के माध्यम से कुछ ऐसे विषय संज्ञान में आयेंगे जिनसे वैदिक काल में गायों के रख रखाव, संरक्षण, संवर्धन आदि विषयों की कार्यशैली को समझने में सहायता मिलेगी।

मैं अपनी पुत्री डॉ. रचना तिवारी को पुस्तक के लिये बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

श्री भगवती प्रकाश मिश्रा एवं राधा मिश्रा
भूतपूर्व सैनिक, भारतीय थल सेना
झींझक, कानपुर उत्तर प्रदेश

◆ ◆ ◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर की असीम कृपा एवं माँ सरस्वती के आशीर्वाद से मेरी बहू डॉ. रचना तिवारी ने गौमाता की सेवा में सुमन अर्पित किये हैं। सनातन संस्कृति में गाय को माँ का स्थान प्राप्त है। मैं स्वयं भी पिछले पच्चीस वर्षो से गौसेवा में लीन हूँ। पुस्तक में वैदिक से वर्तमान परिस्थियों पर प्रकाश डाला गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक समाज के लिये लाभप्रद होगी

गोपी कृष्ण तिवारी
गौसेवक, जबलपुर, मध्यप्रदेश

◆ ◆ ◆ ◆

प्राचीन साहित्य वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में विभाजित है। संस्कारों से संस्कारित संस्कार लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति के मार्ग को प्रषस्त करते हैं। भारतीय संस्कृति का मूल स्त्रोत वैदिक साहित्य पर आधारित है। यह संस्कृति मानव को देश जाति के चिंतन, मनन, आचार, बोली, भाषा, वेश भूषा , आदि समस्त तत्वों को समावेशित करते हुए समग्र उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। विश्व के समस्त देशों की अपनी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति के मूलाधार वेद हैं। वेद मंत्रात्मक भाग को कहते हैं सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद है यह आर्यो के धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक वैज्ञानिक विचारों को प्रभावित करते हुए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक सात अध्यायों में विभाजित है जिसमें कार्य व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, नारी का स्थान, भौगोलिक स्थिति, शिक्षा पद्धति, रहन सहन, भोजन (खाद्य पेय) आर्थिक उन्नति आदि को वर्णित करते हुए गोधन गोशाला प्रबंधन, पशुसंवर्धन आदि का वर्णन किया गया है।

गौसेवा का ऐतिहासिक महत्व के साथ आध्यात्मिक महत्व भी है जो पंचगव्य के रूप में वर्णित है। जीवन की दृष्टि से गोमय लेपन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गोमय लेपन से विषाणु समाप्त होते है। समस्त संस्कारों में गाय का अत्यंत महत्व सर्वविदिक है। इस पुस्तक में गोवंश की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही रोग निरोधक पंचगव्य का विशिष्ट महत्व औषधीय दृष्टि से प्रतिपादिक किया गया है। यह पुस्तक गोवंश के संदर्भ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महत्वपूर्ण होगा भगवान कृष्ण का संदेश गोवंश के लिए ही है। कि –

गावो मे चाग्रतां सन्तु, गावो मे सन्तु दृष्टतः।
गावो मे हृदयं सन्ति, गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

डॉ. विष्णुमित्र त्रिपाठी
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष संस्कृत पाली एवं प्राकृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर मध्य प्रदेश।

◆ ◆ ◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

विश्व के सभी देशों की अपनी अपनी संस्कृति है। आर्यों का धर्म वैदिक कहलाता है। आर्य या हिन्दू अपने धर्म का मूल वेदों में मानते हैं।''वैदिक संस्कृति में गोधन इस पुस्तक में गायों को लेकर जो बहुत सी संभावनाऐं प्रत्येक क्षेत्र मे हैं उनको ध्यान में रखकर कार्य किया जाएगा। इस विषय पर बहुत से शोधकार्य हो चुके हैं बहुत सी बातें प्रकाश में आ रही है जो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, बहुत से शोध कार्य चल रहे हैं। विश्व में प्रत्येक देश देशी गाय पर रिसर्च कर रहा है, उसके महत्त्व को समझ रहा है किन्तु गो के अपने देश में ही कोई उसकी महत्ता को पहचान नहीं रहा कि वह क्या है, उसमें कितनी शक्ति है, उसके क्या गुण हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से उस पर होने वाले अनुसंधान और उसके गुण दोषों को प्रस्तुत किया जाएगा। हमारे जीवन में उसका क्या मूल्य है? वह हमारे जीवन को क्या से क्या करने में सक्षम है। उसकी कमी होने पर हमारी संस्कृति पर क्या घातक प्रभाव पड़ रहें हैं। उसकी रक्षा न कर पाने की स्थिति में हम स्वयं की रक्षा नहीं कर सकेंगे। पृथ्वी पर जीवन नष्ट हो जाएगा। पर्यावरण पर उसका अत्यंत दुष्प्रभाव पड़ने लगा है। आए दिन आने वाले भूकंप इसका ठोस उदाहरण हैं।

प्रकृति अनियमित होने लगी है, हम इस बात को समझ नहीं पाते इस कारण हमें पता ही नहीं है कि इस सब का मुख्य कारण गोवंश का विनाश होना ही है। पुस्तक को निम्न विषयों के माध्यम से सात अध्यायों में बांटा गया है। जिसके पश्चात् उपसंहार और प्रासंगिक सुझाव होंगे और अंत में सन्दर्भ सूची को प्रस्तुत किया जाएगा। कुछ चित्रों का भी स्थान रहेगा उसकी सूची अंत में रखी जाएगी।

प्रथम अध्याय में वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, नारी का स्थान, भौगोलिक स्थिति, शिक्षा पद्धति, रहन सहन, भोजन एवं पेय पदार्थ, वस्त्र परिधान, आभूषण, आर्थिक स्थिति, कृषि का परिचय, गृह निर्माण, गृहोपयोगी वस्तूओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम, गोशालाके विषय में, पशु संवर्धन, पशु संपदा की उपयोगिता, उस समय के उद्योग धंधे, गोवंश का सामान्य परिचय, उनका नाम, वर्गीकरण ,नंदियों का परिचय, आदि विस्तार से प्रस्तुत है।

भागवत्शास्त्र बैल को धर्म और गाय को पृथ्वी के रूप में देखते हैं। राजा परीक्षित ने गाय और बैल के ऊपर अत्याचार करने वाले कुपुरूष के रूप में ही कलयुग को देखा था, धर्म के रहने पर ही धरती रह सकती है। धरती की रक्षा करने के लिये ही धर्म को धारण किया जाता है। शिव के भक्त ,कृष्ण के भक्त इस बात को ह्रदय में धारण करने पर गोसेवा के महत्त्व को समझ सकेंगें।

द्वितीय अध्याय में वैदिक संस्कृति में गोधन के विवरण विषय पर चर्चा की गई है। इस अध्याय गो शब्द का प्रयोग कहां किस अर्थ में किया गया है ,गो दुग्ध से क्या अंतर होता है, रोगाणुओं को नष्ट करने की क्षमता, सौर विकिरण, गोसेवा, गोग्रास, गोयज्ञ, गोसंस्कृति , राजा के दायित्व, गो संवर्धन और उनकी सुरक्षा, गो मंत्रालय और उसके क्या दायित्व हैं, यह भी विस्तार से प्रस्तुत है।

गो के गले में घण्टी बांधने का क्या कारण है इस प्रकार की बातों को भी स्पष्ट किया गया है।

तृतीय अध्याय में धर्म की दृष्टि से, पर्यावरण की दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से आयुर्वेद की दृष्टि से, उसके महत्त्व को और उससे होने वाली आय को स्पष्ट किया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर तीन प्रकार की तरंगें चलती हैं इनका पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ता है गो से ये किस प्रकार से संबन्धित होती हैं ये सब इस शोध में यह सिद्ध किया गया है

चतुर्थ अध्याय में वैदिक संस्कृति में गोधन के महत्त्व एवं परवर्ती संस्कृति में गाय की उपयोगिता, सम्मान, महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। वैदिक संस्कृति के पश्चात् भी हमारे देश में गो की महत्ता में कोई भी कमी नही आई थी, इसके पश्चात पश्चिमी देशों ने हम पर आक्रमण किए हैं।

गोहत्या, गोउत्पीड़न का प्रथम प्रयास भारत में इस्लाम धर्म के आगमन से बताया जाता है।

इन्हीं पांच शताब्दियों में बड़ी संख्या में ग्रामीड़ बंगाल का इस्लाम में मतान्तरण हुआ। इस्लामी परंपरा में भेड़ बकरी, को बलि के रूप में मारकर खााने का चलन रहा है, सात या ज्यादा लोग दावत में शामिल हों तो ऊंट को मारकर खाने का चलन रहा है। गाय की बलि चढ़ाने का प्रश्न ही नहीं उठता इस्लामी भूमि पर गाऐं नहीं होतीं थी। किन्तु ऐसा लगता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विजेताओं के राजनीतिक प्रभुत्व को बढ़ाने के लिए इस वैमनस्य को कम करनेकी दिशा में प्रयास किए जाते रहे, अंग्रेजों की नीयत आदि के विषय में विस्तृत चर्चा की गई है।

पांचवें अध्याय में वर्तमान में गोधन का मूल्यांकन उसके गुण दोषों के आध ार पर किया जाता है किन्तु उसके गुण मनुष्यों को पता ही नहीं हैं।उन गुणों का वर्तमान में किस प्रकार से उपयोग किया जा सकता है यह इस अध्याय में बताया गया है जैसे–प्रदूषण एवं आणविक विकिरण से बचाव के लिए गोबर का प्रयोग, कूड़े, कचरे का शोधनकर खाद बनाने की गोबर की दक्षता, वैकल्पिक उर्जा, गोबर गैस संयंत्र के द्वारा गैस का उत्पादन, पशुगत उर्जा , दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का निर्माण,आदि के द्वारा वर्तमान में सके लाभ को समझाया गया है कि कैसे आज भी यदि हम सिर्फ गौ के आश्रित होकर रहते हैं तो हम अपना जीवन किस प्रकार से आसान कर लेते हैं।

आज भारत दुनिया भर में उभरती हुई महासत्ता के रूप में प्रस्तुत हो रहा है, लेकिन भारत दुनियां की महामंदी से बच निकला इस पर आज की वर्तमान अर्थव्यवस्था को देखकर संदेह उत्पन्न होता है इसीलिए आर्थिक सुदृढ़ता के लिए भारत को फिर स्वदेशी आलंबन लेना होगा इसमें भी प्रथम प्राथमिकता देशी गोवंश को देनी होगी। आज देश की 12 प्रतिशत भूमि बंजर होने की कगार पर है। ईंधन आयात पर भारत सबसे अधिक खर्च करता है।शहरों का प्रदूषण और और रासायनिक मिश्रित खादों से उपजाए गए अन्न को खाने से होने वाली बीमारियों से हर वर्ष लाखों लोग मरते हैं भारत को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाने के लिए कृषि की क्या भूमिका है?

छटवें अध्याय में भारतीय संविधान में गोसंरक्षण के लिए क्या प्रावधान निर्मित किए गए हैं। इनका विस्तार से वर्णन इस अध्याय के अंतर्गत आता है। भारतवर्ष के अनेक राज्यों में इस कानून की क्या रूपरेखा है यह सब बताया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले और आज तक गोहत्या बंदी के लिए कई आंदोलन हुए हैं। कई चल रहे हैं। गोहत्या बंदी के लिए भारत के हर राज्य में कानून हैं। लेकिन उनमें बहुत सी खामियां हैं। सरकार की ओर से इस विषय पर क्या कार्य किए गए है।

सातवें अध्याय में भारतीय आहार– व्यवस्था में गोधन का क्या योगदान है? इसके क्या लाभ–हानि है? इस सब का विस्तृत वर्णन प्रमाणों के आधार पर किया जाएगा। गाय का ताजा दूध, दही, मक्खन सभी मानव शरीर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्पूर्ण बीमारियों को रोकने के लिए जाने जाते है एवं रोगों के हो जाने पर उनके उपचार के रूप में कार्य करते हैं वे किस प्रकार से कार्य करते हैंयह सब कुछ शास्त्रों एवं आधुनिक विज्ञान के अनुसार गाय के शरीर में किस पैदा होते हैं इनका प्रभाव मनुष्य और पर्यावरण पर क्या पड़ता है यह सब इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा। आणविक विकिरण से हमारी रक्षा करने में गौ किस प्रकार से उपयोगी होती है? असाध्य रोगों को नष्ट करने हेतु गोमूत्र किस प्रकार से कार्य करता है, उसके गुण क्या है? किन रोगों प रवह कार्य करता है।वर्तमाान समय में करोड़ों रूपये दवा एवं अस्पतालों में खर्च हो रहे हैं। फिर भी रोग एवं रोगियों की संख्या इतनी तीव्रता से बड़ रही है। ऐसे में पंचगव्य का किस प्रकर से उपयोग करके हम अपने धन को बचा सकते है, इसे एक चलता फिरता औषधालय क्यों कहते हैं। हमारे पूर्वजों ने गाय को इतना महत्त्व क्यों दिया इसका क्या कारण है आदि। गोधन कृषि भारत की अर्थ व्यवस्था का मूलाधार क्यों है? तथा उसकी बहुआयामी उपयोगिता क्या है?

प्रस्तुत पुस्तक में प्रमुख रूप से वेदों के संदर्भों को आधार बनाकर ''वैदिक संस्कृति में गोधन को पूर्णता से संपन्न करने का प्रयास किया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

वैदिक संस्कृति का परिचय

1. वैदिक संस्कृति का सामान्य परिचयः मानव जीवन के वे सब संस्कार जो लौकिक और पारलौकिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करते हैं। उसके सर्वागीण जीवन का निर्माण करते हैं। उसकी संस्कृति कहे जाते हैं। संस्कृति किसी भी देश जाति या समाज की आत्मा होती है। इसमें उक्त देश या जाति के चिन्तन, मनन, आचार विचार बोली भाषा, वेशभूषा, आदि बातों का समावेश होता है उन सभी वस्तुओं के समूह को जिनमें ज्ञान धार्मिक विश्वास, कला, नैतिक कानून,परम्परायें तथा वे सब अन्य योग्यतायें सम्मिलित होती हैं जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते सीखता है। उसे ही संस्कृति कहते हैं। यह एक मानसिक प्रक्रिया है। इस संस्कृति में सौन्दर्य तथा मानवीय अनुभूतियों कों हृदयंगम करने की पूर्ण क्षमता है। संस्कृति प्राणि की तमाम प्राकृतिक चीजों और उन उपहारों के गुणों का सार है।

विश्व के सभी देशों की अपनी अपनी संस्कृति है। वैदिक परिचय की दृष्टि से वेद एवं वैदिक साहित्य दोनों की अलग अलग श्रेणियां हैं। वेद शब्द से जहां चार मंत्र संहिताओं का ज्ञान होता है। वह वैदिक शब्द से वेद विषयक बहुविध सामग्री का बोध होता है।

यह सामग्री ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद की है जो मंत्र संहिताओं से भिन्न नहीं हैये ही वैदिक साहित्य के ग्रंथ है। वैदिक वाङ्मय का एक क्रमिक रूप है संहिता ब्राह्मण आरण्यक उपनिषद् है।

ऋग्वेद भारतीय संस्कृति पुरातनतम ग्रंथ है। इसकी ऋचाओं में वैदिक युग की सभ्यता और संस्कृति मूर्त रूप से निहित है। ऋग्वेद में आर्यो के धार्मिक राजनीतिक सांस्कृतिक सामाजिक वैज्ञानिक आदि सभी प्रकार के विचारों का उनकी प्रगति का विस्तृत वर्णन है। आर्यो का धर्म वैदिक कहलाता है। आर्य या हिन्दू अपने धर्म का मूल वेदों में मानते हैं।

1.1. भूगोलः वेदों में राष्ट्र व देश की स्पष्ट कल्पना है। राष्ट्र की उन्नति, राष्ट्र की सुरक्षा, राष्ट्र का संचालन, राष्ट्र भावना आदि का अनेक मंत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उल्लेख किया गया है। यजुर्वेद में राष्ट्र की सुरक्षा के लिये सदा जागरूप रहने का निर्देश है।

अथर्ववेद में राष्ट्राणि के द्वारा अनेक राष्ट्रों का संकेत किया गया है। अथर्ववेद में देश शब्द का भी प्रयोग है। देश पर आने वाले संकटों के निवारण की प्रार्थना की गयी है। इस प्रकार से गहन अध्यन करने पर सम्पूर्ण भौगोलिक स्थिति का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है।1

1.2. समाजिक जीवनः वैदिक साहित्य में समाज शास्त्रीय सामग्री अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होती है। यहां विस्तृत विवेचन अभीष्ट नहीं है अतः मुख्य विषय संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

1.3. वर्ण व्यवस्थाः वर्ण व्यवस्था का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ है। यजुर्वेद में इन चारो वर्णों के कर्तव्यों का बहुत सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य, शूद्र जिनमें ब्राह्मण का कार्य ज्ञान शिक्षा व धर्म सम्बन्धी सभी कार्य, क्षत्रिय का कार्य क्षत्र, राष्ट्, देश की सुरक्षा करना था।2 वैश्य का कार्य देश देशान्तर से व्यापार व धन की सृष्टि करना तथा देश की अर्थ व्यवस्था को संभालना था। शूद्र का कार्य श्रम साध्य सभी कार्यों को करना था। वैदिक काल में इन चारो वर्णों में सामंजस्य, प्रेम, सदभाव था छोटे बडे, स्पृष्य अस्पृष्य आदि के भाव सर्वथा नहीं थे।

1.4. आश्रम व्यवस्थाः वेदों में चार अश्रमों का उल्लेख किया गया है। जिनमें भी ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ आश्रम के विषय में बहुत साक्ष्य प्राप्त होते हैं। मानव जीवन को आयु के आधार पर चार भागों में विभाजित किया जाता था जिससे समाज में एक सामंजस्य बना रहे।3 प्रत्येक व्यक्ति इन नियमों का पालन खुशी से करता था।

1.5. वेदों में नारी का गौरवः वेदों में नारी को बहुत आदरणीय स्थान दिया गया है। यह पुरूष की सहयोगी है। विवाह के पश्चात उसे पतिगृह की गृहस्वामिनी का अधिकार प्राप्त होता है। वेदों में नारी के शौर्य की बहुत चर्चा की गयी है। ऋग्वेद में स्त्री सेना का वर्णन किया गया है। मुदगलानी के लिये कहा गया है कि उसने असुरों से युद्ध करके गायें छुडा ली थी। वेदों में बाल विवाह निसिद्ध है।4

पत्नी के लिये पतिव्रत धर्म है तो वहीं पति के लिये पत्नीव्रत धर्म का पालन करना अनिवार्य बताया गया है। नारी अपनी इच्छा से विवाह भी कर सकती थी। इसी को स्वयंवर कहा गया है। वेदों में विधवा विवाह का समर्थन प्राप्त होता है। पति की मृत्यु के उपरांत पत्नी संतान व अपने जीवन निर्वाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिये नवीन पति से विवाह कर सकती है।

ऋग्वेद में कहा गया है कि हे नारी मृत पति को छोड़कर विवाह के इच्छुक दूसरे पति को स्वीकार करो। अथर्ववेद के एक मंत्र में संबन्ध विच्छेद करके दूसरे पति से विवाह करने का उल्लेख है। पुनर्विवाह करने वाली स्त्री को पुनर्भू कहा गया है।

1.6. शिक्षा पद्धतिः शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा का सर्वांगीण विकाश करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वेद ने दो साधन बनाये हैं 1 तप, कठोर अनुसासन 2 दीक्षा समर्पण।कठोर अनुसासन और आत्मसमर्पण ही इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। प्राचीन शिक्षा पद्धति में संयम व चरित्र को बहुत महत्त्व दिया गया है। गुरू व शिष्य दोनो के लिए यह अनिवार्य गुण बतलाया गया है।

1.7. भोजन एवं पेय पदार्थः भोज्य पदार्थों में घृत दुग्ध, दधि, और नवनीत के अतिरिक्त इन पदार्थों का उल्लेख मिलता है अपूप, स्थालीपाक, मधुपर्क, धानाः, सत्तू करम्भ, परीवाक, इक्षु आदि का उल्लेख प्राप्त होता है। अथर्ववेद में दूध–दही से बने पकवानों के ये नाम दिए गये हैं क्षीरवान, दधिवान, द्रप्सवान, रसवान, मधुपर्क, सोमरस, आदि का उल्लेख मिलता है।5

पेय पदार्थों में सोम और गव्य, दूध, दही, मठा मुख्य थे। सुरा असुरों के पेय में थी। ओषधी के रूप में भी इसका प्रयोग होता था। ऋग्वेद में सुरा को द्यूत आदि के तुल्य हेय और त्याज्य बताया है। वेदों में इन फलों का उल्लेख है बिल्व बेल, उदुम्बर गूलर, पीलु पिलकना, कर्कन्धु बेर, उर्वारूक या उर्वारू ककडी खरबूजा या तरबूज, पिपल पीपल का फल, कुवल बेर आदि

1.8. वस्त्र या परिधानः वैदिक काल में वस्त्र उद्योग पर्याप्त उन्नत अवस्था में था। वेदों में तीन प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख है। सूती, रेशमी, ऊनी, सूती वस्त्रों के लिये वासस् शब्द है। रेशमी वस्त्रों के लिये तार्प्य शब्द है। ऊनी वस्त्रों के लिये ऊर्णायु शब्द है। साधारणतया उस समय दो वस्त्रों का व्यवहार होता था वासस् नीचे के भाग का वस्त्र व अधिवास ऊपरी भाग को ढकने का वस्त्र था। उपर से डाले जाने वाले वस्त्र को अधिवस्त्र कहते थे। हल्की चादर को पर्याणहन कहते थे।6

1.9. आभूषणः वेदों में अनेक आभूषणों का वर्णन है। इसके दो भेद थे जो कि निम्न लिखित है

1. मणिजटित
2. मणिरहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्न धारण करने वाले को रत्निन् या रत्नधा कहते थे। ये आभूषण मुख्य थे–

निष्क	यह गले में पहना जाने वाला सोने का आभूषण था। पहनने वाला निष्कग्रीव कहलाता था।
रूक्मः	यह छाती पर लटकने वाला सोने का आभूषण था। पहनने वाला रूक्मवक्षस या रूक्मिन कहलाता था।
हिरण्य प्रवर्त मणिंमाला	यह हाथ में पहना जाने वाला कंगन आदि है।
कर्णाभरण	यह कान में पहना जाने वाला कर्णाभरण है।
मणिग्रीव	यह रत्नजणित सोने की माला है। यह मणिग्रीव कहलाती है।
खादिः	यह पैर में पहना जाने वाला आभूषण बताया जाता है।

अथर्ववेद का कथन है कि सोने, चांदी के आभूषण पहनने से व्यक्ति दीर्घायु होता है। अकालमृत्यु से बचकर वृद्धावस्था तक जीवित रहता है।

1.10. गृहनिर्माणः वेदों में गृह के अर्थ में आयतन, वास्तु, पस्त्या, हर्म्य, दुरोण आदि शब्द प्रयुक्त हुए है।7 ये गृह की विभिन्न विशेषताओं को बताते हैं। अथर्ववेद के दो सूक्तों में गृहनिर्माण की प्रक्रिया बड़े विस्तार से बतायी गई है। इसमें दो कमरों से दस कमरों वाले मकान के निर्माण का वर्णन है। उपमित शब्द से निर्देश है कि मकान नक्से के अनुसार ही बने जिसमें ये कमरे अवश्य ही हों–

हविर्धान	:	राशन को रखने का कमरा
अग्निशाला	:	रसोइघर
पत्नी सदन	:	पत्नी का कमरा
सदस	:	बैठने का कमरा, बैठक
देवसदन	:	अतिथि का कमरा

अथर्ववेद, यजुर्वेद में वातानुकूलित भवन के निर्माण का भी उल्लेख है। शयनासन के अंतर्गत निम्न वस्तुए आती हैं–

शयनायन और पात्र : फर्नीचर के लिये प्राचीन शब्द शयनासन व गृहोपस्कर है।

प्रोष्ठ : यह तख्त या बेंच है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तल्प : यह बहुमूल्य पलंग के लिये है।
वह्य : यह पालकी या झूला है। स्त्रियां इस पर सोती भी थीं।
कशिपु : यह सोफा के लिये है।
आसन्दी : कुर्सी के लिये प्रयुक्त होता है।
आसन : यह चटाई के लिये है।
पात्र : वेदों में पात्र के लिये निम्न शब्दों का प्रयोग किया गया है।
कुम्भ : यह मिट्टी का घड़ा है।
कलश : यह धातु निर्मित घड़ा है।
आमपात्र : मिट्टी से बने कच्चे बर्तन
नीललोहित : मिट्टी के बने पके बर्तन हैं।
अमत्र : यह पत्थर या लकडी की बनी कुंडी है इससे कटोरे का काम होता था।
असंद्री, अंसध्री : यह पतीला, भगोना है।
ऊखा : यह मिट्टी की बनी कड़ाही के तुल्य बर्तन है।
रजतपात्र : चांदी के बर्तन है।

इसी प्रकार अयस्पात्र, स्थिवि, उलूखल, शूर्प, दृति, चसक आदि बर्तनों का प्रयोग किया जता था।

1.11. आर्थिक जीवन: आर्थिक जीवन में कृषि का महत्त्व अधिक था8मानव जीवन का आधार अन्न है। अन्नों की प्राप्ति कृषि से ही होती थी।कृषि कार्य गौरव का कार्य माना जाता था।अतैव इन्द्र, पूषा देवों को कृषि कार्य में लगाया जाता था। शतपथ ब्राह्मण में पूरे कृषि कर्म को चार भागों में विभाजित किया है।

कर्षण खेत की जुताई करना
वपन बीज बोना।
लवन पके खेत की कटाई।
मर्दन मड़ाई करके स्वच्छ अन्न प्राप्त करना।

1.11.1. कृषि का आविष्कारक: अथर्ववेद तथा ऋग्वेद में राजा वेन के पुत्र राजा पृथी या प्रथु को कृषि विद्या का आविष्कारक माना गया है। इस बात का समर्थन महाभारत के शान्तिपर्व और भागवत पुराण में प्राप्त होता है।9

कृषि के भेद– दो भेदों का उल्लेख किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. **वर्श्यः** वर्षा पर निर्भर रहने वाली कृषि।

2. **अवर्ष्यः** वर्षा पर निर्भर न रहने वाली कृषि।

तैत्तिरीय संहिता में दो फसलों का उल्लेख किया गया है। इन्हें शारदीय खरीफ, वासन्ती रबी की फसल कहा गया है।

1.11.2. पशुपालनः ऋग्वेद और अथर्ववेद में पशुपालन, पशुसंवर्धन से संबद्ध अनेक सूक्त हैं। प्राचीन काल में भारत वर्ष ही नहीं अपितु विश्व भर में पशु संपदा वैभव का प्रतीक था। पशुसंपदा दैनिक जीवन का अभिन्न अंग था।घी, दूध, दही,मक्खन आदि दैनिक आवश्यकतायें थीं। कृषिकर्म, यातायात, भारवाहन के लिये बैल, अश्व आदि की आवश्यकता थी। अतैव पशुपालन और पशु संवर्धन सामाजिक व राष्ट्रीय महत्त्व के विषय थे। प्रचीन आर्यों ने इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये गोष्ठ, गोशाला, व्रज आदि की स्थापना की थी। व्रज एक प्रकार के प्राचीन डेयरी फार्म थे।ऋग्वेद में एक जगह निर्देश किया गया है कि व्रजं कृणुध्वम् अर्थात बाड़ा बनाओ क्योंकि यह दुग्धादि का दाता है। यह मनुष्यों की पेय,खाद्य वस्तुओं की पूर्ति करता है।

1.11.3. गोशालाः व्रज गोशाला के रूप में होते थे अतः इन्हें गोष्ठ कहते थे। यजुर्वेद में गोशाला के लिये गोष्ठान शब्द आया है। व्रज घिरे हुए बाढ़े के रूप में होते थे। इनमें गाय बैल, भैंस आदि सभी आराम से रहते थे। अथर्ववेद में गोशाला के विषय में ये मुख्य बातें कही गयी हैं।

1. गायों आदि के बैठने के लिए पर्याप्त स्थान हो। जिससे वे हृष्ट पुष्ट हों
2. अन्न जल की ठीक व्यवस्था हो।
3. प्रकाश की ठीक व्यवस्था हो।
4. दिन वाली सुविधाए रात में भी रहें।
5. वे इकट्ठे घूम सकें किसी प्रकार का कोई भय न हो।
6. पशुओं को रोग मुक्त रखा जाये।
7. नई गायें आती रहें। सभी हृष्ट पुष्ट हों। वे बच्चों को जन्म दें।
8. गोशाला में पशुओं के पालन पोषण की पूर्ण व्यवस्था हो, जिससे उनकी वृद्धि हो, वे निरोग व दीर्घायु हों।

1.11.4. पशु संवर्धनः अथर्ववेद के अन्य कुछ मंत्रों में पशुसंवर्धन से संबद्ध ये बातें कही गयी हैं। गायों के सुन्दर बछड़े हों, वे हौज में जल पीवें। उन्हें चोरों का भय न हों। पशुओं को शुद्ध वायु मिले, सूर्य का प्रकाश उन्हें शक्ति दे। पशुधन की वृद्धि हो।10

1.11.5. गोमहिमाः वेदों में गाय का बहुत महत्त्व बताया गया है। गाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को विराट् ब्रह्म का रूप माना गया है। उसमें सभी देवों का निवास है। गाय सौभाग्य का चिन्ह है। गाय इन्द्र की प्रतिनिधि है। गाय सोम की पहली घूंट है। एक अन्य मंत्र में कहा है कि गायें आयीं हमारा कल्याण हुआ। ये गोशाला में आनन्द से रहें। जहां गाय आदि पशुओं का संरक्षण होता है वहां धन–धान्य, श्री की वृद्धि होती है। गायों के लिये अथर्ववेद में कहा गया है कि ये कृषि को हृष्ट पुष्ट बनातीं हैं। निस्तेज कों तेजस्वी बना देती हैं। सभाओं में इनका गुंणगान होता है। गाय को अध्न्या बताते हुए। उसे सौभाग्य का चिन्ह बताया है।11

गौ में इन गुणों का समावेश बताया गया है वर्चस, तेज, भग एश्वर्य, यश, पयस, दूध, सरसता आदि। ऋग्वेद और अथर्ववेद से ज्ञात होता है कि गायों आदि के कान पर पहचान के लिए तांबे की शलाका से मिथुन अर्थात दो अंक या दो लकीर कुछ अंक आदि लिख दिए जाते थे जिससे गायकी प्रसव की योग्यता और दुग्ध की वृद्धि होती है। निघन्टु नामक वैदिक कोष में स्वर्ग, द्युलोक, आदित्य के जो 6 नाम दिये गये हैं उनमें एक गौ भी है।

स्वः, पृष्निः, नाकः, गौः, विष्टप्, नभः

ये 6 पद द्युलोक के हैं। सूर्य के वाचक हैं इस प्रकार 'गो' का अर्थ स्वर्गलोक, द्युलोक, सूर्य इस प्रकार हुआ।

1.11.6. पशुहत्या का निषेधः वेदों में पशुहत्या को दण्डनीय अपराध माना गया है। यजुर्वेद में स्पष्ट कहा है अभयं नः पशुभ्यः पशु निर्भय होकर रहें। गाय को अवध्य कहा गया है।12 ऋग्वेद में गोहत्या करने वाले का सामाजिक बहिष्कार करने का निर्देश है। अथर्ववेद में कहा गया है कि द्विपाद, चतुष्पाद, जीवों की हत्या न करो, गाय घोड़े, मनुष्य की हत्या न करो, निरपराध की हत्या करना दण्डनीय अपराध है। यजुर्वेद में पशुओं का नाम लेकर स्पष्ट निर्देश किया है कि गाय, गवय, द्विपाद, चतुष्पाद, एक शफ वाले ऊंट, भेड आदि को न मारो घोडे की हत्या को दण्डनीय अपराध माना गया है।

1.11.7. यज्ञों में पशुबलि निसिद्धः अथर्ववेद में स्पष्ट लिखा है कि यज्ञ में गाय कुत्ते या किसी भी पशु की बलि देना मूर्खता का काम है। यजुर्वेद में भी स्पष्ट निर्देश है कि पशुओं को न मारो।13 इस प्रकार का विवरण पहले दिया जा चुका है इसलिये इसमें ज्यादा विस्तार न करते हुए सिर्फ इतना ही कहा जा रहा है कि पशुबलि वेद विरूद्ध है।

ऐसा प्रतीत होता है कि परकाल के कुछ मांसभक्षी पंडितों ने विभिन्न यज्ञों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में पशुबलि की प्रथा चलाई। यही कारण है कि श्रौतसूत्रों में यत्र–तत्र विभिन्न यज्ञों में पशुबलि का उल्लेख प्राप्त होता है। इस कुप्रथा का दुष्परिणाम यह हुआ कि जैन, बौद्ध धर्म के प्रवर्तकों ने तथ बाद में धर्मावलम्बियों ने यज्ञ पद्धति को ही अमान्य घोषित कर दिया और अपने धर्मों से इस वैज्ञानिक पद्धति का बहिष्कार ही कर डाला।

1.11.8. पशु संपदा की उपयोगिताः वेदों में पशुसंपदा के अनेक लाभों का वर्णन किया गया है।14 जिनमें से कुछ लाभ निम्न हैं–

1. दूध, दही, घी, मक्खन की प्राप्ति होती है।
2. बैलों का कृषि कार्य में उपयोग।
3. भारवाहक पशु के रूप में गर्दभ, बैल ऊँट, खच्चर, आदि का उपयोग।
4. घोड़ों के द्वारा रथ संचालन और उनका युद्ध में भाग लेना।
5. भेड़ आदि के ऊन से ऊनी वस्त्रों का निर्माण।
6. मृत पशुओं की खाल से चर्म उद्योग, जूते, दृति मशक, वर्म कवच आदि का निर्माण।
7. पशुओं के गोबर का खाद के रूप में उपयोग।
8. हाथी के दांत का कलाकृतियों में उपयोग।
9. हाथी, घोडे, ऊट आदि का सवारी के लिए उपयोग।

1.12. विभिन्न उद्योग धन्धेः वेदों में लगभग 140 उद्योगों का उल्लेख किया गया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण उद्योग निम्न हैं–

वस्त्र उद्योग	यह उद्योग सुप्रतिष्ठत था। इसका विस्तृत वर्णन पहले किया जा चुका है।
रथकार, तक्षा, तष्टा, त्वष्टा	बढ़ई के लिए इन चारो शब्दों का प्रयोग मिलता है। इनका कार्य प्रशंसनीय माना जाता था। अतः इन्हें धीवानः कहा गया है।
यांन्त्रिक	यजुर्वेद में यांन्त्रिक का उल्लेख है। यह मिस्त्री है। वर्तमान काल के इंजीनियर होंगे।
स्थयति	राज या मिस्त्री ये उच्चकोटि के भवन बनाते थे।
हिरण्यकार	यह सुनार था।
मणिकार	यह सोने आदि में मणि जड़ने का कार्य किया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
TIW-V
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मार	लोहकार या लोहार को कमार कहते थे। इनको कुशल कारीगर मनीशिणः कहते थे।
चर्मकार, चर्मम्न	यह चमड़े का सामान बनाता था।
पेशिता	नक्काशी या कढ़ाई का काम करने वाला था।
सूचीकर्म	सिलाई का काम करने वाला था। आजकल इसे टेलर कहते हैं।
रजयित्री	वस्त्रों की रंगाई का काम करता है।
मधु निर्माण	यह अच्छा व्यवसाय था। शहद की मक्खी को सरघा कहते थे। उनसे प्राप्त मधु को सरघा मधु कहते थे।
सुराकार	सुरानिर्माण एक बड़ा व्यवसाय था। विभिन्न वस्तुओं को यांत्रिक विधि से अर्क निकाला जाता था।
वप्ता	यह उस्तरे से बाल बनाता था।
मलग	यह वस्त्र धोने का काम करता था।
भिषक	यह वैद्य या चिकित्सक के लिए था।
नक्षत्रदर्श	यह ज्योतिषी के लिये है। यह प्रसिद्ध व्यवसाय था।
प्रश्नविवाक	यह न्यायाधीश होता है।
वणिक	यह व्यापारी है। व्यापार बहुत व्यापक उद्योग था।
द्यूत15	द्यूत बहुत प्रचलित था। जुआरी को कितव कहते थे। द्यूत को भी कुछ लोगों ने आजीविका का साधन बना लिया था। वेदों में इसे दुर्व्यसन माना गया है।

Central Library 16799? Gurukula Kangri Haridwar

भारतीय गौ के विषय में हमारे ज्ञान को सही दिशा देने वाले थे। श्रीकृष्ण भगवान देखा जाये तो गाय का गोबर खेती में उपयोग में लाने के तंत्र की खोज करने वाला अगर कोई पहला वैज्ञानिक है, तो वह है योगीराज कृष्ण। जब गोकुल में कृष्ण अपने बचपन में बडे नटखट थे। माता यशोदा और पूरे गांव को दो दिन भर सताने का काम करते थे। तब माता यशोदा ने उनको पढ़ने के लिए संदीपनी ऋषि के आश्रम में भेज दिया।

गुरू को ज्ञात था कि कृष्ण क्या है। वह कितना नटखट है। वह यहां भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोगों को तंग करेगा इसीलिए उन्होने इनको गोशाला का व्यवस्थापन का कार्य दे दिया। गाय का गोबर निकालना, झाडू लगाना, चारा खिलाना, पानी पिलाना यह काम करते वक्त उन्होंने कुछ बातों का सूक्ष्म निरीक्षण किया कि जब वे गोशाला का गोबर उठा के एक फल के पेड़ के नीचे डालते थे तो उन्हें मालूम पडा कि जिस पेड़ के नीचे वे गोबर डालते हैं वह पेड़ अन्य पेडों की अपेक्षा ज्यादा तेजी से बढ़ रहा है। उसी पेड से दोगुने फल प्राप्त हो रहे हैं। तब उन्होंने सोचा कि ऐसा क्यों हो रहा है। उनके मन में ये सवाल सताने लगा कि जिस पेड़ के नीचे गोबर नहीं डलता वह तुलनात्मक मंद गति से बढ़ता है तथा फल भी कम लगते हैं। ऐसा क्यों?

शिक्षा पूरी होने के बाद वे गोकुल लौटे उस समय गांव गांव में सहस्त्रों गायें होती थीं। हजारों वर्षों से कृष्ण के पूर्वज ग्वाले ही थे। जिनका व्यवसाय ही गोपालन था। बडे गोपालक परिवार के पास हजारों गायें थी। छोटे ग्वाले के पास सैकडों गायें थी।

उस समय अर्थ व्यवहार के रूप में गाय का ही चलन था। यदि किसी वस्तु का आदान प्रदान किया जाता था तो उस वस्तु की कीमत गाय कीमत से जोड़ी जाती थी। तब नगरीय राज्य व्यवस्था थी। छोटे छोटे ग्राम होते थे। कुछ सैकडों गांव की एक ही राजधानी होती थी। वहां का एक प्रशासक राजा होता था। गोकुल गांव मथुरा राज्य का हिस्सा था। और मथुरा के निकट था। वहां का शासक कंस था। जो कृष्ण का मामा लगता था।

प्रत्येक गांव में गायों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद गांव का सभी दूध, दही, मक्खन मथुरा जैसे नगरों में बिकने के लिये चला जाता था। प्रत्येक गोपालक के पास गायों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद उनकी आर्थिक स्थिति बहुत विकट थी। वे अपना दैनिक व्यवहार पूर्ण करने के लिये घर का सारा दूध, दही, मक्खन नगरों में ले जाने के लिये बाध्य थे। गांवों में छोटे बच्चे को पीने के लिये दूध नहीं मिलता था। युवाओं को दही, मक्खन नही मिलता था। उस घटना को पांच हजार वर्ष हो गये हैं। और आज हम देख रहे हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था की आज भी वही स्थिति है। प्रातः पचास लीटर दूध डेरी में डालने वाला किसान आज भी हमारे भारत में खड़ा है। उसके बच्चे आज भी दूध के लिये तरसते हैं।सरकारें विकास की बात करती हैं। लेकिन देहात तो उसी अवस्था में खडे हैं। क्या इसे हम विकास कहेंगें ? एक अति आधुनिक पशुपालन करने वाले एक व्यक्ति के फार्म में अस्सी गायें हैं। उनका पूरी व्यवस्था वैज्ञानिक पद्धति से चलती है। उन गायों को रोज कितना खिलाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, क्या खिलाना है, क्या औषधी देना है। यह सब कंम्प्यूटर बताता है। दो पशु के डाक्टर रहते हैं। हर गाय की अलग अलग फाइल कंम्प्यूटर में रखी है। गाय का दूध मशीन से निकाला जाता है। गोशाला का तापमान नियंत्रित करने के लिये एअरकंडीसनर लगे हैं। एक एक गाय बीस बीस लीटर दूध देती है। इस प्रकार वहां जाकर सर्वेक्षण करने पर जब उनसे पूंछा कि मुनाफा कितना होता है? तो उन्होंने कहा केवल गोबर ही मुनाफा बचता है। इस प्रकार प्रति गाय 20–25 लीटर दूध निकालने वाले गोपालक का शोषण करने वाला मथुरा था आज महानगरों में बसी हुयी शोषण कारी व्यवस्था है।

उस समय नेतृत्व कंस करता था आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां कर रहीं हैं। लेकिन उस समय श्रीकृष्ण थे, योगीराज कृष्ण भूखे प्यासे गोपालक पुत्रों के लिए एक आंदोलन चला दिया उन्होंने गोपालक पुत्रों का एक संगठन बनाया और देहातों से अपने सिर पर रखकर दूध, दही, मक्खन ले जाने वाली माता, बहनों को गांव के बाहर श्रीकृष्ण व उनके साथियों ने रोका उनके घड़े छीनकर गांव के बालकों व युवाओं को खिलाया।

उन्होंने गांव के हर युवा को आदेश दिया कि घर में मांगने से यदि दूध,दही नहीं मिलता तो अपने घर में ही चोरी कर के भरपेट खाओ।श्रीकृष्ण भी अपने घर में चोरी कार के माखन खाते थे। इसीलिये उनका नाम माखनचोर पडा। श्रीकृष्ण ने गांव के युवांओ को एकत्र करके व्यायामशाला में उन्हें शिक्षा दिलवाई, उनको बलवान, पहलवान किया उनकी एक संगठित सेना बनाई।बाद में मथुरा पर आक्रमण करके राजा कंस का विनाश किया। आज उसी आंदोलन की आवश्यकता पुनः हमारे गांवों को है। यह आवश्यकता है कि ग्रामीण व्यवस्था नागरी व्यवस्था पर राज करे।

श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार ग्रामीण व्यवस्था को मजबूत किया उसी प्रकार से 'गो' 'वर्धन' से 'गोबरधन ' यह भी नयी क्रांति का शुभारंभ करने वाले श्रीकृष्ण ही थे। जिसे हम पांच हजार वर्ष पहले की जैविक क्रांति कह सकते हैं। उस समय पृथ्वी का लगभग 90 प्रतिशत भाग रेगिस्तान को छोड़कर जंगलों से ढ़का था। जनसंख्या बहुत सीमित थी। पशुपालन मुख्य व्यवसाय था। खाने के लिए जितनी आवश्यकता थी उतने ही क्षेत्र में फसलें की जातीं थी। जितना क्षेत्र अनाज के लिए चाहिये उतने ही क्षेत्र के जंगल काटे जाते थे।

उस समय स्थलांतरित कृषि पद्धति थी। जिसमें छः या आठ बैल से चलने वाले हल से भूमि की जुताई की जाती थी। लाखों वर्षों से जंगल होने के कारण वह भूमि सेन्द्रिय पदार्थों से संपृक्त थी। उस की ऊर्वरा शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सर्वोच्च थी।इस से उनको बहुत बड़ी मात्रा में फसल प्राप्त होती थी। भूमि इतनी ऊर्वरा व समृद्ध थी कि ऊपर से कुछ भी डालने की आवश्यकता नहीं थी। जंगल काटी हुयी इस भूमि पर तीन वर्ष तक उपज लेने के बाद इस पर पुनः जंगल लगाकर छोड दिया जाता था। और फिर नया जंगल काटकर उस पर कृषि की जाती थी। इस प्रकार से यह चक्र चलता रहता था।

गायों की इतनी संख्या होने के कारण उन सभी पशुओं का गोबर गांव के बाहर निश्चित स्थल पर रोज डाला जाता था। इसी प्रकार प्रतिदिन गोबर के बड़े बड़े पहाड़ खड़े हो गये थे। यह गोबर के पर्वत थे, और गोबर धन होता है तो नाम हुआ गोबर्धन पर्वत। उस समय भूमि ऊर्वरा होने से खाद का प्रयोग तो होता नहीं था। संयोग से उस वर्ष बहुत ही भयावह चक्रवात बंगाल की खाड़ी से उड़ीसा होते हुए मथुरा राज्य की ओर आया उस से इतनी तीव्र वर्षा हुयी कि पंद्रह दिनों तक बरसात होती रही।

यमुना नदी में भीषण बाढ़ आयी उस वर्षा व बाढ़ से पूरी उर्वरा मिट्टी पानी में बह गयी। कृषि की बहुत हानि हुयी किसानों के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी थी। फसल कैसे हो गोकुल में यही चर्चा थी। युवा श्रीकृष्ण को मालुम था कि संदीपन ऋषि के आश्रम में उन्होने जो गोबर के उत्तम परिणाम देखे थे उनके प्रयोग का समय आ गया है। उन्हें पता था कि देषी गाय के गोबर में भूमि को बलवान व सजीव बनाने के सभी तत्व स्थित हैं। कृष्णजी ने किसानों की एक सभा बुलायी तथा अपने विचार बताये योजना समझायी, उसका मर्म समझाया।

किसान इस आधुनिक तंत्र विज्ञान को सुनकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। क्योंकि खेत में गोबर डालना बिल्कुल नयी कल्पना थी। दूसरे दिन प्रातःकाल से पूरा गांव ये गोबरधन रूपी गोबर के पहाड खोदकर बैलगाड़ी में लेजाकर खेतों में डाल दिया। श्रीकृष्ण ने इस गोबर धन को उंगली तथा हाथों से उठाया था। उस समय से आज तक देशी गाय का गोबर खेत में डालने की परंपरा निरंतर चली आ रही है।

जब हम किसी महापुरूष अथवा युगपुरूष को चमत्कारों के साथ जोड़ देते हैं तो उसके बताये मार्ग या उपदेशों से भटक जाते हैं। उनके मार्गदर्शन को भूल जाते हैं। योगीराज श्रीकृष्ण पूजा के नहीं अनुकरण के युग पुरूष हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने इस महान कृति से भारतीय कृषि संस्कृति के एक नये अध्याय की नींव रखी।

3. देशी गायः अत्यंत सुन्दर शरीर की बनावट, रंगों की विविधता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शींगों की विविधता, आँखों में प्यार का महासागर लिये हुये हमारी गोशाला की महानता बढ़ाने वाली साथ में विदेशी गाय से ज्यादा दूध देने वाली, अति ठंड, अति तापमान से इन दोनों विषमताओं से खुद को जोड़ने वाली, हरदम बीमारियों से दूर रहने वाली, कम खाकर अनंत कोटि महासागर होने वाला गोबर और अमृत तुल्य औषधी होने वाला गोमूत्र देने वाली, वत्सला, स्नेही ऐसी हमारी देशी गाय भारतीय संस्कृति की शान है।16

भारतीय गोवंश का विकाश गांव गांव में होता था। उसी शोध से नई नई देशी गाय की नस्लें विकसित की जाती थीं। जैसे हल्लीकर, खिल्लार, कांगायम, कृष्णा, ओंगोल, देवनी, लालकंधारी, गैलावू, हरियांणा, गिर, साहीवाल, राठी, कांक्रेज, थारपरकर, आदि। हमारे देश में प्रचीनकाल में गाय को अलग अलग नामों से पुकारा जाता था।

3.1. अवस्था के आधार पर वर्गीकरण:[17] अष्टाध्यायी में गाय की अवस्था के अनुसार अलग अलग नाम दिये है।

गृष्टि	जो गाय प्रथम बच्चे को जन्म देती है। प्रष्ठौही भी उसी को कहते हैं।
धेनु	धेनु का अर्थ है दूध पिलाने वाली। जिस गाय का बछड़ा केवल उसी गाय के दूध पर जीता है उसे धेनु कहते हैं।
वशा	जिस गाय को कभी जनन नहीं हुआ उसे वशा कहते हैं।
वेहत	गर्भ धारण के कुछ दिन के बाद जिसका गर्भपात हो जाता है उसे वेहत कहते हैं।
वश्क येनि	जो गाय जनन के आठ माह बाद तक दूध देती है वह वश्क येनि कहलाती है।
करर्की	सफेद रंग की गौ करर्की कहलाती है।
गुष्ठी	बछड़ा देने वाली युवा गाय गुष्ठी है।
धेनुष्टरी, स्तरी	जिस गाय को बच्चा पैदा नहीं होता उस गाय को यह नाम दिये गये हैं।
निवान्या	जिस गाय का बछड़ा मर जाता है तब उस गाय का दूध दूसरे बछड़े को पिलाया जाता है।उस गाय का नाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3.2. स्वाभाव के आधार पर वर्गीकरणः[18] ये सभी गाय की अलग अलग अवस्था के अनुसार उसके नाम होते थे। उसी प्रकार स्वभाव के अनुसार भी गाय छः प्रकार की होती है।

विलिप्ती	जिस गाय का शरीर ऐसा चिकना हो मानो उसे घी लगाया गया हो।
सूतवशा	जो सेवक के सामने रहने पर ही वश में रहती हो।
वशा	जो सब के वश में रहती है।
अवशा	जो कभी वश में नहीं रहती सदा उछल कूद किया करती है। दूध भी नहीं दुहने देती है।
भीमा भीमतमा	जो देखने में तथा बर्ताव में भी भयानक हो।
वशानां वशतमां	सीधी गायों में भी सब से सीधी, यह गाय बहुत दूध देती है तथा दिन में अनेक बार दूध देती है। इसी गाय को कामधेनु कहते हैं।

उपरोक्त गौ प्रकारों में से अवशा एवं भीमा भीमतमा दान के लिये अयोग्य हैं। शेष दान के योग्य हैं।

3.3. रंगों के आधार पर वर्गीकरणः रंग के आधार पर गायों के नाम इस प्रकार हैं:19

शुक्ल, करर्की	यह सफेद रंग की गाय है।
श्रोहित	लाल रंग की गाय है।
श्यामा	यह काले रंग की गाय है।
बहुरंगी	जिस गाय पर अनेक रंग हों।
कपिला	यह पीले रंग की गाय है। महाभारत में इस गाय के दश भेद बताये गये है।
सुवर्णकपिला	सोने के समान पीले रंग वाली।
गौर पिंगला	गौर तथा पीले रंग वाली।
आरक्तपिंगाक्षी	कुछ लालिमा लिये हुए पीले नेत्र वाली।
गलपिंगला	जिसकी गर्दन के कुछ बाल पीले हों।
बभ्रवर्णाभा	जिसका सारा शरीर पीले रंग का हो।
श्वेतपिंगला	कुछ सफेदी लिये हुए पीले रोमों वाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तपिंगाक्षी	सुर्ख व पीली आँखों वाली।
खुरपिंगला	जिसके खुर पीले रंग के हों।
पाटला	जिसका हल्का लाल रंग हो।
पुच्छपिंगला	जिसकी पूंछ के बाल पीले रंग के हों।

3.4. सीगों के आधार पर वर्गीकरण:[20] सीगों के आधार पर दो प्रकार के वर्गीकरण प्राप्त होते है। एक वर्गीकरण भारतीय वैज्ञानिकों के आधार पर एवं दूसरा मोंल वैज्ञानिक के अनुसार

3.4.1. भारतीय वैज्ञानिकों के अनसार भारत, श्रीलंका का सीगों के आधार पर वर्गीकरण :

क	छोटे सीगों की देशी गाय गैलावू, कृष्णाव्हेली, नागोरी, ओंगोल, हरियाणा, राठी, मेवाती, बचौर हैं।
ख	गोल किन्तु लम्बे सींगों की गाय थारपरकर, कांक्रेज, मालवी, हिस्सार हैं।
ग	सीधे लम्बे सींगो वाली गाय खिल्लारी, हल्लीकर, अमृतमहल, कांगायम, बरगूर, अलमबाड़ी हैं।
घ	बहुत छोटे सींगों वाली गाय लोहानीं, पोंवार, कुमाऊनी, शहाबादी, ऊगनूर, श्रीलंका की सिंहला हैं।

3.4.2. मोल वैज्ञानिक के आधार पर वर्गीकरण: 21

क	भूरे रंग, लम्बे गोल आकार के सींग वाली गायें थारपरकर, कांक्रेज, मालवी, केनकथा, खेरीगढ़ हैं।
ख	छोटे सींग वाली, सफेद, भूरे रंग की गाय कृष्णावली, हरियाणा, नागोरी, मेवाती, ओंगोल, बचौर, रठ है।
ग	लम्बे सींगों वाली पूरी लाल गाय,लाल सफेद, काले सफेद रंग की गायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहिवाल, गिर, रेड सिंधी, देवनी, डांगी, निमारी हैं।

घ मैसूर की पीछे घूमते हुए नोंकदार सींगों की भूरे रंग की गायः

खिल्लारी, अमृतमहल, हल्लीकर, कांगायम, अलमबाड़ी, बरगूर हैं।

ङ छोटे कद की पहाडी गायः

लोहानीं, पोंवार, सिरी, तेराई, बंगाली, मलनाड, गिड्डा, वेचूर हैं।

च श्रीलंका की गायः

सिंहला, तमकाबुआ।

गौ मनुष्यों के जीवन का अवलम्बन है, गौ मनुष्यों कल्यांण का परम निधान है। पहले के लोगों का ऐश्वर्य गाय पर अवलम्मिबत था, आगे की उन्नति भी गौ पर अवलम्बित थी। भारतवर्ष का एक नाम पुण्यभूमि है। यह नाम इस देश के अधिवासियों का विशेष उद्देश्य प्रकट करता है।23 प्राणिमात्र जिस वस्तु की इच्छा करते हैं, उसी को शास्त्रकार सुख कहते हैं। ऐसा कोई प्राणि नहीं है जो सुख की इच्छा न करता हो। जगत स्थिति की कारण भूत सत्ता में गौमाता अत्यंत महत्वपूर्ण सत्ता है।

श्रुति, स्मृति, पुराणादि ग्रंथों में प्रतिपादित अलौकिक सुख के साधक कर्मो के साथ ही लौकिक सुख के साधक कर्मों के लिये भी गौ की अत्यंत आवश्यकता होती है। सारे लौकिक व्यवहार भी बलायत्त ही होते हैं। अतः सभी कार्यों की सिद्धि के लिये बल की प्रतिष्ठा गौ पर ही आधारित है। बल भी शारीरिक और मानसिक दो प्रकार का होता है। शरीर बल की अपेक्षा मानसिक बल अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। अतः शरीर बल संवर्धन के लिये व मन के दोषों के हरण के लिये गोदुग्ध ही सर्वोपरि है सर्वोत्तम आहार है। इस प्रकार गोमाता की श्रेष्ठता सहज ही सिद्ध हो जाती है।24

पहले लोग गोमाता की महत्ता समझते थे और गोरक्षा में विशेष प्रयत्नवान होकर अपना ऐहिक, परमार्थिक कल्याण साधन करते थे। पहले गौ का देश में पालन पोषण बहुत अच्छी प्रकार से होता था। इसी से यह देश मंगलों का निवास स्थान बन गया था। परन्तु इस समय गोपालन के अभाव से यह अमंगल दशा को प्राप्त हो रहा है। इस प्रकार से गोमाता के सब प्रकार से मंगलमय होने के कारण पूर्वकाल के राजा सब धनों में गौधन को ही श्रेष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मानते थे।गो के प्रसन्न रहने का प्रबंध करते थे।

महाभारत में उत्तर गोगृहण प्रकरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कौरव जिस गाोधन को हर ले जा रहे थे उसे छुड़ाने के लिये पांडव अज्ञातवास से निकल पड़े थे और गायों को ले आये देश की उन्नति का विचार करने में लगे हुए लोगों की संख्या भी कम नहीं है। पर आश्चर्य की बात है कि गोरक्षा ही देश की उन्नति का मूल साधन है,पर अभी तक लोगों के ध्यान में नहीं आ रहा है।

4. बैल[26]

बैलः इसी प्रकार बैल के भी अवस्था के अनुसार नाम हैं।

ऊक्षाः उस समय बैल को ऊक्षा ही कहा जाता था।

वृषभः जवान बैल को वृषभ कहते थे।

त्रयवीः डेढ साल के बछड़े को बछिया को कहते थे।

दिव्यबाटः दो वर्ष की आयु के बछड़े को कहते थे।

दित्यौहीः यह दो वर्ष की बछियां है।

पंचावीःढाई वर्ष के बछडे को कहते है।

तर्यवाटः तीन वर्ष की आयु के बछड़े को कहते हैं।

पष्ठवाटः चार वर्ष के बछड़े को पाष्ठवाट कहते हैं।

परंपरागत कृषि तंत्र में गाय के साथ ही बैल का भी असाधारण महत्त्व है। यह कुदरती कृषि संस्कृति का बोझ बैलों के कंधे पर लाद कर आगे ले जा सकते हैं। वेदोत्तर काल के बाद और कहा जाये तो उपनिषद् काल के बाद भी गोवंश की नस्लें सुधार की गोविज्ञान के माध्यम से बहुत बड़ी प्रगति हो रही थी।

मुगल काल में विशेष रूप में सम्राट अकबर के काल में कृषि संस्कृति को बहुत ही बढिया मोढ़ मिला। अकबर के समय में लिखी गयी एक किताब आईने अकबरी में लिखा है कि उन दिनों एक दिन 30 शेर 28 किलो के ऊपर दूध देने वाली भारतीय गाय की नस्लें प्रचलित थी।

आज भी हमारे देश में गिर, साहीवाल, रेड सिंधी, थारपरकर, राठी, कांक्रेज जैसी प्रतिदिन 20 से 30 लीटर दूध देने वाली भारतीय गाय की नस्लें गुजरात, राजस्थान में हम जाकर देख सकते हैं। जो गाय बांझ होती थी, उन को बच्चे देने वाली स्थिति में लाने का तंत्र उन दिनों अस्तित्व में था। उसी तरह बढ़िया बछड़े और सर्वोत्कृष्ट सांड़ तैयार करने का शास्त्र उन दिनों चरम सीमा पर था गांवों में किसान और पशु वैद्य पशु के टूटे हुये हड्डियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जोडने का तंत्र और उस के लिये आवश्यक वनस्पतियां प्रचलित थीं।

परंपरागत प्राचीन कृषि तंत्र गाय के साथ बैल का भी महत्त्व है। कृषि का बोझ बैलों के कंधे पर ही लाद कर आगे ले जा सकते हैं। हजारों सालों से गोशाला में बहुत ही सुंदर सुडौल अधिक दूध देने वाली गायों के साथ हृष्ट पुष्ट ऊचे, सामर्थ्यवान बैल होना एक समृद्धि का लक्षण मानते हैं।

सुप्रसिद्ध जगत प्रवासी मार्कोपोलो जब भारत में आया था तब उसने अपनी किताब में लिखा है कि जब वह तेरहवीं शताब्दी में भारत वर्ष में आया था, तब उसे वहां के भारतीय बैल हाथी जैसे हृष्ट पुष्ट ऊचे सामर्थ्यवान दिखाई दिये थे। सभी गोवंश छः फीट के ऊपर के ऊचाई के थे। बैल घोडों से भी इतने तेज तर्रार थे। वे प्रति घंटा 60 किमी से भी ज्यादा गति से दौड़ते थे।

हमारे पूर्वज गोपालक किसानों ने घोडे से भी ज्यादा गति से दौड़ने वाले व बंजारा झुंड के साथ 500 किमी तक बोझ अपनी पीठ पर लादकर ले जाने वाले, हाथी समान ताकत रखने वाले बहुत ही सुन्दर डौलदार शारीरिक बनावट रखने वाले साथ में अपनी शारीरिक सौष्ठव के मूर्तिवान नमूने होने वाले हमारे भारतीय बैलों के वर्णन उस काल में लिखे हुए सभी ग्रंथों में मिलते हैं।

भागवत्शास्त्र बैल को धर्म और गाय को पृथ्वी के रूप में देखते हैं। राजा परीक्षित ने गाय और बैल के ऊपर अत्याचार करने वाले कुपुरूश के रूप में ही कलयुग को देखा था। धर्म के रहने पर ही धरती रह सकती है। धरती की रक्षा करने के लिये ही धर्म को धारण किया जाता है। महादेव वृषभवाहन हैं, पशुपति हैं, गोविन्द –गोपाल वृन्दावन में गायों को चराकर पशुपालन लीला करते हैं। शिव के भक्त, कृष्ण के भक्त इस बात को हृदय में धारण करने पर गोसेवा के महत्त्व को समझ सकेंगें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. अथर्ववेद का शास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ 107–120
2. वही, पृष्ठ 108
3. वही, पृष्ठ 109
4. वही, पृष्ठ 109
5. वही, पृष्ठ 110
6. वही, पृष्ठ 108
7. वही, पृष्ठ 111
8. भारतीय गौदर्शन, पृष्ठ39
9. वही, पृष्ठ 112
10. गोसेवा अंक, पृष्ठ198
11. अथर्व 10.9.12 ::से 10–9–24 तक, अथर्व 4–34–8
    इममोदनं :::::::::::::::::::::धेनुः कामदुधाः मे अस्तु।, अथर्व 10–10–7
    अनु त्वाग्निः :::::::::::::::::स्तना वषे।।, अथर्व 10–10–14
    सं हि ::::::::::::::: बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–15
    सं हि :::::::::::::::बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–18
    वशा माता :::::::::::::ततश्चित्तमजायत।।, अथर्व 10–10–20
    आस्नस्ते ::::::::::::रश्मयस्तव।।, अथर्व 10–10–22
    यदुदरं बबत्रमवेत् तव।।, अथर्व 10–10–26
    वशामेवामृतमाहुर्वशां :::::::::ऋशयः।।, अथर्व 10–10–34
    वशां देवा:::::::::: विपश्यति।।, यजु 3–21
    रेवती:::::::::: मापगात।।, यजु 3–22
    संहितासि ::::::::::भरन्त एमसि।।
12. आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु, ऋ 7–56–––––17
    सूयवसाद :::::::::शुद्धमुदकमाचरन्ती, ऋ1–164–40
    मा गामनागामदितिं वधिष्ट, ऋ8–10–15
    नैतां ते ::::::::::::::::::::::::जनाद्याम्।।, अथर्व 5–18–1
    अक्षद्रुग्धो ::::::::::::::::::::::::::::मा श्वः।।, अथर्व 5–18–2
13 आविष्टिताघाविषा :::::::::::::::गौर नाद्या।।, अथर्व 5–18–3
    निर्वै क्षत्रं ::::::::::::::::::::::::::::::::तैमातस्य।।, अथर्व 5–18–4
    य एनं ::::::::::::::::::::::::::नभसी चरन्तम्।।, अथर्व 5–18–5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न ब्राह्मणो ::::::::::::::::::::::::अस्याभिशस्तिपाः ।।, अथर्व 5–18–6
त्वामयसं ::::::::::::::::::::::::::::परियासि वधैरू ।।, ऋ 1.121.9

14. सेवा साधना, पृष्ठ 60,61
15. बालभारत, पृष्ठ 68–74, पृष्ठ 68–74
16. देषी गौ एक कल्पवृक्ष कृषि संस्कृति, पृष्ठ 82
17. वही, पृष्ठ 123
18. वही, पृष्ठ 125
19. वही, पृष्ठ 125, पृष्ठ 125
20. 20. वही पृष्ठ 232, पृष्ठ 232
21. वही, पृष्ठ 125
22. गोमूत्रां ::::::::::::::::::::::दुरूस्वप्नाद्यिादिवारणम्।।, अग्नि पुराण;3द्ध
रोचना ::::::::::::::::::::::::::::नरकं नरः।।, अग्नि पुराण4
पर गोग्रासदरू ::::::::::::::::::::::::::चोद्धरते कुलम।।, अग्नि पुराण5
गवां ::::::::::::::::::::::::::::दधि कुशोदकम।।, अग्नि पुराण6
गोमूत्रेणाऽऽचरेत्स्नानं ::::::::::::::::::::::::च गोव्रती।।, अग्निपुराण12
मासेनैकेन :::::::: :::::::::::::परमं व्रजेत।।, अग्नि13
23. शतं कंसाः ::::::::::::::::::::::विदुरेकधा।।, अर्थव 10.10.5
वेदाहं सप्त :::::::::::::::::::विचक्षणम्।।, अर्थव 10.10.3
यो विद्यात ::::::::::::::::::::::::गृह्णीयात्।।, अर्थव 10.10.2
चिदसि :::::::::::::पूषऽध्वनस्पात्वन्द्रायाध्यक्षाय।।, यजु 4.19
यो विद्यात्:::::::::::::::::::: गृह्णीयात्।।
24. गीतैर्नृत्यैरप्सरो ::::::::::गुग्गुलगन्धिका।।, अग्नि 14
मयोभूर्वातो:::::::: ::::::::::::: पद्वते रुद्र मृळ।, 10.169
संजग्माना :::::::: ::::::::::::उपेतन।।, अथर्व 3–14–3
25. देशी गौ एक कल्पवृक्ष कृषि संस्कृति, पृष्ठ 123

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

वैदिक संस्कृति में गोधन की समीक्षा

1. वैदिक संस्कृति में गोधन का महत्त्वः वैदिक संस्कृति में गोधन के विवरण विषय पर चर्चा की गई है। इस अध्याय गो शब्द का प्रयोग कहां किस अर्थ में किया गया है यह भी विस्तार से प्रस्तुत है।

गो सेवा परम दयामयी, वात्सल्यमयी सुर नर मुनि सेवित गोमाता से कोई भी उत्रृण नहीं है। गोमाता करूणावरूणालय है, निर्विकार है, निर्मद एवं निरहंकार है वह अपने परम प्रिय सेवक को जितना मधुर दूध प्रदान करती है, उतना ही मधुर दूध गो भक्षक को भी देती है। जिस गोमाता में प्रतिशोधांड़्कुर लेश मात्र भी अंकुरित नहीं होता, उस मां के समान प्रातः स्मरणींय और कौन हो सकता है? जननी जन्म के कुछ काल तक ही दुग्धपान कराती है किन्तु आदरणीय गोमाता जीवन के अन्तकाल तक अमृतमय दुग्धपान कराती रहती है, ऐसी महिमामयी, परोपकारिणीं गोमाता की सेवा अवश्य करनी चाहिए, उनकी परिकृमा करनी चाहिए वे सदा सबके लिए वन्दनीय हैं, गौऐं मंगल का स्थान हैं, दिव्य हैं स्वयं ब्रह्माजी ने इन्हें दिव्यगुणों से विभूषित किया है, जिसके गोबर से गृह एवं देवालय भी पवित्र हो जाते हैं। उन से बढ़कर और किसे समझा जाए, गौ के मूत्र, गोबर, दूध, दही, घी ये पांचों ही पंचगव्य कहलाते हैं। गौऐं पूरे जगत को पवित्र करती हैं। गोसेवक कभी भी दुःखी एवं दरिद्री नहीं होता है। भगवती विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी उस स्थान पर सदा उपस्थित रहती हैं, जहां पर गोवंश को सदा सम्मान मिलता है धन संपत्ति, संतति सुख, स्वास्थ्य एवं सद्गुण बिना प्रयास ही गोभक्त के साथ रहते हैं। गोसेवा से सेवक निष्पाप हो जाता है। गोखुर से उड़ती हुई धूलि से आच्छादित आकाश भूमि को बंजर होने से बचाता है। भगवती सुरभि के अंश से उत्पन्न गाय को पशु कहने वाले को पाप घेरता है।इनमें देवत्व व मातृत्व का दर्शन करते हुए श्रद्धा समर्पित करनी चाहिए। वेदों में गोसेवा के महत्त्व से कुछ भी असंभव न होना कहा गया है। शिव जी ने भी सुरभि की सेवा करके वरदान प्राप्त किया। इन्हें अपमानित करने से देवों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोपभाजन बनना पड़ता है। गोमाता का छोटा सा अपराध वंश विनाश की शक्ति रखता है। भूखी प्यासी होकर अपने पालक की ओर देखती है को उसके सम्पूर्ण वंश को नष्ट कर देती है।1

गौ के सेवक भी जिस भूमि पर निवास करते हैं, वह भूमि भी समस्त तीर्थों द्वारा अभिनंदित होती है। गोमाता की सेवा से, पंचगव्य प्राशन से तथा चरणोंदकमार्जन से तीर्थस्नान का फल मिलता है। गाय जहां पानी पीती है या जिस जल से होकर गुजरती है वहां सरस्वती जी सदा विद्यमान रहतीं हैं। गोसेवा बड़ी से बड़ी दुस्तर विपत्तियों से रक्षा करती है। ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों की विपरीत अवस्था में गोसेवा ही प्रमुख उपाय बतलाया जाता है।जो गोमाता पंचगव्य से पाप ताप हरती है, यागादि में दान के द्वारा यज्ञ दोष हरती है, अन्तिम अवस्था में वैतरणी से उद्धार करती है। ऐसी गोमाता एवं उनकी सेवा की यशोगाथा कौन गान कर सकता है? जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदि के द्वारा गौ की पूजा करता है उससे सब देवता और पितृगण तृप्त और प्रसन्न होते हैं। जो सदाचारी पुरूष नियम पूर्वक प्रतिदिन गायों को खिलाता है, वह सच्चे धर्म के बल से सारे मनोरथों को प्राप्त करता है। गौर्मे माता वृषभे पिता मे।प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि अल्पकालिक गो सेवा से ही श्रीकृष्ण को भगवत्व, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभारि, आपस्तंभ आदि को परम सिद्धि की प्राप्ति तथा राजा दिलीप को रधु जैसे चक्रवर्ती पुत्र की प्राप्ति हुई थी। इसी के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में गोत्रों का चलन भी हुआ। च्यवन एवं आपस्तंभ ने अपना मूल्य लगाने के समय स्वयं को सम्पूर्ण पृथ्वी, स्वर्गलोक के पूरे साम्राज्य से भी अधिक मूल्यवान समझा किन्तु तत्कालीन नरेशों के द्वारा उनके मूल्य के रूप में एक गो के प्रस्तुत करते ही वे प्रसन्न हो गए। अतः गो सेवा को महत्त्व अत्यधिक है। इसी का घृत स्वर्ग प्राप्ति का आधार बनता है। समस्त देवताओं का तृप्त करने वाला मन्त्रपूत हविष्य गोदुग्ध से ही बनता है। वस्तुतः गाय तीनों लाकों को पवित्र करती है। उसके शरीर में तीनों लोकों देवताओं और ऋषि मुनियों सहित सम्पूर्ण तीर्थों की स्थिति है अतः उसकी सेवा से भला ऐसी कौन सी सिद्धि है जिसकी प्राप्ति न हो?

वेदों में कई स्थानों पर गोस्तुति की गई है जिससे गोवंश के महत्त्व का ज्ञान हो जाता है। वेदों में उसके उदाहरण अनेक स्थानों पर प्राप्त होते हैं गो ही अन्ध– अन्नदात्री, मह– वीर्यदत्री, ऊर्ज– बल व प्राणदात्री, 2 योग्य पदार्थो का कभी न क्षय होने वाला स्थान है अर्थात अन्न सबसे प्रथम प्रार्थना करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
योग्य हैधरोहर है जो तुम्हारी सेवा से ही प्राप्त होता है ऐसी गो से प्रार्थना की गई है।

तुम हमारे समीप ही रहो हमें छोडकर मत जाओ अर्थात गौ ही गृह का स्थिर धन है उस के न रहने पर व्यक्ति गृह, शरीर, मन, बुद्धि सब दृष्टिकोण से निर्धन हो जाता है पृथ्वी पर वेदों का जितना महत्त्व है उतनी ही गौ पूजनीय है जो विश्व के लिए बुद्धि से युक्त रूप गुंण, अन्नादि के द्वारा भरण पोषण तथा ऊर्जा प्रदान करने के साधन उपलब्ध कराती है।3 संसार के प्रत्येक श्री युक्त पदार्थों एवं उनके उत्पादन के प्रबंध की क्षमता गौ के अक्षय प्रताप से प्राप्त होती है। गौ का ऐसा प्रभाव है कि समृद्धि, अपराध मुक्त समाज, भूख और दरिद्रता का नाश होकर वहां सुख समृद्धि का निवास होता है।

गोभिष्टरेमामतिं :::::::::::::::::::::::::::वृजनेना जयेम।।[4]

इस मंत्र में यही कहा गया है यह एकमात्र मंत्र है जो सात बार वेदों में दोहराया गया है इस मंत्र के महत्त्व का ज्ञान इस बात से हो जाता है कि यही मंत्र तीन बार ऋग्वेद में 10.42.10, 10.43.10, 10.44.10, चार बार अथर्ववेद में 1.50.7, 20.17.10, 20.89.10, 20.94.10 में दृष्टिगोचर होता है। इस मंत्र के द्वारा भगवान ने गाय को मानव कल्याण, समृद्धि के लिए दिए गए महत्त्व को दर्शाता है। इसका सन्देश इस प्रकार है–

अज्ञान के द्वारा समाज में साधनों के अभाव से जो दरिद्रता उत्पन्न होती है उसे गोपालन द्वारा दूर करो। गोपालन से जैविक कृषि से, अन्न उत्पन्न करके विश्व की क्षुधा को शान्त करो इस प्रकार की जीवन शैली से पहले व्यक्तिगत सम्पन्नता बढ़ेगी जिसके परिणाम स्वरूप राज्य, समाज अपराधमुक्त और समृद्ध होगा।

इस प्रकार के समाज में अज्ञान, दरिद्रता, भुखमरी नहीं होती राजा प्रजा सब संपन्न होते हैं। अपराधिक वृत्तियों वाले आसुरिक आक्रान्ताओं पर विजय प्राप्त होती है। गोपालन,पशुपालन के द्वारा ही समृद्धि स्थिर होती है।

गौदुग्ध से वर्चस्व की वृद्धि होती है, सब में अपना हित देखने की दृष्टि, ओज, अन्याय के विरूद्ध आक्रोश प्रदान करने वाली शक्ति होती है गोसेवा द्वारा निपुणता के साथ कार्य कौशल, शुद्ध सम्पन्नता के साथ स्वस्थ शरीर भी प्रदान करती है।[5]

माता रूद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।6
प्रनु वोचं चिकितुशे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1.1. प्रथमः रूद्र प्रथ्वी पर सभी रोगों के विनाश करने वाले समृद्धि को बढ़ाने वाले है गाय रूद्रों की माता है इसका तात्पर्य है कि गाय में वे सभी तत्व हैं जो रोगाणुओं को नष्ट कर देते हैं उनकी वृद्धि को रोक देते हैं।

मिसौरी विश्वविद्यालय डा. विलियम अल्ब्रेक्ट ने मार्डन साइंस के करीब सौ वर्ष पूर्व बताया था कि गाय अपने मूत्र और गोबर से मिट्टी के वे सभी तत्व पुनः प्रदान करती है जो पौधों, जडी बूटियों के लिए भूमि को चाहिए होते है। गाय के मूत्र और गोबर में वे सभी तत्व हैं जो बंजर भूमि को भी हरा भरा करने का सामर्थ्य रखते है।

1.2. द्वितीयः वसु मानव के कल्याण की सामग्री देने वाले देव है गाय वायुओं की पुत्री होने के कारण ईश्वर की ओर से मानव पर प्रकृति की ओर से सभी पुरस्कार देने के लिए ही नियोजित है।

1.3. तृतीयः सौर विकिरण गो की बहन के रूप में है यह प्रकाश संश्लेषण की क्रिया सें गाय द्वारा गृहण किए गए हरे चारे और जड़ी बूटियों को यह मनुष्य के शरीर के लिए आवश्यक ई. एफ.,ओमेगा3 ओमेगा6 और विटामिनों में बदल देता है। गाय सभी तत्व मानव के लिए अपने दूध में प्रदान करती है।

गौ रूद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, सूर्य ज्योति की बहन अमृत का केन्द्र, मानव के लिए एक अलौकिक चमत्कार है इसका किसी भी अवस्था में वध नहीं करना चाहिए ऐसा सभी मानते हैं। केवल मूर्ख ही गो को ध्यान देने के योग्य नहीं समझते हैं।

वचो विदं :::::::::::::::::::::::::::::::::::::::दभ्रचेता।। ऋ 8.101.16गो ही वाणी को विद्या और ज्ञान से भरती है, अत्यंत सार्थक सकारात्मक बुद्धि को पृथ्वी पर स्थापित करती है। मानवों में देवत्व की भावनाओं से प्रेरित समाज का निर्माण करती है। इसी से हम सुरक्षित पर्यावरण निर्मित होता है। गो को मंद बुद्धि वाले मनुष्य ही त्यागते हैं

1. गोसंवर्धनः जहां पर गायों की ठीक प्रकार से देखभाल होती है वहां भूमि अधिक उपजाऊ होती है। मिट्टी में जैविक कृषि से आर्द्रता लम्बे समय तक बनी रहती है मिट्टी कभी भी सूखती नहीं है, जल्दी जल्दी सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि कृषि उत्पादन की समृद्धि से संपन्न लोग अपने कानों में स्वर्ण आभूषण पहनते हैं।8 जगत् के प्राणियों में गाय ही एक ऐसी प्राणी है जिसका उच्छिष्ट मल नहीं अपितु मल शोधक है। ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी को पवित्रता पसंद है, गोबर शुचिता कारक है, गोबर के बिना भूमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र नहीं होती भूमि को गोबर के लेप से पवित्र करके ही देवी का आह्वान किया जाता है यज्ञ की वेदी को पवित्र करने के लिए तथा आवास गृहों को सभी प्रकार के प्रदूषण से मुक्त करने के लिए हजारों वर्षो से गाय के गोबर से लीपा जाता है इस प्रकार से सभी हानिकारक कीटाणु विषाणु नष्ट हो जाते है। गोबर में लक्ष्मी का निवास है, यह केवल शास्त्रवचन नहीं वैज्ञानिक व वास्तविक सत्य है थोड़ा चिंतन और विश्लेषण करने पर यह बात आसानी से समझ में आ जाती है कि गोबर कितना बहुमूल्य जीवनोपयोगी पदार्थ है, उसका हमारी आर्थिक समृद्धि से क्या संबन्ध है? आधुनिक विज्ञान की भाषामें पर्यावरण कार्बन नाइट्रोजन चक्र प्रक्रिया में गो को केन्द्र बिन्दु पर स्थापित माना जाता है। उस समय यह माना जाता था कि यदि गौ के सानिध्य में रहेंगे तो अव्यक्त रूप से मनुष्यों की वाणी में कोमलता, विद्वता, संवेदना के भाव उत्पन्न होते हैं वाणी ओज से परिपूर्ण हो जाती है, सन्तुष्ट गोधन की मधुर मन्द ध्वनिसे आच्छादित भूमि पर समााज में मनुष्यों के स्वभाव में कोमलता के साथ सकारात्मक कर्मठ मानसिकता का उद्भव होता है।9 गो समाज के लिए प्रत्यच्छ रूप से दुग्ध तथा परोक्ष में गोमूत्र गोबर के द्वारा कृषि करने से अन्न प्रदान करती है।

2. **गोग्रासः** गो सभी देवों की माता है। विश्वधात्री है। हमें गोरस ही नहीं अन्न भी गो से ही प्राप्त हुआ पहले कृषि गोपुत्रों के सहारे हुई, गोमय से भूमि उर्वरा बनी। रत्नगर्भा वसुन्धरा की देन अन्न पहले गोग्रास के रूप में गाय को अर्पित करने का यही रहस्य है। पृथ्वी के सात आधार स्तम्भों में गौ प्रमुख स्तम्भ है गोसेवा की नाना विधाओं में गोग्रास का मुख्य स्थान है। गाय के निमित्त श्रद्धा भक्ति से दिया गया खाद्यपदार्थ गोग्रास कहलाता है। गोमात्र की अधिष्ठात्र देवता कामधेंनु स्वरूपा सुरभी गोवंश की जननी मानी गई हैं रूढ़ार्थक कामधेनु का निवास गोलोक में और यौगिक अर्थपरक कामधेनु शब्द गोमात्र का बोधक है। गोसेवा से श्रेय, प्रेय दोनो सिद्ध होकर लोक परलोक सुधर जाते हैं।10 पंचमाताओं में गो को प्रधान माता के रूप में स्वीकार किया गया है। गोग्रास की सीमा में गोसेवा के उन सभी रूपों को समाहित किया जा सकता है जिसमें गोमाता सन्तुष्ट हों। प्रतिदिन गोग्रास देने वाले के आंगन में अष्टसिद्धियां तथा नौ निधियां लोटती रहती हैं।

3. **गो संस्कृति**[11] : प्राचीन भारत गो संस्कृति पर आधारित था। ब्रह्म मुहूर्त में ही नर नारी जागकर गोसेवा प्रारम्भ कर देते थे, सानी पानी देते, नारियां गोरस मन्थन करतीं, गोरस का वितरण होता था। सारा वातावरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गोरसमय हो जाता। जन समूह गोरस से पवित्र एवं पुष्ट होता, प्राण और प्रकाश का नवागमन होता और कृषि संस्कृति के लिए सामग्री तैयार होती। गाय का बछड़ा बड़ा होकर खेत जोतता, गाय का गोबर उत्कृष्ट खाद बनकर कृषि को समृद्ध करता। गोमूत्र से कीटनाशक बनता जो अनेक बीमारियों से मुक्ति दिलाता। गाय का दूध दही, मक्खन लंबी आयु के लिए, स्वस्थ जीवन के लिए अमृत है। सभी प्रकार के विटामिन सम्मिलित रूप से भी गोदुग्ध की बराबरी नहीं कर सकते हैं। गाय केवल दरवाजे की शोभा ही नही अपितु वह श्रीसम्पदा है, लक्ष्मी है, धरती की भांति पूज्या है। जिस वात्सल्य रस की इतनी महिमा और चर्चा है वह गाय का अपने बछड़े के प्रति स्नेह को देखकर ही है। वह मातृभूमि की भांति पूज्या और रक्षणींया है।प्राणियों में महान तेज इसके दूध के माध्यम से ही आता है। गाय के अन्दर अग्नि, वायु के अंश हैं इसलिए गाय का दूध नियमित रूप से पीने वाले में आग्नेयता एवं प्रवणता होती है वे स्फूर्ति सम्पन्न, तेजस्वी होते हैं ऐसी स्फूर्ति भैंस या अन्य पशुओं के दूध में नहीं होती। इसीलिए प्राचीन काल में ऋषियों के आश्रमों में गायें होती थीं, उनकी सेवा होती थी, उनके दूध से ऋषि और ब्रह्मचारी शिष्य अप्रतिम मेधाशक्ति से युक्त होते थे, वे विप्र बनते थे, प्रकृष्ट प्रज्ञा के धनी होते थे।

प्राचीन इतिहास साक्षी है कि अतीत में हमारे देश पर जितने आक्रान्ताओं ने आ क्रमण किए वे गोपालन की वैदिक परंपराविहीन थे, हमारे रहन, सहन की बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी उस समाज के लोग भूखे, असभ्य, दरिद्र थे, शान्तिपूर्वक सभ्य सामाजिक जीवन यापन नहीं करते थे। हिंसा लूटपाट साधारण व्यवहार समझे जाते थे। उन्होने यहां भोजन, धन, महिलाओं के लिए आक्रमण किए वेद मंत्र के द्वितीय भाग का तात्पर्य ये है कि क्यों हमारे पूर्वज जो कृषक थे उन्होने हमें अपने गृहों में अच्छी गायों को रखने के लिए कहा जिससे हम निर्धन न हों, गाय न रखने पर हम जैविक कृषि को समाप्त कर देंगे हमारी स्थिति भी उन आक्रमणकारियों के जैसी हो जाएगी। आधुनिक कृषि, रासायनिक खादें, मशीनों से कृषि का औद्योगीकरण ये सब केवल धन संपन्न कृषकों के पक्ष में ही है किन्तु वे किसान जिनके पास बहुत थोडी सी ही भूमि है वे इन संसाधनों का प्रयोग नहीं कर सकते वे केवल गौ के साथ जैविक कृषि और पशुपालन के द्वारा ही स्थायी आजीविका प्राप्त कर सकते हैं यदि वे ऐसा नहीं कर पाते हैं तो उन्हें भुखमरी का सामना करना पड़ सकता है, आत्महत्या के लिए वे मजबूर होते है। आधुनिक कृशि की रणनीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डेयरी फार्मिंग को है जिसमें गायों को केवल दूध के व्यापार के लिए उपयोगी मानकर रखने के लिए, जैविक कृषि को बढ़ावा नहीं देने के लिए ही है। डेयरी फार्मिंग के बुरे प्रभाव ये हैं कि कृषि भूमि की ऊर्वरता में कमी आ रही है। मानव आबादी पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

जैविक कृषि के लिए ऋग्वेद में कई मंत्र है। जिनमें कहा गया है कि गाय के गोबर और गोमूत्र से भूमि के हानिकारक कृमियों का विनाश होता है। गौ के घण्टी क्यों बांधी जाती है इसका क्या प्रभाव होता है यह हम निम्न मंत्र से इसके प्रभाव को ज्ञात कर सकते है।

जिसमें कहा गया है कि गो के गले मेबंधी हुई घंटी से जो घ्वनि निकलती है वह बुरी आत्माओं के अपने प्रभाव को फैलाने से रोकती है वैज्ञानिक भाषा में इसका अर्थ है कि धंटी की आवाज से उत्पन्न होने वाली अन्ट्रासोनिक तरंगे वायु जनित वायरस को भी नियंत्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं आधुनिक विज्ञान ने इसकी पुष्टि भी की है।12

भूमि को उर्वरकता उसी प्रकार प्राप्त होती है जैसे सूर्य से वर्षा, वर्षा से जल प्राप्त होता है। गाय की ध्वनि से ही कीटाणुओं का विनाश होता है उत्पादन बढ़ता है, प्रत्येक वृक्ष के समीप गौ की ध्वनि हानिकारक शत्रुरूपी कीटों का नाश करती हैं जो जीवन को सुखमय बनाता है।गोमूत्र गोबर जैविक उर्वरता के पोशक हैं।गोशाला में भिन्न भिन्न जीव जन्तु आवश्यक है

गौओं के सम्पूर्ण विकाश के लिए पर्यावरण में भिन्न भिन्न तोते बगुले इत्यादि अन्य पशु पक्षी गौ के स्वास्थ्य और पौष्टिकता के लिए आवश्यक हैं। गौओं के द्वारा धरती, वाणी, इंन्द्रियां स्वस्थ शरीर प्रकृति पर्यावरण और यजमान गोपालक परिवार पोषित हो कर, वश में रहकर ऐसे सुशासित होते हैं जैसे साक्षात इन्द्र ही शासन कर रहा हो।गो स्वयं में ही सम्पूर्ण ऐश्वर्य का साधन है।

प्राचीन भारत में कोई भी गोवंश के बिना कृषि कार्य करने की सोच भी नहीं सकता था वह हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग था। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती गरीबी ही किसान भाइयों की आत्महत्या के लिए जिम्मेदार है इसीलिए युवा रोजगार की तलाश में शहरी आबादी की ओर आकर्षित होते हैं पश्चिमी देशों के योजनाकारों की दृष्टि से हमारी औद्योगिक कृषि बड़े पैमाने पर देश की अर्थव्यवस्था का तेजी से विकाश देख रही है। हमारी कृषि प्रणाली आधुनिक पश्चिमी भारी कृषि प्रणाली की अपेक्षा पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ मानी जा रही है। इन स्थाई, जैविक, छोटे पैमाने की प्रणालियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
द्वारा कृषि कार्य सुगम किया जा रहा है। हमारे देश की अधिकांश जनता शाकाहारी है भारत में अनाज की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा था ऐसे में हरित क्रांति एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी लेकिन वही सबसे बड़ा दुर्भाग्य बनता जा रहा है। क्योंकि उनमें प्रयोग की जाने वाली खादों में जो केमिकल होते हैं उनसे भूमि बंजर होती जा रही है। कीटाणु रोधक दवाईंयों के प्रयोग से अनेक बीमारियां पैदा हो रही हैं। जैविक खाद के प्रयोग से ये सारे कार्य नहीं होते है। आधुनिक पोषण वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि मानव मस्तिष्क के एक तिहाई हिस्से के विकाश का मुख्य स्त्रोत देशी गायों का दूध ही है।

4. गो शब्द के अर्थः अग्नि पुराण में सुश्रुत धन्वंतरि के वार्तालाप से हमें गो के प्रति कर्तव्यों का ज्ञान होता है और पता चलता है कि लोग उस समय किस प्रकार से गो के प्रति भाव रखते थे। किसी भी समीक्षा के लिए उसके पूर्ण अर्थ से परिचित होना आवश्यक है। कि गाय के किस नाम का क्या अर्थ होता है एवं अर्थ में गो शब्द का प्रयोग किया गया है।

क्र.	नाम	विवरण
1.	अघ्न्याः	न मारने के योग्य।
2.	रोहिणी	निरंतर आगे बढ़ते रहने वाली।
3.	महेन्द्री	इन्द्रियों को पुष्ट करनेवाली।
4.	कल्याणी	परम कल्यांण करने वाली
5.	दोग्ध्रीः	भरपूर दूध देने वाली।
6.	शतौदना	अकेली सौ मनुष्यों की खीर के लिए पर्याप्त दूधदेने वाली।
7.	घटोध्नी	घढों के समान थनों वाली।
8.	पावनी	अपनी स्थिति से,पंचगव्यों से सबको पवित्र करने वाली।
9.	बहुला	पुश्कल दूध देने वाली।
10.	भद्रा	दर्शन, स्पर्श,पूजन आदि से सबका मंगल करनेवाली।
11.	अदिति	आदिमाता, न मारने योग्य।
12.	जगती	साक्षात् जगत्, प्रगतिमान।
13.	इन्द्राणी	देवराज इन्द्र की पत्नी के तुल्य सबकी हितकारिणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14.	अर्च्या	पूज्या।
15.	ज्योति	तेजस्विनी, अपने दूध से मनुष्यों को तेजस्वी बनाने वाली।
16.	कामदुहा	प्रेमोत्पादिका, कामना पूरी करने वाली।
17.	विश्रुता	विख्यात।
18.	चन्द्रा	सुहावनी।
19.	वशा	दूध देने को हर समय तैयार रहने वाली।
20.	पर्जन्यपत्नी	वर्षा से पलने वाली, प्रसन्न करने वाली।
21.	आतिथिथेयीः	जिसके दूधसे अतिथि का सत्कार हो, अपरिचित अतिथि भी जिसके पास जा सके, ऐसी नम्र, अतिथिके पास भी प्रेम से चलीजाने वाली।
22.	यज्ञपदी	यज्ञ मात्र का प्रभवस्थान – आधाररूप।
23.	विश्वायु	सारे विश्व का जीवन।
24.	सावित्री	सूर्य की शक्ति से उत्पन्न।

गो के किस अंग में कौन से देव का निवास स्थान है यह निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

क्र	नाम	विवरण
1.	पार्श्वे–अनुमत्या	Providers of desired directions
2.	अनुवृजो–भगस्य	Harbingers of good tidings
3.	अष्ठीवान्तौ–मित्रः	Protectors from evils
4.	भसद्–आदित्यानाम	Ground that supportsall
5.	श्रोणी–बृहस्पति	Interceders in
6.	पुच्छम्–वात	Draft of air
7.	गुदा–सिनीवाल्या	Of women engaged in chores
8.	त्वचा–सूर्याया	Daughters of SUN (Nutrition precursors Vitamin D linkage)
9.	पदा–उत्थातु	upstanders providing support
10.	क्रोडः–जामिशंसस्	About sisterly affections
11.	कलशः–सोमस्य	Of Mind motivator
12.	कुष्टिकः–सरमायै	For Watch Dogs

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13. शफान् Tools
14. उवध्यम्–कीटेभ्यः Worms as Soil Conditioners

इसलिए गाय की महिमा वेदकाल में ही सर्वमान्य थी। मैकडानल ने गो के विषय में वेदसाहित्य में 500 के लगभग उल्लेख बताए हैं वेदों में गोसूक्त प्रसिद्ध ही है गोमहिमा के महत्त्व के लिए कुछ महत्त्वसूचक पर्याय मिलते हैं।

5. गोयज्ञ[13]: भारतीय संस्कृति के व्यापक दृष्टिकोण के कारण उसमें यज्ञों का बहुत महत्त्व होता है यह समग्र विश्व को लेकर चलती है। यज्ञ करने से ही वायुमंडल को दूर दूर तक पवित्र एवं आधुनिक भाषा में कीटाणुमुक्त भी किया जा सकता हैं। ऐसे प्रयोग आज के परिप्रेक्ष्य में सारगर्भित हो गए हैं आज जबकि पर्यावरण को शुद्ध करने एवं बचानेवाले उपाय स्वयं भी प्रदूशित करते हैं,अतः ऐसे मनमानी रहित शास्त्रीय विधि विधानों से युक्त प्रयोगों की नितांत आवश्यकता है, जो कि शत् प्रतिशत् पर्यावरण की रक्षा करने में समर्थ हैं इसमें गाय का स्थान प्रमुखतम हैं। गाय का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान इसी बात से अवगत होता है कि समस्त प्राणियों को धारण करने के लिए पृथ्वी गोरूप धारण करती है। जब जब पृथ्वी पर द्रोही असुरों का भार बढ़ता है तब तब वह देवताओं के साथ श्रीमन्नारायण की शरण में गोरूप ही धारण करके जाती है। वह यह अनुभव करती है– गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरूअ एक पर द्रोही।। उसकी इस व्यथा को जानकर भगवान उसके भार को दूर करने के लिए विधि अवतार धारण करते हैं। सनातन धर्म में शास्त्रीय विधानों में सर्वत्र भूमि पूजन के योग्य तभी समझी जाती है जब वह गोबर से लीपी गई हो। यज्ञ कुण्ड आदि अग्नि स्थापन के सभी स्थान पंचभू–संस्कारों से संस्कृत किए जाते हैं। श्रीकृष्ण ने गाय की पूजा चलाई तथा उसकी महान पवित्रता की मान्यता को नैतिक और धार्मिक सिद्धान्तों का रूप देने के साथ ही गो पूजन को भारतीय धर्म का व्यावहारिक अंग बना दिया। श्रीकृष्ण के समय के बहुत पहले ही भारत की भावनाओं में गाय की महत्ता, पवित्रता की भावना धुंधले रूप में स्थापित थी श्रीकृष्ण ने उन विचारों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया और उसे दार्शनिक एवं आध्यात्मिक आधार पर स्थापित किया। उनके समय के पश्चात् गाय में दैवीत्त्व की भावना उत्तरोत्तर बिना किसी रूकावट के गहरी होती गई इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि भारतीय धर्म के आंतरिक प्रदेश में गाय के प्रति आध्यात्मिक भावना अधिक गहराई से प्रवेश करती गई यह प्रक्रिया शताब्दियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तक चलती रही इसी बीच सामान्य भारतीय जनता के विचार और भावनाऐं गो की दिव्यता से प्रभावित हो गईं ऐसी दशा में स्वाभाविक ही गो के स्वरूप का निर्देश करने के लिए विविध प्रतीकों का विस्तृत क्षेत्र में निर्बाध प्रयोग होने लगा यह सत्य की अतीन्द्रिय अनुभूति एवं साक्षात्कार का परिणाम था।

गौ वंश की ऐसी सेवा समाज का दायित्व है। इस सेवा का प्रबंध न होना गौ पर अत्याचार है। गोदान करने के लिए यदि अपनी गाय की संतान हो तो तीन वर्ष तक की उस्त्रिया माता के संग रहती हैं। बछड़ा देने पर उस का नामकरण करके किसी उपयुक्त परिवार को दान की जाती है। इस प्रकार गोदान न करना समाज हित में नहीं होता है। और जो गोदुग्ध का महत्त्व जानते हुए भी गोदान नहीं करते वे कल्यांणकारी सिद्ध नहीं होते अविद्वान लोग भी जो गोदान से गौ संवर्द्धन करने के लिए यथा समय गौ सेवा के लिए गौदान करते हैं14वे समाज सेवा का बड़ा काम करते हैं। प्रातःकाल में वेद मंत्रों के पाठ की ध्वनि जब सुनाई देती है, तब जानिए कि गौओं को गोचर में जाने का समय हो चला।जो प्रातः मंत्र ध्वनि सुनने के पश्चात् भी गौ को अपने घर पर बांध कर खिलाता है, वह जीवन में दुःख पाता है। गोचर में गौऐं समाज की धरोहर के रूप में रहती हैं। जब वे पुनः अपने गृह स्वामी के स्थान पर जाना चाहती हैं, स्वयं संकेत करती हैं। गौओं को ब्राह्मण वृत्ति के पशुपालक वैज्ञानिकों के ही दायित्व में देना चाहिए। जो लोग कुशल कार्यकर्ताओं की सहायता से गौ संवर्धन का कार्य नहीं करते केवल व्यापार वृत्ति से कार्य कराते हैं वे दुखी गौ के श्राप के भागी होते हैं जो गो को व्यापार मान कर चलाते हैं वे दुखी गो के श्राप से नष्ट हो जाते हैं

भारतीय संस्कृति के अनुसार धर्मगुरूओं, सन्त, महापुरूषों ने गाय को माता का दर्जा इसलिए दिया था क्योंकि इसके अन्दर अनेक गुंण विद्यमान हैं इन गुणों को हमारा समाज मिथ्या समझने लगा था, आज विज्ञान ने प्रमाणित कर दिया है कि जो कुछ धर्म ग्रंथों में गो के विषय में कहा गया है वह सब सत्य है। भारतीय जीवन शैली में गाय का दूध केवल आहार के लिए ही नहीं हमारे सांस्कृतिक जीवन और संस्कारों का भी अनिवार्य अंग रहा है। गाय के दूध में अन्य पशुओं के दूध से भिन्न ऐसा क्या है जो अन्य पशुओं के दूध में नहीं है उसके कुछ प्रमाण यहां उपलब्ध है।

6. राजा के दायित्व का उपदेश[15] : भूमण्डल पर राजा रूद्र का प्रतिनिधि होता है। इसमंत्र में देश की समृद्धि के लिए गोरक्षा और उत्तम गो संवर्धन के लिए राजा के दायित्व का उपदेश है कि उत्तमसंतान ;बछड़े,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बछड़ियों, गोपालकों वाली उत्तम घास वाले प्रदेश में चमकती हुई, उत्तम पेयस्थलों में शुद्ध जल को पीती हुई, व्यवस्था स्थापित हो। गो पर अत्याचार हिंसा करने वाला, चुराने वाला कोई न हो यह समाज और राजा का दायित्व है। इंद्र हर क्षेत्र में अपना पौरूष इस परम ऐश्वर्य दायक वृषभ से ही प्राप्त करते हैं पृथ्वी पर वाणिंयों में राजनीति में हर क्षेत्र में वृषभ का महत्त्व सब के ध्यान में रहना चाहिए। सब गौओं को श्रद्धा, सेवा भाव से प्रेरित सुखमय वातावरण प्रदान करो जिससें गो वंश की उन्नति हो सब प्रकार के साधनों के कुशल प्रबंध से गौ समाज में संपन्नता पौष्टिकता प्रदान करती है। ऐसा प्रबंध करें कि कुशल न्याय, खाद्यान्न, शिक्षा, आर्थिक व्यवस्थाऐं ऐसा प्रबंध करें कि कुशल युवा वर्ग द्वारा गौ समृद्धि, संपन्नता प्रदान करने योग्य हो। प्राचीन भारत में यज्ञ की महिमा अपार थी किन्तु यज्ञ हविश्यान्न के, पंचगव्यों के बिना नहीं हो सकता था, वैदिक काल में पशुधन के अंतर्गत गाय मुख्य रूप से आर्थिक उन्नति का साधन थी पशुधन से ही व्यक्ति की संपत्ति का ज्ञान होता था। जिसके पास जितने गोकुल होते थे वह उतना ही संपत्तिशाली समझा जाता था समाज में गाय का अत्यधिक आदर किया जाता था। वह देवों के समान पूज्य थी। समाज में गो की हत्या करने वाले को अत्यधिक कठोर दंड दिया जाता था। इसके कई प्रमाण वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं। सृष्टि में सहस्त्रों जीव जन्तु हैं किन्तु जितना आदर, सम्मान गौ को प्राप्त है उतना किसी को भी नहीं। गो के उपकारों को मानव कभी नहीं भुला सकता है वह शुद्ध शाकाहारी जीव है। सम्पूर्ण शरीर शोधक धार्मिक विधियों में पंचगव्य का ही प्रयोग किया जाता है। किसी भी प्रकार से उसका अनादर निन्दनीय माना गया है उसका उत्पीड़न तो आसुरी अथवा राक्षसी वृत्ति है।

7. गो संवर्धन और सुरक्षाः हम सदैव अपने गोवंश को सुरक्षा, सुख से पालकर, शीतोष्णता से बचाकर समाज की समृद्धि और विश्व की प्रगति करे।

गायों को आवास की सुरक्षा, आराम, गर्मी से मुक्ति, पीने के पानी की सुविधा दें। अंत में हम सतर्कता के साथही धन्य हो राष्ट्र समाज और दुनियां के लिए सभी दौर में प्रगति और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए हमारी गायों की रक्षा अनिवार्य है। दुधारू गौऐं आर्थिक लाभ के साथ पौष्टिक आहार द्वारा रोग निरोधक शक्ति भी बढ़ाती हैं। जो लोग स्वेच्छा से गोभक्ति से प्रेरित होकर गोसेवा करना चाहते हैं उन्हें उत्तम गोसेवा के साधनों का प्रशिक्षण देना चाहिए। जो गाऐं दूध देकर वित्तीय लाभ प्रदान कर रहीं हैं उनकी रोगों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रतिरक्षण के लिए, अच्छे पोषण को बढ़ावा देने के लिए गायों को स्नेह के साथ इच्छुक व्यक्तियों को संबन्धित ज्ञान प्रदान करना चाहिए। गोपालन व्यवस्था में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गौ के लिए स्वच्छ जल, आहार की व्यवस्था गौ की साफ सफाई आदि की व्यवस्था आराम करने की व्यवस्था, छांव की व्यवस्था, गोबर इत्यादि साफ करने की व्यवस्था और भी सभी व्यवस्थाओं को कार्यान्वित करने का दायित्व किस व्यक्ति के उपर है। उसकी क्या योजनाऐं हैं उत्तम प्रबंधन के लिए निम्न आधार है।[16]

1. सम्पूर्ण स्वच्छता।
2. कुशल जानकार हाथों द्वारा साफ पोशक आहार की प्राप्ति।
3. स्पष्ट प्रशासनिक निर्देश।
4. रोगों से देखभाल के लिए वैद्य का प्रबंध।
5. दुहने वाले के स्वच्छ हाथ।
6. कुशल हाथों से गोदोहन द्वारा गौ सुख से स्वास्थ्य हितकारी अमृततुल्य धारोष्ण दुग्ध का प्रसाद देती है।
7. गायों को केवल ताजी हरी घास और साफ पानी ही पिलाने से दूध सभी रोगों से मुक्त होकर पूर्ण पोशक तत्वों को प्रदान करता है।
8. गर्म ताजे दूध की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ही वेदों में गायों को तीन बार दुहने की बात की गई होगी।
9. गो को अपने घर पर जहां सुखपूर्वक सब व्यवस्थाऐं प्राप्त होती हैं वे गोचर से तृप्त होकर स्वयं ही अपने गोदोहन स्थान पर आ जाती हैं।[17]
10. जिस प्रकार सूर्य प्रातः काल की अपनी ज्योति से समस्त संसार के कल्यांण, समृद्धि और स्वास्थ्य का साधन है उसी प्रकार गोदोहन और उसके स्वादिष्ट पौष्टिक आहार अग्निहोत्र में हवि समाज के कल्यांण, समृद्धि और स्वास्थ्य का साधन होते हैं।

जो व्यक्ति सुबह प्रकृति के लिए, सबके स्वास्थ्य के लिए अग्निहोत्र के द्वारा गौओं से दूध आदि को प्राप्त करने के पश्चात सभी के साथ साझा करके प्रयोग करता है वह अपने गृह और समाज के लिए समृद्धि को बढ़ाता है।

हमारे पितरों ने आतुरता से दुग्धपान किया जिससे उत्तम वीर्य और उत्तम सिद्धियां, संतान, दयालु प्रवृत्ति, धन, ऐश्वर्य को प्राप्त किया तथा गौ को प्रसन्न रखने के व्यवहार को सदा पालन किया। इसी प्रकार आप भी गायों की देखभाल करो।

8. राजा के कर्तव्यः जिस प्रकार सूर्य की ज्योति पृथ्वी पर सर्वत्र सुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वृद्धि के लिए मेघादि और खाद्य पदार्थों में रसादि की उत्पत्ति होती है, उसी प्रकार राजा का समाज के लिए कर्तव्य है कि संसार में शुद्ध जल के साधन और मनोहर वायु को उपलब्ध कराए जिससे गौ और अश्वादि समाज को पूर्ण उन्नति प्रदान करके राजा का सम्मान बढ़ावें। जैसे सूर्य मेघ को बरसा कर स्वादिष्ट भोजन के उत्पादन के लिए वर्षा और सौर ऊर्जा से पृथ्वी पर जीवन को सुरक्षित करता है, अपने प्रकाश से सारे विश्व को आनंदित करता है वैसे ही हम मनुष्यों के द्वारा बुद्धिमान जनों के परामर्श और शस्त्रों द्वारा गौ हिंसा करने वालों को रोककर गौ की रक्षा करो।

9. गो मंत्रालय[18]: ऋग्वेद में गो मत्रालय का स्पष्ट निर्देश किया गया है जो गौ के लिए नियम कानूनों की राजा से सिफारिस करते है। राष्ट्र के भरण पोषण के हेतु गौओं और बैलों की सुरक्षा के लिए उत्तम भूमि, मेघों, नदियों की व्यवस्था के लिए 8 सचिव रूप में पदाधिकारी नियुक्त किए जाऐं जिनसे विचार विमर्श करके सुनिश्चित नीति निर्धारित करो जिसका सब पालनकरें।

10. गो मंत्रालय के दायित्व[19]: जो गोकृषि द्वारा सहस्त्रों गौओं के पालन और उत्तम बैलों को हल में युक्त करके उत्तम घोड़ों को रथादि में युक्त करके जीवन यापन करते हैं उस गृहस्थ आश्रम में उचित निवास वेतन आदि की, ब्रह्मचारियों को गुरूकुलों में गोकृषि के ज्ञान और विद्या के लिए, वानप्रस्थ में अपने जीवन के अनुभव7 को जिज्ञासुओं को शिक्षा देने कीउचित व्यवस्था करना।

1. तीनों आश्रमों में बिना हिंसा किए अग्निहोत्रादि से वनों की वृद्धि और उनकी सुरक्षा करना। गोवंश का संवर्द्धन, रक्षा, रथों, गाड़ियों के शीघ्र वाहन के योग्य पशुओं की सुरक्षा जैसे उत्तम कार्य, सूर्य के समान प्रतिदिन प्रकाशित हो कर करने चाहिए।
2. ऊचें स्थानों पर पशुवर्ग के हितार्थ उत्तम घास आदि चारे की व्यवस्था करना, निचले गहरे स्थानों पर जल एकत्रित करना, जो साधन सुगमता से उपलब्ध हैं उनको नष्ट न होने देना, इस प्रकार की परंपरा का का पालन करना और करवाना।
3. सभी प्रकार से गोपालन में समर्थ वास्तुशास्त्र विद्वान गौओं के निवास के साधनों को ऋतु अनुसार सुख से रहने की व्यवस्था करें।
4. पशुपालन के विद्वानों के द्वारा गौओं, घोड़ों को अलग अलग करके उन के आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त उत्तम आहार की व्यवस्था करवाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व में गौ की यथार्थ ही वेदों के जितना ही महत्त्व है हम गो को पूजनीय मानते हैं क्योंकि संसार के प्रत्येक श्री वाले पदार्थ और उन के उत्पादन के प्रबंध की क्षमता गौ के ही अक्षय प्रताप से उपलब्ध होती है।वह बुद्धि से रूप,गुंण युक्त सब पदार्थ, ऊर्जा प्रदान करने के साधन प्रस्तुत करती है।

5. गौ, गोमूत्र और गोबर से भूमि के हानिकारक कृमि का विनाश होता है और भूमि को ऊर्वरता प्राप्त होती है, जैसे सूर्य और वर्षा के जल से होता है। गो की ध्वनि से कीटाणुओं का विनाश होता है और उत्पादन बढ़ता है। जो कृषि के लिए लाभकारी होता है।प्रत्येक वृक्ष के समीप गोध्वनि हानिकारक शत्रुकीटों को नष्ट करती है जिससे वायु भी शुद्ध होकर बहती है।[20]

गौ तथा बुद्धिजीवियों का पालन राजा का कर्तव्य है, गौ पर ही संस्कृति की परम्परा प्रतिष्ठित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. रोचना ::::::::::::::::::::::::::::नरकं नरः।।, अग्नि पुरा. 4
2. अन्ध स्थान्धो ::::::::::::::::::::::::::::रायस्पोषं वो भक्षीय।।, यजु 3–20
3. रेवती :::::::::::::::::::::::::इहैव स्त मापगात।।, यजु 3.21
   संहितासि ::::::::::::::::::::: नमो भरन्त एमसि।।, यजु 3.22
   राजन्तमध्वराणां ::::::::::::::::वर्द्धमानँ स्वे दमे।।, यजु 3.23
4. गोभिष्टरेमामतिं :::::::::वृजनेना जयेम।।, ऋ 10–42–10
   ऋ 10–43–10
   ऋ 10–44–10
   गो :::::::::::वृजनेना जयेम।।, 1.50.7,
   20.17.10,
   20.89.10,
   20.94.10 अथर्व
   एभिर्द्युभिः सुमना ::::::::::::::::::::: समिषा रभेमहि।।, ऋ 1–53–4
   अघ्न्येयं ::::::::::::सौभगाय।।, ऋ 1/164/27
   विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना अगन्म।। , यजु 12/73
   वत्सं जातमिवाघ्न्या।। अथर्व 3/30/1
   धेनुं सदनं रयीणाम्।। अथर्व 11/1/4
   1. आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु, ऋ ६ वें मंडल 28 वां सूक्त
   2. भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने
   3. न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्शति
   4. न ता अर्वा रेनुककाटो अश्नुते न संस्त्रमुप यन्ति ता अभि
   5. गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छन्
   6. यूयं गावो मेदयथा
   7. मा वः स्तेन ईशत माघशंसरू
   वशामाता:::::::::::::::ततश्चित्त्मजायत।।, अथर्व10–10–18
5. सं वर्चसा पयसा::::::::::::::::::::::: तन्वो यद्विलिष्टम्, यजु 2.24
   त्वष्टा नो अत्र::::::::::::::::::::::::::::::: विरिष्टम्।।, अथर्व 6–53–3
   वशा द्यौर्वशा :::::::::वसवश्च ये।।, अथर्व 10–10–30
   सोममेनमेके :::::::दिवः।।, अथर्व 10–10–32
   सं हि ::::::::::::::::::::::::गन्धर्वैः कलिभिः।।, अथर्व 10–10–13

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदादित्यैर्हूयमानोपातिष्ठ ....विश्वविद् वशे।।, अथर्व 10–10–9
विषं गवां ....जयन्ताम्।।, ऋ 10–87–18
केवलीन्द्राय ....असुरानुत ऋषीन्।।, अथर्व 8–3–16
दुहान्.............. विचक्षणः।।, अथर्व 8–9–24
अनूपे.....................तोशते।।, ऋ 9–107–5
यदादित्यैर्हूयमानोपातिष्ठ ....वशे।।, ऋ 9–107–9
अथर्व 10–10–9
6 मातारुद्राणां...................................वधिष्ट।।, ऋ 8–101–15
यस्मिन्त्सर्वाणि ...., यजुर्वेद 40। 7
अनुमन्ता ....घातकाः, मनुस्मृति 5।51
ब्रीहिमत्तं ....पितरं मातरं च, अथर्व 6।140।2
य आमं ....नाशयामसि, अथर्व 8। 6।23
अनागोहत्या ....पुरुषं वधीः, अथर्व १०।१।२६
अघ्न्या ....पशून्पाहि, यजु १।१
पशूंस्त्रायेथां, यजु ६।११
द्विपादव ....पाहि, यजु १४।८
ऊर्जं नो............ चतुष्पदे, यजु११।८३
अध्वर इति ....कर्मा तत्प्रतिषेधः, निरुक्त २।७
अग्ने यं ....गच्छति, ऋ १।१।४
घृतं.......... मा हिंसीः, यजु१३।४६
7 वचोविदं.........................मर्त्योदभ्रचेता।।, ऋ8–101–16
वशांदेवा.........सूर्योविपश्यति।।, अथर्व10–10–34
सोममेनमेके...................गतास्त्रिदिवंदिवः, अथर्व10–10–32
चतुर्धारितो.......यज्ञस्तुरीयम्।।, अथर्व10–10–29
तिस्रोजिह्वा.........दुष्प्रतिग्रहा।।, अथर्व10–10–28
वशामेवामृतमाहुर्वशां...असुराःन्पितरऋषयः।।, अथर्व 10–10–27
वशायज्ञं.............बृह्मणासह।।, अथर्व 10–10–25
यदुदरं......नेत्रमवेत् तव।।, अथर्व 10–10–22
संहिसूर्येणागतह..................ज्योतीषबिभ्रती।।, अथर्व 10–10–15
त्रिषुपात्रेण.............................बर्हिष्यास्टाहिरण्यये।।, अथर्व 10–10–12
अनुत्वाग्नि.......................................स्तनावशे।।, अथर्व 10–10–7
संहि.........सामनिबिभ्रती।।, अथर्व 10–10–14
वर्चसोद्यावापृथिवी............पृथिवीमनु सं चरेम।।, अथर्व 19–58–3
स स्वर्गमा ....शतौदनाम्।।, अथर्व 10–9–5
क्रौडो ते ....पक्तारंदिवं वह।।, अथर्व 10–9–25
8 एती मे ....बभूवान्ध।।, ऋ10–27–20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गाव उपावतावतं:::::::::::::::::::::::::::::::::हिरण्यया।।, ऋ.8.72.12
एती मे गावौ :::::::::::::::::::::::::::::::::::च शिक्षित्।।, ऋ10–27–22
देवानां माने:: पुरीषम्।।, ऋ10–27–23
संवत्सरीणं ::::::::::::::::::::::::विध्य मर्मन्।।, ऋ 10–87–17,
अथर्व 8–3–17
आस्नस्तेगाथा:::::::::::रश्मयस्तव।।, अथर्व 10–10–20
ईर्माभ्यामयनं:::::::::::उदरादधिवीरुधः।।, अथर्व 10–10–21
यज्ञपदीराक्षीरा::::::::::::::::::::ब्रह्मणा।।, अथर्व 10–10–6
9. स ताँल्लोकान्त्समाप्नोती :::::::शतौदनम्।।, अथर्व 10–9–6
शिप्रिन :::::::सहस्रेषु तुवीमघ।।, ऋ 1–29–2
तिस्रो :::::::::::::::दुष्प्रतिग्रहा।।, अथर्व 10–10–28
ब्राह्मनेभ्यो :::::::::::::ब्रह्माथो तपः।।, अथर्व 10–10–33
आ गावो::::::::::::::::::::::::::::::::::: दुहानाः।।, ऋ 6.28,
अथर्व 4–21
गावो भगो:::::::::::::::::::::::::::::: चिदिन्द्रम।।, ऋ 6.28.5,
अथर्व 4–21–1
इममोदनं:::::::::::::::::::::::धेनुरूकामदुधारूमेअस्तु।।, अथर्व4–34–8
10 अनु त्वाग्निः ::::::::::::::::::स्तना वशे।।, अथर्व 10–10–7
सं हि ::::::::::::::: बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–14
सं हि ::::::::::::::::बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–15
वशा माता ::::::::::::::ततश्चित्तमजायत।।, अथर्व 10–10–18
आस्नस्ते ::::::::::::::रश्मयस्तव।।, अथर्व 10–10–20
यदुदरं बवत्रमवेत् तव।।, अथर्व 10–10–22
वशामेवामृतमाहुर्वशां ::::::::::ऋषयः।।, अथर्व 10–10–26
वशां देवा:::::::::::: विपश्यति।।, अथर्व 10–10–34
रेवती:::::::::::मापगात।।, यजु 3–21
संहितासि ::::::::::::भरन्त एमसि।।, यजुर्वेद 3–22
11 युवंरेभं ::::वन्दनस्तार्यायुषा।।, ऋ 1–119–6
समिन्द्रगर्दभं::::::सहस्रेषुतुवीमघ।।, ऋ1–29–1
निष्वापया:::::सहस्रेषुतुवीमघ।।, ऋ1–29–3
शिप्रिनवाजनां:::::तुवीमघ।।, ऋ1–29–2
वशा माता ::::::::::::::::प्रदीयते।।, अथर्व 12–4–33
सर्वान्कामान्ययमराज्ये ::::::::::::::याचिताम्।।, अथर्व 12–4–36
श्रोणामेकं :::::::::::::::::::::::::अपावतुः।, ऋ 1–161–10
हिड्ङ्कृण्वती :::::::::::::::::::::::महते सौभगाय।।, ऋ1–164–27
देवाः पितरो :::::::::::::::::द्रव।।, अथर्व10–9–9

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूयवसाद ....शुद्धमुदकमाचरन्ती।।, ऋ 1–164–40
अथर्व7–73–11
तस्मेतदच्छायन्ति ....निरोधनम्।।, अथर्व12–4–15
सर्वं परिक्रोशं ....सहस्रेषु तुवीमघ।।, ऋ 1–29–7
वेदाहं सप्त.................. विचक्षणम्।।, अथर्व 10–10–3
सर्वे.. बन्धुः।।, अथर्व 10–10–23
युध एक...वशा।।, अथर्व 10–10–24
वशा ....बृह्मणा सह।।, अथर्व 10–10–25
यएवंविद्यात् ....दात्रेऽपस्फुरन्।।, अथर्व10–10–27
पूषा गा.............. सनोतु नः।।, ऋ 6–54–5
पूषन्ननु प्र ....स्तुवतामुत।।, ऋ 6–54–6
माकिर्ने...................... भिरा गहि।।, ऋ 6–54–7
यच्चिद्धिसत्य......................तुवीमघ।।, ऋ1–29–1
शकृन्मूत्रं ....शृङ्गस्य मर्दनम्।।, अग्नि पुराण 2
सहर्षभाः .... इह स्त, साम 626
अघायतामपि ....यजमानस्य गातुः।।, अथर्व 10–9–1
यः शतौदना ....यथायथम्।।, अथर्व 10–9–4
घृतं प्रोक्षन्ती ....प्रेहि शतौदने।।, अथर्व 10–9–11
कस्य.................................तेगिरः।।, सा034
इमंगावरू..............सुवाति।।, अथर्व14–1–33
समिन्द्र ....सहस्रेषु तुवीमघ।।, ऋ 1–295
12 गृहादिग्नाशाय ....धूपिता।।, अग्निपुराण 292(34)
13 भूर्भुवः.............. सूर्योवेतुस्वाहा।।, यजु3 |5:
से यजु3 |10ऋ10.
169:गो सूक्त
सं सं ....हविषा जुहोमि।।, अथर्व 2–26–3
14 त्वेअग्ने..............गोनाम्।।, साम 38
सूर्यायावहतु.......व्युह्यते, अथर्व 14–1–13
य एनामवशामाह.............. परिक्रम्येषुमस्यतः।।, अथर्व 12–4–17
ददामीत्येव ....याचद्भ्यस्तत्प्रजावदपत्यवत्।।, अथर्व 12.4.1
यो अस्या ....चेदशकद्वशाम्।।, अथर्व 12–4–18
चरेदेवा ....ब्राह्मणास्तह्योर्ष्याः।।, अथर्व 12–4–16
15 गोविप्रपालनं ....लोकाः प्रतिष्ठिता।।, अग्निपुरा.11
16 प्रजावतीः ....वृज्याः।।, ऋ 6.28.7,
अथर्व21–7
17 अष्टा.................गोरसमद्रिभिर्वाताप्यम्।।, ऋ 1–121–8

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यातेअष्ट्रा:::::::::::::::::::::सुम्नमीमहे।।, ऋ 6.53.9
यावदस् ::::::::::गृहे वसेत्।।, अथर्व 12–4–27
यो अस्या :::::::::::हीडिताः।।, अथर्व 12–4–28
वशां चरन्ति :::::::::::जिघांसति।।, अथर्व 12– 4–29
महदेषाव ::::::::::विषं दुहे।।, अथर्व 12–4–39
सं वरू ::::::::::यद् वसु।।

18 त्वंनो::::::::अष्टापदीभिराहुतः।।, ऋ 2.7.5

19 यो मे शता :::::::शर्म।।, ऋ 5.27.2

20 वृक्षे वृक्षे ::::::::::::::च शिक्षित्।।, ऋ10–27–22

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय अध्याय

वैदिक संस्कृति में गोधन के उपयोग एवं महत्त्व की समीक्षा

1. धर्म की दृष्टि से: जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदि के द्वारा गौ की पूजा करता है उससे सब देवता और पितृगण तृप्त और प्रसन्न होते हैं। शरीर, मन बुद्धि और अंतःकरण की शुद्धी के लिए आयुर्वेद में पंचगव्य का बड़ा महत्त्व कहा गया है पंचगव्य गाय के दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोबर के रस से तैयार किया जाता है शास्त्रोक्त विधि द्वारा बनाए गए पंचगव्य के सेवन से शरीर, मन, बुद्धि और अंतःकरण के विकार समाप्त हो जाते हैं, जो सदाचारी पुरूष नियम पूर्वक प्रतिदिन गायों को खिलाता है, वह सच्चे धर्म के बल से सारे मनोरथों को प्राप्त करता है, इस संसार में गौ एक कल्याणकारी, महनीय, सर्वदेवमयी, सर्वतीर्थमयी और अद्‌भुत् प्राणी है।गोदर्शन, गोपूजन, गोस्पर्श, गोस्मरण, गोगुणानुकीर्तन, गोदान के करने से मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर अक्षयलोक का भोग करता है। प्राचीन काल में प्रत्येक आश्रम में हजारों गायों की सेवा होती थी। आज ये देखने को भी नहीं प्राप्त होता किन्तु राजस्थान में पथमेंडा मे एक आश्रम में महात्मा जी के संरक्षण में एक लाख से भी ज्यादा गायों का संरक्षण पालन पोषण श्रद्धा समारोह पूर्वक किया जाता है, आज के परिवेश में गोवंश के प्रति धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा स्वास्थ्य संबन्धी चिन्तन की परम आवश्यकता है ऋषियों के अनुसार ब्रह्माजी ने एक कुल के दो भाग कर दिए एक गाय एक ब्राह्मण एक में मंत्र प्रतिष्ठित किए दूसरे मे हविष्य दोनों की एक ही श्रेणी है गायों में ही सारे यज्ञों की प्रतिष्ठा है ऐसा इस मंत्र में कहा गया है कि1 अधिक वसा वाली गाय को यज्ञ में आज्य के लिए ब्राह्मणों को दे देना ही उचित है ऐसी गौ को परिवार में दुग्धाहार के लिए नहीं रखना चाहिए। गाय नहीं रहेगी तो सृष्टि भी नहीं रहेगी गौ शब्द का मुख्य अर्थ है सूर्य की किरण, गौ नामक पशु को गौ इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह सूर्य की किरणों का भक्षण करती है सौर ऊ र्जा के प्रमुख तत्त्व को ग्रहण कर उसे दूध एवं मल मूत्र के माध्यम से मानव जाति को सौंप देती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सूर्य और मानव मस्तिष्क का गहरा संबन्ध है इसलिए गाय के दूधको पीने से मनुष्य की बुद्धि तीव्र होती है। मस्तिष्क स्वस्थ व जागृत हो जाता है। सूर्य में जो सात वर्ण हैं ये वर्ण उसकी ऊर्जा को सात भागों में विभाजित करते हैं, सात धातुओ से होने वाले सातो प्रकार के रोगों का निवारण करते हैं।

उसमें बीस दिन गोदुग्ध पर रहा जाता है, यह शरीर की सभी बुरी भावनाओं पर नियंत्रण रखता है और उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता को संचित करके बड़ाता है। शरीर की स्थूलता को समाप्त करता है पर इसे बिना अनुभवी व्यक्ति की सहमति के नहीं करना चाहिए। कृच्छा वृत से काया निर्मल होती है। इसी कड़ी में तप्त कृच्छा वृत को भी किया जाता है इसमें तीन दिन गोमूत्र सेवन, तीन दिन गोघृत, तीन दिन उष्ण गोदुग्ध सेवन किया जाता है।तप्त कृच्छा वृत शरीर की समस्त व्याधियों को मिटाती है।

इसी प्रकार शीत कृच्छा वृत भी किया जाता है। गोमूत्र को स्नान में प्रयोग करने से, गौओं के समीप रहने से, गौओं को आहार देने के उपरान्त ही स्वयं भोजन करना, शिक्षा में गोपालन की समस्त जानकारी प्राप्त करना ही परम ऐश्वर्य के साधन हैं।

किसी वस्तु का जीवन मूल्य उसकी उपयोगिता के आधार पर आंका जाता है। गाय समस्त चौपायों में सबसे अधिक उपकारी है अतः आवश्यक है कि सम्यक् रीति से उसका पालन हो, वह हमें स्वास्थ्य, समृद्धि, संपत्ति सभी कुछ प्रदान करती है। यद्यपि हिन्दू धर्म ने उसकी रक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए सब प्रकार से व्यवस्था की है फिर भी बड़े दुर्भाग्य की बात है कि भारत में ही बहुत से हिन्दू ही गो का महत्त्व नहीं समझते इतना ही नहीं धार्मिक कृत्यों में गोदान लेने वाले ब्राह्मण पुरोहित भी उन्हें अवांछनीय तत्वों को विक्रय कर देते हैं यह उनकी कमाई का साधन बन गया है। ग्वाले ही गाय को इतना दुह लेते हैं कि बछड़ों के लिए दूध की एक बूंद भी नहीं बचती, इससे उनकी वृद्धि रूक जाती है और बैलों की नस्ल बिगड़ जाती है, गाय से बढ़कर अन्य कोई मनुष्य का मित्र नहीं है वह उदास, अबोध, व्यक्तित्वशून्य प्राणी नहीं है वह मधुर स्वभाव वाली अपने दीप्त, शांत, ध्यानमग्न नेत्रों से संसार को देखने वाली गो के सौम्य रूप को देखो उसमें एक महानता और भव्यता है, जो ग्रामदेवता के उपयुक्त है, उसमें शतप्रतिशत् मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से भी यही माता का संबन्ध है लेकिन जब तक मनुष्य अपने पशु मित्रों के साथ प्रेम, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं करेगा तब तक वह उसकी अत्यंत प्रिय तथा मनोरम विशेषताओं के विषय में सदा अंधकार में ही रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय संस्कृति के अनुसार गाय को माता का दर्जा प्राप्त है क्योंकि इसके अन्दर अनेक गुण हैं। इन गुणों को हमारे समाज ने विस्मृत कर दिया था किन्तु आज विज्ञान ने उन गुणों को पुनः प्रमाणों के साथ समाज के सामने प्रस्तुत कर दिया है। भारतीय जीवनशैली में गाय का दूध केवल आहार ही नहीं अपितु हमारे सांस्कृतिक जीवन और संस्कारों का भी अनिवार्य अंग रहा है। जहां गाय को देवत्व प्राप्त है वहीं दूध को अमृत्व ।प्रस्तुत श्लोक में गोदुग्ध की प्रशंशा की गई है–5

गोदुग्ध ही सबमें उत्तम है, अमृत है जो सब मनुष्यों को समान रूप से इन्द्र के समान गुंण प्रदान करता है। चारो वर्णों के सदस्यों को स्वार्थी, आसुरिक वृत्तिवाले मनुष्यों को ऋषिजनों को समान रूप से सब प्रकार का लाभ देता है। दुर्बल को हृष्ट पुष्ट बना देता है, भद्दे को सुडौल बनाकर वाणी में मधुरता भरकर गृह को कल्याणकारी, सुखप्रद बनाती हो तुम्हारे वृद्धिकारक दुग्ध, अन्न का महत्त्व सभाओं में कहा जाता है।

गौओं के दान के लिए पुरोहित के द्वारा ही पूजन करवाया जाता था जिसमें विभिन्न क्रिआऐं होती थी जैसे आज्य के समर्पण के पश्चात गौ के दूध में इन्द्र और सोम के लिए चरू पकना तत्पश्चात पांच तीर्थो के जल को अभिमंत्रित करके गो को स्नान कराना और वही जल राजा, यजमान पर छिड़कना चाहिए उसके बाद गौओं को अलंकृत करके उनको भोजन और जल पिलाया जाता है, उनका पूजन किया जाता है, अन्त में अंतिम गौ की पूंछ पकड़ कर पुरोहित अन्य गौओं की परिक्रमा करता है। तदंतर गौऐं ब्राह्मण को दान दी जाती हैं6

2. पर्यावरण की दृष्टि से: आज जंगल नष्ट हो रहे हैं हमें 33: जंगल शुद्ध पर्यावरण के लिए चाहिए पर आज केवल 7: ही बचे हैं उन्हें भी नष्ट किया जा रहा है। आज गोवंश को जंगल में चरने नहीं दिया जाता है जिस पर तर्क देते हैं कि गाय जंगल नष्ट करती है जबकि सत्य यह है कि गाय खाती नहीं चरती है उसके कारण अनेक प्रकार के बीज उसके पेट में जाते हैं, वे गोबर के द्वारा उपचारित होकर जब भूमि पर गिरते हैं तो उनसे नए पौधों का जन्म होता है पौधे के तीन भाग होते हैं नीचे का तामसी बीच का राजसी उपर का सात्विक गाय केवल उपर के भाग को ही चरती है, भैंस सारे को खाती है अतः गाय का स्वभाव सात्विक, भैंस का तामसी होता है, जिसके कारण जंगल की वृद्धि होती है, इसलिए गोवंश का विचरण नहीं रोका जाना चाहिए। बड़े बड़े पुराने वृक्ष सूख रहे हैं उनके ऊपर अनुसंधान किया गया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पता चला कि वृक्षों को खुराक नहीं मिल रही है। आज ईंधन के अनेक विकल्प हैं सौर ऊर्जा, बिजली मिट्टी का तेल, गैस आदि इतने साधन हो जाने पर भी पर्वत मुण्डे हो गए हैं उन पर कोई वृक्ष नहीं है जंगलों में वृक्षों की कमी होने लगी है। पहले ईंधन के विकल्प नहीं थे जंगल की लकडी, कंडों से सारा काम होता था, तब वन सुरक्षित थे वन तब भी काटे जाते थे लेकिन गोचारण के कारण उन वृक्षों को गोबर गोमूत्र के रूप में उनकी खुराक प्राप्त हो जाती थी, इस कारण वन्यभूमि को पोषण प्राप्त होता था नए वृक्ष उत्पन्न होते थे लेकिन अब ये बात नहीं है। आजकल पृथ्वी पर भूकंप आने की घटनाऐं अधिक होने लगी हैं इस पर दिल्ली विश्वविद्यालय के डा. मदनमोहन बजाज ने अपने दो सहयोगियों के साथ एक शोध कार्य किया उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि भूकम्प जैसी महाविनाशकारी विभीषिका का सीधा संबन्ध प्राणियों के सामूहिक संहार से है। डा.बजाज ने अपने गौरवशाली शोध को नाम दिया बिस प्रभाव डा. बजाज नें यह महत्त्वपूर्ण शोध कार्य जून 1995 में मास्को के निकट सुजडल नामक शहर में हुए एक अंतराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रस्तुत किया इस शोध ने वैज्ञानिक जगत में तहलका मचा दिया भूकम्पीय मान्यताओं को भी हतप्रभ कर दिया इस मौलिक शोध ने सिद्ध कर दिया कि भूकंप मनुष्य की मूर्खता के विध्वंशकारी परिणाम होते हैं मानव चाहे तो इन्हें रोक सकता है7 बिस प्रभाव से तात्पर्य तीनों वैज्ञानिकों के नामों के संक्षिप्त रूप को प्रस्तुत करता है बजाज, इब्राहिम, और सिंह जिनके पूरे नाम डा. मदन मोहन बजाज, मोहम्मद सैयद इब्राहिम, डा. विजय राज सिंह हैं। बिस प्रभाव वस्तुतः प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन की खोज आइंस्टीन पेन वेव्स के प्रभाव को ही रेखांकित करता है। शोध पत्र में कहा गया है कि मनुष्य के द्वारा किए गए मूक प्रणियों के सामूहिक संहार के कारण ही भूकंपों का जन्म होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर तीन प्रकार की तरंगें चलती हैं प्राथमिक, द्वितीयक, तलीय तरंगें, प्राथमिक तरंगें बहुत तेज चलती हैं, द्वितीयक तरंगें कुछ धीमें चलती हैं ये तरंगें जीवों की हत्याओं के समय उनको दी जाने वाली दारूण वेदना से उत्पन्न आहः से निसृत होती है। लगातार प्राणियों का वध किए जाने से इस प्रकार की तरंगें उत्पन्न और संकलित होकर एकत्र होती रहती हैं और जब इन तरंगों की ऊर्जा विस्फोट की स्थिति तक बढ़ जाती है तो पृथ्वी में कंपन होने लगता है जिसे हम भूकंप के नाम से जानते है।इस शोध में यह सिद्ध किया गया है कि जब बड़े पैमाने पर जीवों की हत्या की जाती है चाहे मनुष्यों की या पशु पक्षियों की उनसे जो वेदना उत्पन्न होती है वही इ.पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंगें ;आइंस्टीन पेन वेवद्ध होती हैं। इन तरंगों में इतनी शक्ति होती है कि पृथ्वी कांप उठती है जिसे आम बोलचाल की भाषा में भूकंप कहते है। शोध में कहा गया है कि जीव हत्या और भूकंप का संबन्ध ठीक वैसे ही है जैसे भोजन की अधिकता से अपच और अजीर्ण से इसमें तर्क ये भी है कि जहां हत्या हो रही है वहां भूकंप आए ये आवश्यक नहीं है। उन तरंगों के प्रभाव से भूकंप विश्व में कहीं भी आ सकता है। डा. बजाज ने अपने प्रतिपादित बिस प्रभाव के शोध पत्र को जो वैज्ञानिक आधार प्रदान किए है वे इस प्रकार हैं–

1. भूकम्पीय प्रकाश का अवलोकन।
2. भूगर्भीय जल में रेडान का बढ़ जाना।
3. ध्वनि की असमानता का बढ़ जाना और चट्टानों पर दबाव की अभिवृद्धि।
4. विशैली गैसों जैसे फास्जीन आदि का उत्सर्जन।

अर्थात भूकम्प आने से पूर्व भूमि के नीचे के जल में रेडान का गाढ़ापन दस गुना हो जाता है, भूमि से रेडान तभी उत्सर्जित होती है जब चट्टानों में दरार पड़े और दरार तब पड़ती है जब अकाउस्टक एनाइसोट्रोपी में अभिवृद्धि के कारण शिलाओं पर अत्यधिक दबाव पड़ जाता है इस तथ्य की पुष्टि विश्व के सर्वाधिक भूकम्पीय देशों चीन व जापान के वैज्ञानिक कर चुके हैं। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि जैसे जैसे इ.पी. तरंगें बढती हैं वैसे वैसे अकाउस्ट्रिक एनाइसोट्रोपी में वृद्धि होती जाती है। यह सिद्ध है कि ई. पी. तरंगें मुख्य रूप से भूकंप का कारण है जो प्रणियों की हत्या से उत्पन्न होती है। भूगर्भीय परीक्षण के आधार पर पाया गया कि ई.पी.तरंगें पृथ्वी पर प्राथमिक, द्वितीयक तरंगों के रूप में सदैव ही बहती रहती हैं। इसीलिए इन तरंगों की ऊर्जा संकलित होकर धरती की अलग अलग परतों में अवशोषित होती है यदि भूमि की परतों पर उर्जा का अवशोषण 10 प्रतिशत भी माने तब भी बहुत अधिक होता है। इसी अवशोषण के परिणाम स्वरूप ई.पी. तरंगों के ऊर्ध्वगामी दबाव से अकाउस्ट्रिक एनाइसोट्रोपी में अभिवृद्धि होती है यह इस तरह होता है कि भूगर्भीय शिलाओं पर दबाव बढ़ता जाता है। यह दबाव इतना बढ़ जाता है कि भूमि परतों द्वारा अवशोषित ई.पी. तरंगों की ऊर्जा फास्जीन आदि अन्य गैसों सहित भयंकर विस्फोट के साथ पृथ्वी से बाहर निकलती है इसी क्रिया के दौरान भूमि पर जो कंपन होता है वही भूकंप है। चूंकि इ.पी. तरंगों का सीधा संबन्ध प्राणियों के कत्ल से है इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि जब वधगृह अधिक होंगे तो इस प्रकार के विस्फोटों की आशंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बनी रहेगी। वधगृहों के बंद हो जाने पर इ.पी. तरगें निःसृत होना स्वतः ही बंद हो जाएगी। शोध में यह भी बताया गया है कि सभी भूकंप इ.पी. तरंगों के कारण ही आते हों ऐसा भी नहीं है कभी भूमिगत आणविक प्रस्फुटन, ज्वालामुखी पृक्रिया, बड़े जल संग्राहकों के निर्माण, भूगर्भ से लगातार डीजल आदि खनिज पदार्थों की लगातार निकासी आदि अन्य भी ऐसे कई कारण हैं। किन्तु सत्य यही है कि अधिकांश भूकंप इ.पी. तरगेंा से ही आते है। आज विश्व में जितने भूकंप आते है उतने पहले किसी युग में नहीं आए भूकंपीय विनाशलीला का ये सिलसिला वर्ष दर वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। भारतीय ऋषि मुनियों ने मानव सभ्यता को हर प्राकृतिक, दैवीय प्रकोप से बचाने का कुछ न कुछ उपाय प्राचीन ग्रंथों में अवश्य बताया है किन्तु भूकंप का कहीं भी उल्लेख नहीं किया हो सकता है उन दिनों भूकंप कभी आया ही न हो किसी को ज्ञात ही न हो कि भूकंप क्या होता है यदि आते भी होंगे तो उन्होंने पहले ही इसकी रोकथाम के लिए प्राणी वध पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था यही कारण है कि हमारे धर्मग्रंथों में जीव हत्या सबसे बड़ा पाप है और गो जैसे पवित्र, पूज्य, पशुओं की हत्या तो सबसे घृणित, निकृष्टतम् महापाप, ब्रह्म हत्या के समान पाप कहा गया है। आज विश्व के कई देश गाय जैसे शुद्ध शाकाहारी पवित्र पशु का मांस ही पूर्णतया खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग करते हैं वहां इसकी आपूर्ति के लिए प्रतिदिन हजारों गायों का सामूहिक वध किया जाता है। विश्व के अधिकांश देश पैसे के लालच में नित्य नए नए वधगृह खुलवा कर मांस निर्यात में विश्व में रिकार्ड तोड़ने की होड़ कर रहे हैं भारत भी उनमें से एक है और दुर्भाग्य से नंबर वन है। जल आज जहरीला हो रहा है, कारण हमनें अपनी कृषि में अत्यधिक रासायनिक खाद व कीटनाशक डालकर उसे दूषित कर दिया है। जब वर्षा होती है तो यह रासायनिक खाद व कीटनाशक जो फसलों पर डाला गया था धुलकर नदियों व तालाबों में जाता है और उसे दूषित करता है। नदियों के जल का परीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि उसमें 60ः प्रदूषण है। वही जल जब हमें पीने को दिया जाता है तो उसका परिणाम हमें प्राप्त होने वाली बीमारियां होती हैं। अतः गोबर, गोमूत्र के द्वारा भूमि को शुद्ध कर के प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है।

3. जीवसमूहः सम्पूर्ण जीव समूह का पालन भी गोवंश करता है, हमारे यहां चौरासी लाख प्रजातियां मानी हैं उनमें बीस लाख वनस्पति के रूप में है बाकी चर है जो चलकर भोजन प्राप्त कर लेते हैं पर अचर जो वनस्पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के रूप में पाई जाती है उनका भोजन जो गाये ही गोबर, गोमूत्र के रूप में देती है सूर्य उनको प्रकाश देता है, इन्द्र वर्षा के द्वारा जल प्रदान करते है धरती उन्हें गन्ध देती है ये वनस्पतियां फिर सब जीवों को भोजन देते हैं।

आज सारे विद्वान ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से परेशान हैं गर्मी बढ़ रही है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है, यही स्थिति रही तो समुद्र के किनारे के अनेक नगर जल में डूब जाऐंगें। हमारी संस्कृति यज्ञमयी है जो सारे पर्यावरण की रक्षा करती है।7 पृथ्वी सूक्त में इसका विस्तृत विवरण प्राप्त होता है कि यदि गो के एक ग्राम घी को गाय के गोबर के कण्डे में हवन करने पर एक टन आक्सीजन का निर्माण होता है। हमारे द्वादश ज्योतिर्लिंग वर्षा के आकर्षण के केन्द्र हैं, इनमें से आठ ज्योतिर्लिंग अरब सागर के मानसून, चार बंगाल की खाड़ी को प्रभावित करते हैं यहां क्रमशः और विधिविधान से यज्ञ किया जाए तो सारे भारत में पर्याप्त वर्षा हो सकती है।

4. स्वास्थ्यः मानव शरीर आज बीमारी का घर हो गया है, जब इसके कारण की गहराई में जाऐंगे तो ध्यान में आता है कि हरित क्रन्ति के नाम पर जो रासायनिक खाद, कीटनाशकों को हम उपयोग करते हैं। श्वेत क्रांति के लिए विदेशी नस्ल की गाय के द्वारा कृत्रिम गर्भाधान होना, दूध को वसा के आधार पर अच्छा बुरा समझना, इसलिए गाय नहीं भैंस के दूध को प्रोत्साहन देना ही बीमारियों के इस कदर बढ़ने का मुख्य कारण हैं।

पिछले पचास वर्षों में हमने पुलिस थानों की संख्या में वृद्धि की है पर अपराध उससे भी तेजी से बड़े हैं उसका कारण भी भैंस और जर्सी का दूध ही हैं। आज बच्चे मां बाप का कहना नहीं मानते इसका मुख्य कारण भी भैंस जर्सी का दूध ही हैं। क्योंकि इन्हें अपनी संतान से प्रेम नहीं होता है। कहा भी गया है कि जैसा खाओ अन्न वैसा बनेगा मन। इन सबसे देश को बचाना है तो हमें अपने गोवंश का सहारा लेना ही पड़ेगा।

5. सामाजिक दृष्टि सेः समाज में गो को आदर प्राप्त था इस श्लोक में कहा गया है कि गोबर गोमूत्र व्यर्थ करने से समाज के रूप की सुन्दरता नष्ट हो जाती है।8 गोपालन में ब्राह्मण वृत्ति के कुशल गोपालकों से ही गो सुरक्षित रहती है। समाज में गो की असुरक्षा समाज का अपराध है।9 गो को ब्राह्मण वृत्ति के लागों के हाथ में न देना गौ पर अत्याचार है। ये सारी सुरक्षा न देने से सामाजिक परम्पराओं का नाश होता है प्रसन्न होने पर गौ आशीवार्द देती है गौ के आशीर्वाद अथर्ववेद में कहे गए हैं10 कि पितरों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने स्वरूप से, ब्राह्मणों के यज्ञ में आज्य की हवि से, राज्य को अपनी उपलब्धियों से धन्य करती है गौ बुद्धिजीवियों की ही होती है क्योंकि गौ समाज को सर्वप्रथम माता के ही समान संरक्षण प्रदान करती है किन्तु विद्वान बुद्धिजीवी ही गौ को सुरक्षा प्रदान करते है।अथर्ववेद में स्पष्ट निर्देश है कि गोसेवा न करने से नर्क के भागी होते है, गोसेवा से यमराज के यहां भी सभी इच्छाऐं पूर्ण होती हैं, नर्क से छुटकारा भी प्राप्त होता है।11 समाज में गाय का अत्यधिक आदर किया जाता था। वह देवों के समान पूज्य थी। समाज में गो की हत्या करने वाले को अत्यधिक कठोर दंड दिया जाता था। इसके कई प्रमाण वैदिक साहित्य में प्राप्त होते हैं।12

6. आयुर्वेद की दृष्टि से[13]: आज के समय में विज्ञान की जितनी प्रगति हो रही है उससे ज्यादा तीव्रता से आज का मानव रोगों का शिकार होता जा रहा है। रोगियों की संख्या बढ़ने के साथ ही नए और भयंकर रोगों का जन्म हो रहा है जिनका आधुनिक चिकित्सा पद्धति में कोई इलाज नहीं है और जिन रोगों का है वे प्रायः बहुत ही खर्चीली हैं सामान्य जनों के लिए वे बहुत ही महगीं और पहुंच से बाहर हैं ऐसे में उन उपचार पद्धतियों पर शोध करना बहुत ही आवश्यक है। शास्त्रों एवं आधुनिक विज्ञान के अनुसार गाय के शरीर में सौर विकिरणों के द्वारा जो रहस्यमय कार्यवाई होती है उसे हम विटामिन ए,डी,आदि पोशक पदार्थों के रूप में जानते है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधानों में यह भी पाया गया है कि गाय के दूध में उपस्थित वसा में अनेक कैंसर रोधी तत्व पाए गए हैं इनमें से प्रमुख पदार्थ कन्जुगेटेड लिनोलिक अम्लीय सी एल ए यौगिक है इन सी एल ए यौगिकों की गाय के दूध की मात्र 8.6 से 100 माइक्रोमोल प्रति ग्राम तक पाई जाती है। सी एल ए यौगिक प्रकृति प्रदत्त अनेक खाद्य पदार्थो में पाए जाते हैं किन्तु इनकी मात्रा गाय के दूध में सर्वाधिक होती है। ग्रीष्म ऋतु में दूध में सी एल ए की मात्रा हरे जंगलों में चरने वाली गायों के दूध में दो से तीन गुना अधिक पाई जाती है। सी एल ए यौगिक को आहार में मिलाकर उनका कैंसर रोधी प्रभाव पर वैज्ञानिकों द्वारा सी. एल. ए. को कैंसर पैदा करने वाले रसायनो से दो सप्ताह पूर्व से देना प्रारम्भ किया गया तथा पाया गया कि स्तन के कैंसर में कमी आई है इस प्रकार के अनेक प्रयोग किए गए हैं इनसे सिद्ध होता है कि गाय के दूध के नियमित सेवन से कैंसर से बचाव किया जा सकता है।14

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मानव शरीर के ऊतकों की हानि को रोकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए मुख्य घटक के रूप में विटामिन डी के का उपयोग करता है। आस्टियोपोरेसिस, सोरायसिस जैसी त्वचा की गंभीर समस्याओं के लिए जीर्ण कैल्सियम, चयापचय संबन्धी विकार, अपर्याप्त सौर विकिरण कारण होते हैं क्योंकि विटामिन डी अग्न्याशय में इन्सुलिन के स्त्राव को नियंत्रित करता है इससे मधुमेह टाइप 2 की घटनाओं को नियंत्रित करता है सूर्य की किरणों, गाय के दूध में पाया जाने वाला विटामिन डी ही सबसे प्रभावी है विटामिन डी की कमी की वजह से होने वाली बीमारियां –

1. आस्टियोपोरेसिस कैल्सियम बिगडने के कारण कई घातक बीमारियां होती हैं
2. उन कोशिकाओं के विकाश के प्रभावित होने से जिनसे कैंसर होता है।
3. बच्चों में रिकेट्स नामक हड्डी का रोग।
4. इन्सुलिन उत्पादन बिगडने की वजह से टाइप 2 की डायबिटीज।
5. एक प्रकार का पागलपन।
6. सोरायसिस के प्रकार के सात त्वचा की व्याधियां15।

6.1. त्रिदोष से मुक्तिः वात, पित्त, कफ को सम रखने से कोई भी किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होती है। त्रिदोष को सम संतुलन में रखने के लिए गाय का घी दिन में तीन बार प्रातः, दोपहर, रात्रि नाक में दो दो बूंद डालने से त्रिदोष समाप्त हो जाता है। केवल रात में दो बूंद घी नाक में दोनों ओर डालने से नींद का न आना, बालों का झड़ना, पकना, स्मृति विस्मृति, डिप्रसन, आंखों की सभी व्याधियां, सिर का दर्द व दिमाग एवं सिर की सभी परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है जो अधिक धन देकर भी नहीं मिलती है।

6.2. रतौंधी से छुट्टीः पीले रंग को कैरोटिन नामक द्रव्य केवल गाय के दूध में ही होता है। इसी की कमी से मुंह, फेफड़े, मूत्राशयों की झिल्ली में अन्य रंगो का कैंसर हो जाता है। यह तत्व शरीर में पहुचकर विटामिन ए तैयार करता है। यह त्वचा, नेत्रों के लिए अतिआवश्यक हैं इससे रतौंधी रोग दूर होता है।

6.3. हृदय रोग का अचूक निदानः धमनियों के अवरूद्ध हो जाने पर बायपास सर्जरी करवाना पड़ती है ऐसी बीमारी के समय में काले छिलके वाली उड़द की दाल 10 ग्राम, गुग्गुल10 ग्राम, अरंडी का तेल10 ग्राम, गाय का ताजा मक्खन10 ग्राम लेकर दाल को रात भर पानी में भिगोकर गुग्गुल के साथ में पीसकर चटनी बना लें तब उसमें अरंडी का तेल मिलाकर ताजा मक्खन मिलाऐं यह मलहम प्रतिदिन हृदय पर स्नान के बाद लगाऐं यह प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक माह तक चालू रखें। इससे सब प्रकार का धमनियों का अवरोध निकल जाता है।

6.4. नशे से मुक्तिः गाय के दूध से बनी छाछ किसी भी प्रकार के नशे जैसे गांजा, चिलम, तम्बाकू, शराब, हेरोइन, स्मैक इत्यादि से होने वाले प्रभाव को कम ही नहीं करती अपितु नियमित प्रयोग से नशे की इच्छा भी धीरे धीरे कम होती जाती है।

6.5. टी बी मिटता हैः गाय को शतावरी खिलाकर उसके दूध को पीने से टी.बी. रोग मिटता हैं।

6.6. मलेरिया के लिए रामबाणः यदि 400 ग्राम दूध को उबाला जाए और आक के पौधें की अंगूठे जितनी मोटी हिलाने योग्य लकड़ी को लेकर दूध को हिलाया जाता रहे तो कुछ समय बाद दूध फट जाएगा उस फटे हुए दूध को इतनी देर हिलावें की पानी का अंश समाप्त हो जाए और खोवा तैयार हो जाए तब उसमें शक्कर मिलाकर खाने योग्य ठंडा कर रोगी को बुखार उतर जाने पर खिलाऐं मलेरिया से हमेशा के लिए छुटकारा प्राप्त हो जाएगा।

6.7. कोलेस्ट्राल नहीं बढताः गाय के दूध से कोलेस्ट्राल नहीं बढ़ता बल्कि हृदय एवं रक्त धमनियों के संकोचन का निवारण होता है।

6.8. कैंसर मिटता हैः कारनेल विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान के विशेषज्ञ प्रो.रोनाल्ड गोरायटे के अनुसार गाय के दूध में एम.डी.जी.आई. प्रोटीन के कारण मनुष्य के शरीर की कोशिकाऐं कैंसर युक्त नहीं होतीं। गाय के दूध में उसी गाय के घी को मिलाकर पीने से और गाय के घी से बना गरम हलवा खाने से कैंसर मिटता है। कैंसर यदि अंतिम चरण में भी हो तो भी सिर्फ काली गाय का दूध, काली तुलसी की पत्ती को खाकर इसे समाप्त किया जा सकता है।

6.9. संगृहणी का निदानः खाया पिया बिल्कुल न पचता हो तो 21 किशमिश गाय के दूध में खूब पकाकर किशमिश को खा लें दूध में शहद मिलाकर पिएं। आमों का मौसम हो तो आमरस पिएं किन्तु उसमें शक्कर न डालें, भोजन तरल ही लें 11 दिनों में संगृहणीं मिट जाएगी।

6.10. यौवन रक्षाः जंगल में चरने वाली गाय का दूध घी, शहद के नित्य प्रयोग से बुड़ापा भी जंगल में भाग जाता है।

6.11 मोटापाः यह शरीर के लिए कष्टसाध्य रोगों को आमंत्रित करने वाला विकार है।इससे मुक्ति पाने के लिए आधे गिलास पानी में 4 चम्मच गोमूत्र 2 चम्मच शहद 1 नीबू का रस मिलाने से यह नष्ट हो जाता है।6.12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उदावर्तः पेट में गैस बनने पर यह विकार उत्पन्न होता है। आधा कप गोमूत्र में काला नमक, नीबू का रस मिलाकर पीने से गैस से कुछ दिनों में ही छुटकारा प्राप्त हो जाता है।

6.13 उदर में कृमिः इस रोग में गोमूत्र 4 चम्मच अजवायन के चूर्ण के साथ एक सप्ताह तक सेवन से लाभा होता है।

6.14 जलोदरः 50, 50 ग्राम गोमूत्र में 2, 2 यवक्षार मिलाकर पीने से कुछ सप्ताह में पेट का पानी कम होने लगता है। जलोदर रोगी को गोदुग्ध ही पीना चाहिए।

6.15 विबंधः जीर्ण विबंध या कब्ज होने पर 3,3 ग्राम हर्र के चूर्ण के साथ इसका सेवन करने से पुराना कब्ज भी नष्ट हो जाता है।

6.16 बबासीरः गोमूत्र में कलमीशोरा 2,2 ग्राम मिलाकर पीने से बवासीर में लाभ होता है। गर्म गोमूत्र के सेंक से भी लाभ होता है।

6.17 यकृत के रोगः जिगर का बढना, यकृत में सूजन, तिल्ली के रोगों में गोमूत्र अमोघ औषधी है। पुनर्नवा क्वाथ के साथ समान मात्रा में गोमूत्र पीने से यकृत की विकृति का शमन होता है।

6.18 क्षय रोग से छुटकाराः यदि क्षयरोग है तो गाय के उस बछड़े का मूत्र जो केवल दूध पर ही निर्भर रहता है देना चाहिए।

गोमूत्र में पुरूषों, गर्भवती स्त्रियों के गुप्तरोग, खुजली, दाद, एक्जिमा, सभी प्रकार के त्वचा रोगों के निवारण की शक्ति विद्यमान है।

6.19 नासूरः इसे नाड़ी व्रण भी कहते हैं। इस रोग में गोमूत्र का सेवन इस रोग को समूल नाश करता है। 4,4 चम्मच गोमूत्र पीने, प्रभावित स्थान पर गोमूत्र की पट्टी रखने से 1 माह में समूल नष्ट हो जाता है।

6.20 शोथः शरीर की धातुपात की क्रिया में विषमता होने पर शोथ उत्पन्न होता है। पुर्नवाष्टक क्वाथ के साथ गोमूत्र का सेवन शोथ को दूर करता है। इस रोग में घी नमक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

6.21 संधिवातः जोडों के दर्द में महारास्नादि क्वाथ के साथ गोमूत्र सेवन से यह रोग नष्ट हो जाता है। शीत ऋतु में 1ग्राम चूर्ण के साथ भी इसका सेवन किया जा सकता है। दर्द के स्थान पर गर्म गोमूत्र से सिकाई भी की जा सकती है।

6.22 कान का बहनाः गोमूत्र गरम करके कान को धोऐं।

6.23 सिर दर्द मेंः गाय का दूध और घी मिलाकर अंजन करें, इससे नेत्र की शिराऐं लाल हो जाती हैं और रोग चला जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6.24 शराब का नशा उतारना: 2 तोला घी, 2 तोला शक्कर मिलाकर खिलाऐं।

6.25 धतूरा,रसकपूर के विष के उपर: खूब घी पिलाऐं।

6.26 कान: बछिया का गोमूत्र 100 ग्राम 10 ग्राम अजवायन डालकर उबालना धुंआ आने पर उतारकर ठंडाकर छानना दो बूंद प्रातः सायं कान में डालने पर किसी भी प्रकार के कान के दर्द से छुटकारा प्राप्त हो जाता है।

6.27 दांत: सात दिन गोमूत्र के कुल्ला करने से दांत का दर्द ठीक हो जाता है।

6.28 चर्मरोग: गोमूत्र में पुरूषों, गर्भवती स्त्रियों के गुप्तरोग, खुजली, दाद, एक्जिमा, सभी प्रकार के त्वचा रोगों के निवारण की शक्ति विद्यमान है। नीमगिलोय के क्वाथ के साथ दोनो समय गोमूत्र देने से रक्तदोष व समस्त चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। सभी प्रकार के चर्मरोगो के लिए गोबर एक श्रेष्ठ औषधी होती है। यह यह सर्प, बिच्छू, मधुमक्खी आदि किसी भी विष को दूर करने में सक्षम है। जले हुए स्थान पर गोबर का रस लगाना लाभकारी होता है पर यह स्वस्थ गाय का ही होना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न रंग वाली गो के पंचगव्य में विभिन्न गुंण उपस्थित होते हैं जो गायें जंगल में चरने जाती हैं, विभिन्न प्रकार की वनस्पति खाती है उनका पंचगव्य अधिक उपयोगी होता है16

6.29 सभी प्रकार के विष: अब तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि बड़े गलकम्बल ऊचें ककुद वाली भारतीय नस्ल की गाय में सब रोगों को दूर करने की शक्ति होती है। सभी प्रकार के विषों को दूर करने के लिए स्वस्थ गाय का गोबर 250 ग्राम, पानी 500 ग्राम, हल्दी 20 ग्राम मिलाकर पिलाने से उल्टी होगी विष का प्रभाव कम हो जाएगा, शरीर पर भी गोबर का लेप लगाना है।

6.30 रेडियो धर्मिता: गोबर का लेप दीवारों, आंगन, चूल्हे पर करनें सें सभी प्रकार के कीटाणु व रेडियों धर्मिता नहीं फैलती। भोपाल गैस काण्ड में भी इसका प्रभाव देखने को मिला है।

अब तो गोबर के भूकंपरोधी, अग्निरोधी, वातानुकूलित घर भी बन गए है।[17] डा. शिवदर्शनमलिक ने गोबर व जिप्सम को मिलाकर एक घर तैयार किया है इस नई प्रविधि में सीमेंट, रोड़ी, पक्की ईंटों का प्रयोग नही होगा। प्राकृतिक संसाधनों से बने इस भवन में वातानुकूलन की आवश्यकता नही है।एक पत्रकार परिषद में डॉ.मलिक ने अपने इस आविष्कार की जानकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दी। उन्होंने कहा कि जिप्सम ऊष्मारोधी, ध्वनिरोधी होने के साथ ही अग्निरोधी पदार्थ भी है। आग लग जाने पर यह चार घंटे तक नहीं जलता है, यदि तब भी आग न बुझे तो यह स्फटिकीयजल छोड़ने लगता है और आग बुझाने में मदद करता है।गोबर में जिप्सम मिलाने से प्लास्टर की कमियां दूर हो जाती हैं एवं इसकी मजबूती बढती है। वे अपने इस वैदिक प्लास्टर आविष्कार से ोशालाओं को जोड़ेगें इसके गोबर के ब्लाक बनाकर लोगों को घर बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगें।इस प्रकार से गोशालाओं की आय भी बढ़ेगी क्योंकि उनका गोबर भी खरीदा जाएगा।ऊष्मारोधी भवन की मांग भी ज्यादा है।

6.32 मृत गर्भ बाहर निकालने के लिए: आधा गिलास गोबर का रस 7 तोला गोदुग्ध में पिलावें।

6.33 गोबर के अन्य घरेलू उपचार:

क. गोबर सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों को सोख लेता है। हम उन घातक किरणों से बच जाते हैं गोबर का लेप दीवारों, आंगन पर होने से हमसूर्य किरणों की तीव्रता से बच जाते हैं

ख. दमा में गोबर का रस निकालकर नाक में दो बूंद डालने से तत्काल लाभ होता है।

गनाशागत रक्तपित्त में गोबर को केवल सूंघ लेने मात्र से ही रक्त आना बंद हो जाता है।

घ. गोबर में जीवन सत्व विटामिन बी12 अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है। अतः इसकी कमी में गोमय का प्रयोग लाभदायक होता है।

ड. पतले दस्त की अवस्था में गोबर का रस पीने से शीघ्र लाभ होता है।

च. विविध प्रकार के दांतों के विकार में गोमय की भस्म का दंतमंजन उपयोगी होता है।

छ. गोबर एक सहज प्राप्त सस्ता कीटाणुनाशक है।

ज. प्राचीन कालीन ऋषियों ने गोबर की व्यावहारिकता जानकर ही उसे धार्मिक स्वरूप दिया ताकि समाज मे रूढ़ हो जाए।

झ. इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जी.ई.बीगेंड ने गोबर पर अनेक प्रयोग करके यह सिद्ध किया कि गोबर की गंध से मलेरिया और राजयक्ष्मा के कीटाणु तुरन्त नष्ट हो जाते हैं।

ट. गोबर की गंध मात्र से प्रारंभिक अवस्था के कीटाणु नष्ट हो जाते है।

ठ. इटली में आज भी हैजा या अतिसार में गोबर पानी में घोलकर पिलाते है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड. भयंकर रोग जैसे चक्कर आना, मस्तक विकार,अस्थमा, मूर्छा आदि रोगों पर गाय के दूध अथवा तिल के तेल में गोबर घोलकर पिलाते और उसी से लेप करते है।तेल में गोबर मिलाकर मालिश करने पर मञ्जातन्तु निरोग और पुष्ट होते है।

ढ. क्षय रोग होने पर तो वैद्य रोगी को गायों के बाड़े मे सुलाते थे। क्योकि गोबर गोमूत्र की गंध सांस के साथ प्रविष्ट करके क्षय रोग के कीटाणुओं का नाश करती है।

ण. मद्रास में आज से 65 वर्ष पूर्व जब हैजे का भारी प्रकोप हुआ तब लोगों ने अनुभव किया कि ये उन पर नहीं हुआ जो गोबर के गारों में काम करते थे। मद्रास के ही डाक्टर किंग ने यह सिद्ध किया कि गोबर सत्व यदि पानी में मिश्रित हो तो उस पानी को प्रयोग करने वालों को हैजा नहीं होगा।

7. अर्थ की दृष्टि सेः वैदिक काल में पशुधन के अंतर्गत गाय मुख्य रूप से आर्थिक उन्नति का साधन थी।पशुधन से ही व्यक्ति की संपत्ति का ज्ञान होता था। जिसके पास जितने गोकुल होते थे वह उतना ही संपत्तिशाली समझा जाता था।गौ सम्पन्नता प्रदान करती है ऐसा अथर्ववेद में प्राप्त होता है कि सवत्सा दुधारू गौ सम्पूर्ण मनोकामनाऐं पूर्ण करती है।18

गौ के आशीर्वाद अथर्ववेद में कहे गए हैं19 कि पितरों के अपने स्वरूप से, ब्रह्मणों के यज्ञ में आज्य की हवि से, राज्य को अपनी उपलब्धियों से धन्य करती है वैदिक वांङमय में पृथ्वी को गो का पर्याय कहा है आदि काल में मनुष्य की संपन्नता उसके पास कितनी गाऐं हैं इस प्रकार तय की जाती थी। जब तक भारत में गो का सम्मान था तब तक भारतवासी स्वस्थ, संपन्न थे इस देश में दूध, अनाज कभी भी बेचा नहीं जाता था वह जरूरत मंदों को निशुल्क दिया जाता था। लगभग सभी आर्श ग्रंथों में गाय को महत्त्वपूर्ण बताकर गुंणगान किया है। मातृशक्ति का दिव्य अंश है गोवंश, दैवी शक्ति का उन्नायक सूत्र अर्थपूजक भोगवादी वर्तमान धर्म पर निजी हितों को वरीयता दे रहा है।[20] धर्मनिरपेक्षता शब्द की संकीर्ण व्याख्या में गोवंश सर्वथा उपेक्षित रह गया है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश का मेरूदंड ही गाय है21 वह मूलधन ब्याज और चक्र वृद्धि ब्याज है।आर्थिक दृष्टि से हम देखें तो भी उसके गव्य पदार्थों के आधार पर हम आर्थिक लाभ की वे सभी वस्तुऐं बना सकते हैं जिनकी व्यक्ति को प्रतिदिन आवश्यकता होती है। इस प्रकार से हम अपना धन तो बचा सकते हैं और उन्हीं वस्तुओं का व्यवसाय करके अपनी आय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साधन भी बनी सकती है गोमय आधारित उत्पाद22—

7.1 पथ्यादि वटिकाः यह मुख्य रूप से मुखरोग, मुखपाक, मुखदुर्गन्धनाशक, अरूचि, अग्निमांद्य में चूसने के लिए प्रयोग की जाती है।

7.2 नहाने की टिकियाः यह सभी प्रकार के त्वचा रोगों पर, मुख कांतिवर्धक,झुर्रियों को रोकने में विशेष लाभदाई है।

7.3 लेप टिकियाः त्वचा रोगों पर वैद्यकीय सलाह के अनुसार लाभ देती है।

7.4 इसब टिकियाः त्वचा रोगों पर उपयुक्त होने के साथ ही यह सोरायसिस, एक्जिमां पर विशेष प्रभावी है।

7.5 उबटनः मुखदूशिका, त्वचा का रंग सुधारने वाला, स्वारस्थ्यरक्षक है।

7.6 उबटनः मुखदूशिका, त्वचा का रंग सुधारने वाला, स्वास्थ्यरक्षक, मुखकांतिकारक, पामा, दारूणक नाशक,त्वक्वली नाशक, वर्ण्यकर,त्वचा पोशक,, झुर्रियांनाशक तथा बालों की रूसी हटाने में उपयुक्त है।

7.7 गोमय धूपः वातावरण को शुद्ध करता है, पर्यावरण संतुलन, स्वास्थ्य रक्षक, कीटाणुनाशक, मन को प्रसन्न करके शांति प्रदान करता है।

7.8 चंदन धूपः वातावरण को शुद्ध करता है, पर्यावरण संतुलन, स्वास्थ्य रक्षक, रोगाणुनाशक, स्वास्थ्यरक्षक है।

7.9 दंत मंजनः दांतों में कृमिविकार, ठंडा गर्म लगना, मुखरोग, मुखपाक, मुखदुर्गन्धनाशक, दंतहर्श, नियमित उपयोग से मसूढ़ों में रक्त आना बंद होता है, मसूढ़े स्वस्थ मजबूत होते हैं।

7.10 भस्म दंत मंजनः दांतों में ठंडा गर्म लगना, मुखदुर्गन्धनाशक, दंतहर्श, नियमित उपयोग से मसूढ़ों में रक्त आना बंद होता है, मसूढ़े स्वस्थ मजबूत होते हैं।

7.11 गोमयादि तेलः नेत्र विकार, कर्ण विकार, कान का बहना, बाधिर्य शूल आदि में 2,2 बूंद नाक में डालने के लिए, कान में भी प्रयोग कर सकते हैं किन्तु आंखों में नहीं डालना है।

7.12 मालिस तेलः वातरोग, अभ्यंगार्थ, संधिवात, संधिशूल, साइटिका आदि में उपयोगी है।

7.13 पंचगव्य घृतः अपस्मार जीर्णज्वर राजयक्ष्मा कुष्ठ, त्वचाविकार, पांडु, त्वचा, अस्थि, मांसगतविकार, नस्य के लिए नांक में दो दो बूंद डालें। अपस्मार, जीर्ण ज्वर, राजयक्ष्मा, कुष्ठ, त्वचा विकार, एनीमियां में विशेष फलदायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7.14 हिंग्वाद्य घृतः वातरक्त, संधिवात, कृमिविकार, शूल, आनाह, अग्निमांद्य भोजन के बाद या भोजन के साथ।

7.15 चंदनादि यमकः अग्निदग्ध व्रण, आगंतुक व्रण, वेदना एवं दाहयुक्त व्रण, दुष्टव्रण, पाददारी, सनबर्न आदि में उपयोगी।

7.16 मरहमः त्वचारोग, एक्जिमा, पैरों में दरारें, खुजली, नाखून का सड़ना, पैरों में जलन आदि में उपयोगी है।

7.17 अर्शोहर मरहमः बवासीर, भगंदर, नाड़ीव्रण नासूर आदि।

7.18 अन्य पदार्थः गोमूत्र अर्क, मेदोहर अर्क, हल्दी घनवटी, हरड़ चूर्ण, श्वित्रनाशक वटी, श्वित्रनाशक लेप, विभीतकावलेह, नारी संजीवनी, कासीसादि तैल, गोमूत्र आसव, क्षार चूर्ण ये गोमूत्र से बनते हैं। अन्य भी बहुत सी वस्तुऐं विभिन्न गोशालाओं द्वारा निर्मित की जा रही हैं। जो आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

7.19 पंचतिक्त घृतः कुष्ठ, पुराना जख्म, अस्सी वात रोग, अर्ष, चालीस पित्त रोग, कृमि, बीस कफ रोग, पांच प्रकार के कास खांसी, दमा रोग।

7.20 फल घृतः यह स्त्री पुरूष दोनो के लिए हितकर है वन्ध्या तथा जिसका गर्भ नष्ट हो जाता है उसे निरोगी संतान प्राप्ति हेतु उत्तम धातुदोष, रजोदोष तथा गर्भाशय के दोषों को दूर करता है।

7.21 कामदुहा रसः गर्मी से हुए फोड़े को नष्ट करता है, शक्ति दायक, पाचन क्रिया, रक्तवह संस्थान, नाड़ी संस्थान मूत्रवह संस्थान के दाह को कम करता है, पुराना हड्डी का ज्वर, पित्त विकार, दाह, अम्लपित्त, मूर्छा, चक्कर आना, उन्माद, अपस्मार, मिर्गी, सिरदर्द, सोमरोग, प्रदर, मगज की निर्बलता, मुंह में छाले होना, खूनी बवाशीर, मानसिक तनाव को कम करता है।

7.22 जात्यादि घृतः गंभीर व्रण/गहरा जख्म, पुराना जख्म, त्वचा विकार, एक्जिमा, सोरायसिस, क्षयज व्रण, पैर फटना, अर्श, भगंदर आदि में लाभ प्राप्त होता है।

7.23 शतधौतघृतः त्वचा मे जलन, चेहरे पर आने वाले काले धब्बे, धूप से त्वचा को सुरक्षित रखने के लिए, ठंड के दिनों में शरीर में सभी स्थानों पर प्रयोग कर सकते है।

7.24 अर्जुन घृतः उदराध्मान के कारण उत्पन्न घबराहट, सांस का चलना, हृदय रोग, घृत के पथ्यापथ्य के साथ कुछ काल तक निरंतर सेवन करने से सब प्रकार के हृदय रोग निःसंदेह नष्ट होते है। नियमित सेवन से हृदय क्रिया व्यवस्थित रूप से होने लगती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7.25 दधि से: तक्रारिष्ट, लाक्षादि तैल आदि निर्मित होते हैं।

7.26 दुग्ध से: कुश्मांडावलेह, बलादि तैल, केश तेल, नारायण तेल, वानरी गुटिका आदि निर्मित होते हैं।

7.27 मच्छर भगाने की क्वाइल: इसके उपयोग से दमा, श्वास, त्वचा, पर्यावरण संबन्धी कोई भी विकार नहीं होते हैं।

इस प्रकार से हमें ज्ञात होता है कि गोवंश के कितने लाभ होते हैं। गो को तो हम कुछ भी नही दे सकते किन्तु यदि हम उससे कुछ लेना ही सीख लें तो भी हमारा कल्यांण हो जाएगा हम पुनः स्वर्ण भूमि के निवासी कहलाऐंगे। यह हम पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार से उन लाभों को प्राप्त कर पाते है। गो के तो अनन्य गुंण हैं किन्तु सभी को विस्तारित कर पाना तो संभव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. त्रीणि वै :::::::::::::प्रजापतौ।।, अथर्व 12–4–47
2. गवां श्वासात्पवित्रा:::::::::::::कुशोदकम।।, अग्निपु–6
3. कृच्छ्शतिकृच्छ्र :::::::::::::::::::::स्युनरोत्तमाः।।, अग्निपु–9

   तप्तकृच्छ्र व्रतम् ::::::::::::::::::::ब्रह्मलोकदम्।।, अग्निपु–11

   त्र्यहमुष्णं:::::::::::::::::::::::::::::::परं अहम्।।, अग्निपु–10

   गोमूत्रेणाऽऽचरेत्स्नानं ::::::::::गोव्रती।।, अग्निपु–12

   मासेनैकेन :::::::::::::::::::::::::::परमं व्रजेत।।, अग्निपु–9
4. केवलीन्द्राय :::::::::::::::::::::::असुरानुत ऋषीन्।।, अथर्व 8–9–24
5. यूयं गावो::::::::::::: मेदयथा सभासु।।, ऋ 6.28.6, अथर्व4.21.6

   प्रजावतीः :::::::::::::::::::::::::::::रुद्रस्य वृज्याः।।, ऋ6.28.7,

   वशाया दुग्धं ::::::::::::अस्या उपासते।।, अथर्व 4.21.7

   अनूपे:::::::::::::::::::::::तोशते।।, अथर्व10–10–31

   सं हि :::::::::::::::कलिभिः सह।।, ऋ9–107–9

   यूयं गावो ::::::::::::::सभासु।।, अथर्व 10–10–13

   सं सत्र्चामि :::::::::::::मयि गोपतौ!!, अथर्व 10–10–13

   आ हरामि ::::::::::::पत्नीरिदमस्तकम्!!, ऋ6.28.6,अथर्व4.21.6

   दुहीयन्:::::::::::::धेनुमत्यै।।,ाट 2.26.4

   उपह्वये ::::::::::::षु प्रवोचम।।, ।ट 2.26.5

   तुभ्यं पयो:::::::::: पय उस्रियायाः।।, ऋ1.120.9

   ऋ 1.164.26

   ऋ 1.121.5
6. गो सहस्त्र विधि, अथर्व परिशिष्ठ
7. यज्ञपदीराक्षीरा :::::::ब्रह्मणा।।, अथर्व10–10–6

   अन्तरिक्षं ::::::::::::::::::::शतौदनाम्।।, अथर्व 10.9.10

   पताति ::::::::::::::शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ।।, ऋ 1.29.6

   यया द्यौर्यया ::::::ब्रह्मणाच्छावदामसि।।, अथर्व 10–10–4

   याः सरूपा::::::::::::::::: महि शर्म यच्छ।।, ऋ 10.169.2

   उद्वत्स्वस्मा :::::::::::: नानु गच्छथ।।, ऋ 1–161–1

   स्विध्मा ::::::::::::::::::पश्विषे तुराय।।, ऋ1.121.7

8 अयं स शिञ्क्ते:::::::::::::::::::::::वव्रिमौहत।।, ऋ1–164.29

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भरद्वाजाय ::::::::::विश्वभोजसम् ।।, अथर्व9–10.7
संवत्सरीणं ::::::::::::::::::::::::विध्य मर्मन् ।।, ऋ 6.48.13
गाव:सोमस्य::::::::::::::::::::मनसाचिदिन्द्रम ।।, ऋ10.87.17
स्वधाकारेण ::::::::::::::गच्छति ।।, अथर्व 8.3.17
सर्वं परिक्रोशं ::::::::सहस्रेषु तुवीमघ ।।, ऋ 6.28.5
सर्वं परिक्रोशं :::::::::::सहस्रेषु तुवीमघ ।।, अथर्व 4.2.1
पताति ::::::::::::::सहस्रेषु तुवीमघ ।।, अथर्व 12–4–32
ससन्तु त्या ::::::::::सहस्रेषु तुवीमघ ।।, ऋ1.29.7
ब्राह्मनेभ्यो :::::::ब्रह्माथो तपः ।।, ऋ 1.29.6
युध एकः ::::::::::::::::::::::::::चक्षुरभवद् वशा ।।, ऋ 1.29.4
सर्वे गर्भादवेपन्त ::::::::::::::::::ह्यस्या बन्धुः ।।, अथर्व10–10–33
ऊर्ध्वो ::::::::::::::::::::::होताजायत, अथर्व10–10–24
अभीवृता हिरण्येन :::::::::::::::वशे त्वा ।।, अथर्व10–10–23
तद् भद्राः ::::::::::::::::हिरण्यये ।।, अथर्व10–10–19
वेदिष्टे चर्म ::::::::::::::::: नृत्यतु ।।, अथर्व10–10–16
बालास्ते :::::::::::::::::::::::शतौदने ।।, अथर्व10–10–17
ये ते देवि ::::::::::::::::::::::मैषीः शतौदने ।।, अथर्व 10.9.2
देवाः पितरो ::::::::::::::::::सातिरात्रमति द्रव ।।, अथर्व 10.9.3
शतौदना गौ :::::::::::::::: शतौदनाम् ।।, अथर्व 10.9.7
अनुत्वा :::::::::::::::::::::::::::::::::::पुनरेहि वा सं ।।, अथर्व 10.9.9, अथर्व 10.9.10
ससन्तु ::::::::::::::::::::सहस्रेषु तुवीमघ ।।, ऋ 1.29.4, यजु4.20
नूनं ::::::::::::::::::गोभिरुत्तरम् ।।, ऋ 1.29.4
शतं कंसा:::::::::::::::::: विदुरेकधा ।।, ऋ 9–107–2
ऊर्ध्वो ::::::::::::::होताजायत ।।, अथर्व 10–10–5
जायमानाभि :::::::::::स्वस्य गोपनम् ।।, अथर्व 10–10–19
अपस्त्वं धुक्षे::::::::::वशे त्वम् ।।, अथर्व 12–4–10
अथर्व10–10–8
9. शतं कंसाः ::::::::::::::::::::::विदुरेकधा ।।, अथर्व10–10–5
वेदाहं सप्त ::::::::::::::::::::विचक्षणम् ।।, अथर्व10–10–3
यो विद्यात् :::::::::::::::::::::::::गृह्णीयात् ।।, अथर्व10–10–2
चिदसि ::::::::::::पूषऽध्वनस्पात्चन्द्रायाध्यक्षाय ।।, यजु 4.19
यो विद्यात्:::::::::::::::::: गृह्णीयात् ।।, अथर्व 10–10–2
10. राजन्तमध्वराणां ::::::::::::::::::स्वे दमे ।।, यजुर्वेद 3.23
स ताँल्लोकान्त्समाप्नोती :::::::::::::::::शतौदनम् ।।, अथर्व 10.9.6
11 य एवं ::::::::::दात्रेऽपस्फुरन् ।।, अथर्व 10–10–27
जायमानाभि ::::::::::गोपनम् ।।, अथर्व 12–4–10

Central Library Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 167990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य एनां::::::::::निप्रयायते।।, अथर्व 12–4–11

य आर्षेयेभ्यो::::::::::च मन्यते।।, अथर्व 12–4–12

12. यः पौरुषेयेण ::::::हरसापि वृश्च, ऋ 10.87.16

अन्तकाय गोघातं, यजु 30.18

यदि नो गां हंसि ::::::::::::::अवीरहा, अर्थव 1.16.4

13. आयुर्दा अग्ने ::::::::रक्षतादिमम्।।, अथर्व 2.13.1

इहेदसाथ न ::::::::::वो मनांसि।।, अथर्व 14.1.32

शं च नो:::: अस्तु भेषजम्।।, अथर्व 6–57–3

यो विद्यात् ::::::::प्रति गृह्णीयात्।।, अथर्व 10–10–2

त्रिषु पात्रेण ::::::::हिरण्यये।।, अथर्व 10–10–12

उपेदमुपपर्चनमासु ::::::::::::वीर्ये।।, ऋ6.28.8

एह यन्तु पशवो ::::::::::::नि यच्चतु।।, अथर्व 2.26.1

14. गोधन मासिक पत्रिका, सम्पादक खंड से, दिल्ली।

15. डॉ माइकेल होलिक के शोधपत्र धूप और विटामिन डी की हीलिंग पावर से, सत्य प्रकाशन सार्वजनिक रिलीज दस्तावेज 18 मई 2004

16. तृणं चरन्ती अमृतं क्षरन्ती ....पापं मे हर गोमयः।।, कठोपनिशद्

आजतक भारत, हरियाणा, रोहतक, डॉ.शिवदर्शन मलिक, (हिन्दू जनजागृति समिति)

17. हिन्दू जन जागृति समिति पर, न्यूज दिसम्बर 2015

18. पुरोडाशवत्सा ::::::::::::::::::::::::::प्रददुशशे दुह।।, अथर्व 12–4–35

19. राजन्तमध्वराणां:::::::::::::::::स्वेदमे।।, यजु3.23

20. अथर्व 10.9.12 :: से 10–9–29, अथर्व 4.34.8

इममोदनं::::::::::::::::::::::धेनुः कामदुधाः मे अस्तु।, अथर्व 10–10–7

अनु त्वाग्नि:::::::::::::::::::स्तना वशे।।, अथर्व 10–10–14

सं हि :::::::::::::::: बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–15

सं हि ::::::::::::::::बिभ्रती।।, अथर्व 10–10–18

वशा माता ::::::::::::::ततश्चित्तमजायत।।, अथर्व 10–10–20

आस्नस्ते ::::::::::::::रश्मयस्तव।।, अथर्व 10–10–22

यदुदरं ::::::::::::::त्रमवेत् तव।।, अथर्व 10–10–26

वशामेवामृतमाहुर्वशां ::::::::ऋषयः।।, अथर्व 10–10–34

वशां देवा:::::::::: विपश्यति।।, यजु 3–21

रेवती::::::::::मापगात।।, यजु 3.22

संहितासि ::::::::::भरन्त एमसि।।

21 अपस्त्वं धुक्षे ::::::::::::::::::::::::वशे त्वम्।।, अथर्व 10–10–8

अभीवृता ::::::::::::::::::::::वशे त्वा।।, अथर्व 10–10–16

ईर्मान्या ::::::::::::::वीरुधः।।, अथर्व 10–10–21

चतुर्धा ::::::::::::::::यज्ञस्तुरीयम्।।, अथर्व 10–10–29

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इन्द्र यज्वने:::::देवयुम।।, ऋ. 6.28

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र:::::देवयुम।।, अथर्व 4.21

न ता नशन्ति :::::गोपतिः सह।।, अथर्व 4.22

न ता अर्वा ::::::::::::चरन्ति यज्वनः।। ऋ6.28.3अथर्व4.21.3

ऋ6.28.4,अथर्व 4.21.4

22. वृजं कृणुध्वं स ::::::दृंहता तम्।।, अथर्व 19–58–4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ अध्याय

वैदिक संस्कृति में गोधन के महत्त्व का परवर्ती संस्कृति पर प्रभाव की समीक्षा

इस अध्याय के अंतर्गत वैदिक संस्कृति में गोधन के महत्त्व एवं परवर्ती संस्कृति में गाय की उपयोगिता, सम्मान, महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। विश्व में प्रत्येक राष्ट् की अपनी एक विशिष्ट पहचान होती है। यह पहचान उसकी जीवनशैली, परम्परा, मान्यतायें, दैनन्दिन व्यवहार आदि के द्वारा निर्मित होते हैं। उसे ही संस्कृति कहते हैं। वैदिक संस्कृति के पश्चात् भी हमारे देश में गो की महत्ता में कोई भी कमी नही आई थी।इसके पश्चात् पश्चिमी देशों ने हम पर आक्रमण किए हैं। गोहत्या, गोउत्पीड़न का प्रथम प्रयास भारत में इस्लाम धर्म के आगमन से बताया जाता है। भारत के कुछ भागों इस्लाम का आठवीं शताब्दी से प्रवेश हुआ, भारत के उत्तरी एवं पश्चिमी बड़े भागों में इस्लाम का व्यापक स्तर पर प्रभाव सन् 1200 के लगभग आरम्भ हुआ, 1200 से 1700 तक इस्लाम शाषकों ने जो पश्चिमी, मध्यएशिया से संबन्धित थे उत्तरी एवं पश्चिमी भारत की राजनीति पर वर्चस्व कायम कर लिया तथा यहीं पर बस गए। इन्हीं पांच शताब्दियों में बड़ी संख्या में ग्रामीड़ बंगाल का इस्लाम में मतान्तरण हुआ जो लोग आकर बसे थे वे अधिकांशतः नगरों में बस गए। मतान्तरण किए हुए भारत के लोग किसान, बुनकर, शिल्पकार आदि के रूप में कार्य करते हुए बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के छोटे छोटे गांवों या कस्बों में रहने लगे।1 भारत में आने से पूर्व उनका भोजन भेड़, बकरी, ऊट का मांस एवं रोटी था। त्योहारों के अवसर पर विशेषकर वर्ष में एक बार मनाई जाने वाली बकरईद के अवसर पर इस्लामी परंपरा में भेड़ बकरी, को बलि के रूप में मारकर खाने का चलन रहा है, सात या ज्यादा लोग दावत में शामिल हों तो ऊट को मारकर खाने का चलन रहा है,2 गाय की बलि चढ़ाने का प्रश्न ही नहीं उठता इस्लामी भूमि पर गाऐं नहीं होतीं थी। समय बीतते गाय की बलि चढ़ाई जाने लगी। इसी के पश्चात भारतीय लोगों व इनके बीच वैमनस्य बढ़ा तथा स्वाभाविक रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बढ़ता ही गया। किन्तु ऐसा लगता है कि राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विजेताओं के राजनीतिक प्रभुत्व को बढ़ाने के लिए इस वैमनस्य को कम करनेकी दिशा में प्रयास किए जाते रहे। कई बादशाहों नें विभिन्न समय पर अपने शाषित क्षेत्र में गोहत्या पर रोक लगाई है। फिर भी इस्लामिक शासन के इन पांच सौ वर्षो में 1200 से 1700 के बीच हुई गोहत्या पर कोई अधिक कार्य नहीं हुआ है। एक व्यक्ति द्वारा किए गए आधुनिक आंकलन 1950 के अनुसार इस्लाम शाषन के दौरान किसी भी वर्ष में 20,000 से अधिक गायों की हत्या नहीं की गई।

पहली बात तो यह है कि भारतीय लोगों द्वारा बड़ी संख्या में इस्लाम में मतान्तरण करनें पर वह न तो गोहत्या करते थे, नही गोमांस भक्षण ही करते थे। दूसरी बात सन् 1700 के आस पास इस्लाम का प्रभुत्व कम हो गया अतः गोहत्या भी कम हो गई थी। इस्लाम धर्म में गोसेवा इस्लाम धर्म का महत्वपूर्ण धर्मग्रंथ कुरान है पवित्र कुरान शरीफ के पहले अरबदेश, मिश्र आदि देश मूर्तिपूजक थे। कुरान कहता है कि दया धर्म का मूल है। हजरत मुहम्मद साहब के सभी आदर्श वचन अब्दुल रहमान उर्फ मौलाना फारूकी नामक सज्जन ने वरकत और हरकत नामक किताब में संकलित किए हैं।3

उसी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि अच्छी तरह पाली हुई 90 गायों से 16 वर्ष में 450 गायें ही पैदा नहीं होती बल्कि हजारों रूपये के दूध,खाद आदि भी प्राप्त होते हैं। गो, धन की रानी है। हजरत के दामाद अली ने अपने जीवन काल में गोमांस को नहीं छुआ बौद्ध काल में वैदिक धर्म में बहुत सी गलत बातें स्थिर हो गई थी। इस यज्ञ संस्था के खिलाफ वे बहुत जोर से आवाज उठाते थे यज्ञ के विषय में उनके विचार बहुत अलग थे भगवान महावीर एवं गौतम बुद्ध ने भी गो सेवा से ही अहिंसा धर्म को सिद्धकर अपने महान् धर्मों को सम्पूर्ण विश्व में फैलाया था। 4 हुमायु को गोमांस से घृणा थी उन्होंने गो मांस को छूने से अच्छा भूखा रहना स्वीकार किया।5

गोस्वामी तुलसीदास ने भी जीवन के अमूल्य लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गाय को सर्वोत्म साधन बताया है–6

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जो हरि कृपा ह्रदय बस आई।।
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा।।
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाई पेन्हाई।।

सामान्य रूप से विश्व में दो प्रकार की विचारशैली, व्यवहारशैली दिखाई देती है। एक शैली दूसरों कों अपने जैसा बनानें की आशा रखती है। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए यह जबरन, शोषण, हिंसा करने में भी हिचकिचाती नहीं है, यहां तक कि ऐसा करनें में चाहे दूसरा समाप्त ही हो जाए तो भी उसे परवाह नहीं होती। दूसरी शैली ऐसी है जो सभी के स्वत्व का समान आदर करती है, उनके स्वत्व को बनाए रखने में सहायता करती है। इस प्रकार दोनों एक दूसरे से प्रभावित होते हैं, फिर भी स्वत्व बना रहता है।

इस प्रकार यह तो स्पष्ट है कि दोनों में पहली यूरोपीय अथवा अमेरिकी शैली है तो दूसरी भारतीय इन दोनों के लिए क्रमशः पाश्चात्य और प्राच्य ऐसी अधिक व्यापक संज्ञा का प्रयोग हम करते हैं। यह तो सर्वविदित है कि भारतीय संस्कृति विश्व में अतिप्राचीन है, प्राचीन ही नहीं समृद्ध, सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत, विकसित है। आज से 500 वर्ष पूर्व यूरोप ने विस्तार करना शुरू किया तब समग्र विश्व में फैल जानें की उसकी आकांक्षा थी। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत भी उसका लक्ष्य था। इंग्लैण्ड में ईस्ट इंडिया कंपनी बनी, वह भारत आई, उसने पहले समुद्रतटीय प्रदेशों में अपने व्यापारिककेन्द्र बनाए, उन्हें किलों का रूप दिया, नाम दिया, सैन्य रखा, व्यापार के साथ धीरे धीरे प्रदेश जीतने शुरू किए, अपने कब्जे में किया साथ ही ईसाईकरण का काम भी शुरू किया सन् 1820 तक सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। भारत को अपने जैसा बनाने के लिए अंग्रजों ने यहां की सभी व्यवस्थाओं प्रशासकीय, शासकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक, नागरिक इनको तोड़ना शुरू किया। उन्होंने नए कायदे कानून बनाए, व्यवस्थाऐं बनाई, संरचनाओं का निर्माण किया और बलपूर्वक उस पर अमल भी करवाया। उन्होंनें यहां जो किया वह सब इंग्लैण्ड में अस्तित्व में था इसी कारण भारत दरिद्र होता चला गया। यहां वर्ग संघर्ष पैदा हो गए, लोगों का आत्मसम्मान और गौरव नष्ट होता चला गया। मौलिकता और सृजनशीलता कुंठित होती चली गई, मूल्यों का ह्रास हुआ, मानवीयता का स्थान यांत्रिकता ने ले लिया और सर्वत्र दीनता व्याप्त हो गई, लोग स्वामी के स्थान पर दास बन गए। एक विराट, अमानुशी व्यवस्था के पुर्जे बन गए जिसे वे बिल्कुल मानते नहीं थे, समझते तथा स्वीकारते भी नहीं थे क्योंकि यह उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं था। इसी क्रम में एक भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है गौमाता ब्रिटिसों द्वारा डेढ़ सौ वर्षों तक निरंतर प्रतिदिन गोहत्या की जाती रही ब्रिटिस शासन में गाय की व्यापक रूप से अवहेलना की जाती रही, उसका दर्जा कम करने के प्रयत्न किए जाते रहे हैं। मुगल शासक जहांगीर ने सन 1615 में अपने जहाज पुर्तगालियों के द्वारा रोके जाने से मुक्ति दिलाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए ब्रिटिसों की सहायता ली थी। पुर्तगालियों तथा कुछ अन्य के विरूद्ध सहायता लेने के फलस्वरूप बादशाह को सूरत तथा उसके आसपास के कुछ इलाके ब्रिटिशों को हस्तांतरित कर दिए थे। इसी के परिणामस्वरूप उन्होंने पश्चिमी एवं पूर्वी तटों पर सैकड़ों व्यापारिक चौकियां स्थापित कर लीं किलेबन्दी भी कर ली थी। तथापि, सन् 1748 के आसपास ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी दोनों ने अपनी आपसी रंजिश के बहाने आर्कोट के एक छोटे से मुस्लिम बहुल क्षेत्र पर अपनी अपनी दावेदारी प्रस्तुत की इस कारण उनके बीच भीषण स्तर का युद्ध हुआ। एक ही दशक में दक्षिण भारत के अधिकांश हिस्सों को समाहित करके युद्ध हुआ जिसके परिणामस्वरूप सन् 1799 तक ब्रिटिश समग्र दक्षिण भारत के शासक बन गए।

इस जीत के नशे में ब्रिटिसों ने बड़ी त्वरित गति से अपने क्षेत्र के विस्तार के लिए पैर पसारे। यह सब 1780 तक ऐसे ही चलता रहा। सन्1773 में वारेन हेस्टिंग्स की ब्रिटिश गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति हुई। उस समय राजस्थान के शासक अठारहवीं शताब्दी में मराठों से अभिभूत रहे अतः भले ही विदेशी परन्तु मराठों के शत्रु ऐसे ब्रिटिश शासकों के साथ मित्रता करने के निए जोधपुर, राजस्थान के शासक रूचि दिखाने के लगे सन् 1780 में वारेन हेस्टिंग्स के दूत और राजस्थान के, जोधपुर एवं अन्य रियासतों के महाराजाओं के बीच सम्पन्न संक्षिप्त सम्पर्क के दौरान उन्होंने आशा व्यक्त की उनके एवं ब्रिटिसों के मध्य ऐसी औपचारिक संधि की जाए कि वे उनके क्षेत्र में गो हत्या नहीं करेंगें। क्योंकि कुछ ब्रिटिस लोगों ततकालीन राजा के अधिकार क्षेत्र में भोजन के लिए बहुत सी गायों का वध किया था। मांस भक्षण के लिए गोवध करने की अंग्रेजों पिछले दशक की छवि से भारत के विभिन्न प्रांतों के लोग परिचित हो चुके थे। इसकी भनक लगते ही वारेन हेस्टिंग्स ने अपने दूत से कहा कि मुझे अफसोस है कि राजस्थान के शासकों द्वारा सुझाव दिए जाने से पूर्व इस संवेदनशील मुद्दे पर विचार नहीं किया गया था। लगभग 38 वर्ष पश्चात सन् 1818 में ब्रिटिश समग्र भारत के शासक बन गए ब्रिटिश शासकों ने उदयपुर, जयपुर, जोधपुर की रियासतों को सूचित किया कि वे इस बात का पूरा ध्यान रखें कि उनकी रियासतों में कोई गोहत्या न हो। इससे पूर्व किसी भी सन्धि में ब्रिटिशों ने कोई गोहत्या निशेध का इस प्रकार का उल्लेख नहीं किया था। जैसे जैसे ब्रिटिश ताकतवर होते गए इस संवेदनशील मुद्दे की चिन्ता भी कमजोर पढ़ती गई। पहले 1750 के पश्चात तक सेना की आवश्यकता की पूर्ति के लिए 1760 तक सूखा मांस ब्रिटेन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आयात होता रहा था।7 बड़े से भूभाग पर अधिकार किए जाने के पश्चात तुरन्त इस आयात पर रोक लगा दी गई। उनकी खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत मे बड़ी संख्या में स्थान स्थान पर बूचड़खाने खुलने लगे। इसके साथ ही पेशेवर कसाइयों की मांग उठी, ऐसे कसाई उन्हें मुस्लिम समुदाय से प्राप्त हो सकते थे। जो ऐसे कार्य पहले से करते रहे हों या उन्हें पशुहत्या करने के लिए बाध्य किया जा सके या ऐसे लोग रहे हों जिनका व्यवसाय शिकार करना या मृत पशुओं की खाल उतारना रहा होगा। एक कच्चे अनुमान के अनुसार 1800 से 1900 तक बूचडखानों की संख्या में 5से 10 गुना वृद्धि हुई। मुसलमानों में गोबलि देना जारी रहा तथा उन्हें यह महसूस करवाया गया कि कसाई का पेशा बहुत ही अच्छा तथा सम्मानजनक है। सन् 1830 के तुरन्त बाद लोगों का ध्यान इस ओर गया।1870 तक इस प्रकार की गई अनवरत पशु हत्या से एक भयंकर संकट उत्पन्न हो गया था। भारतीय क्रोध एवं नाराजगी की प्रथम अभिव्यक्ति कूकाओं जो नामधारी सिख थे के द्वारा की गई,8 कुछ वर्षो के उपरांत स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं अन्य संस्थाओं द्वारा गोहत्या रोकने के लिए ब्रिटिशों का आवाहन किया गया तथा गोसंवर्धिनी सभाओं का गठन करने का सुझाव दिया गया। 9पंजाब में गोरक्षा के लिए समय समय पर विविध आंदोलन होने लगे सिखों के नामधारी पंथ ने 1860 के आरम्भिक दशक में गोहत्या रोकने के लिए अंग्रेजों के विरूद्ध शस्त्र उठा लिए थे। समस्त सनातनी हिन्दूओं की भांति कूकाओं का भी यही विश्वास था कि गोहत्या करने वाले कोई भी शाषक शासन करने का अधिकारी नहीं हो सकता। सन् 1869 में कूकाओं ने बगावत की जिसके परिणाम स्वरूप पंजाब में फिरोजपुर में सिखों का राज घोषित किया गया।1870 में अमृतसर में कुछ कसाईयों की हत्या की गई, 1872 में जिन कूकाओं ने इसका दायित्व अपने उपर लिया था उन्हें फांसी की सजा दी गई। 63 कूकाओं को तोप से उड़ा दिया गया।10 1872 में कूकाओं ने पुनः विद्रोह किया जिसकी शुरूआत गोहत्या विरोधी आंदोलन के रूप में की गई। दिसम्बर 1877 में अमृतसर व आसपास के क्षेत्र में कूकाओं को ऐसें गीत गाने की बात कही गई जिसका तात्पर्य था गन्दे लोग लन्दन से आए और उन्होंने सब जगह बूचडखाने बनाऐ। हमारे गुरूओं की हत्या की हमें अब बलिदान देना होगा ' इस प्रकार उन्होंने गोरक्षा आंदोलन पंजाब में सक्रिय रूप से चलाया।

श्रीमन स्वामी की भूमिका[11]: कूकाओं के अतिरिक्त समग्र भारत में अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोग भी बढ़ती हुई गोहत्या के विरोध में ठोस कदम उठाने हेतु सोचने लगे थें।बहुत बडी संख्या में संन्यासियों ने इसी समय से अपना जीवन गोरक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। इनमें से सर्वाधिक प्रतिष्ठित संन्यासी थे, दक्षिण भारत के श्रीमन स्वामी जिनकी वाणी ने समग्र भारत में विशेष प्रभाव छोड़ा।

1. गोरक्षिणी सभाऐं 12: गोरक्षिणी सभा इस आंदोलन का अंततोगत्वा एक महत्वपूर्ण संगठन बन गया था। सम्पूर्ण उत्तर भारत, विशेषरूप से उत्तर प्रदेश,बिहार में आंदोलन को व्यापक व तीव्र रूप से गति देने में इसकी मुख्य भूमिका रही। इन सभाओं में कुछ में हिन्दू राजाओं को भी सदस्य बनाया गया, कई धनाढ्य हिन्दुओं ने इन सभाओं को प्रभूत मात्रा में धनराशि देकर अपना योगदान दिया।

2. परिभ्रमी आंदोलन : इस आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि अनेक साधु सन्यासी सम्पूर्ण भारत में यात्राऐं करके गोहत्या के विरोध में अभियान जारी रखते थे, लोगों से दान स्वरूप धन एकत्रित करते थे। तथा गोसंरक्षण आदि उद्‌देश्यों के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना करते थे। ऐसे अनेक संन्यासियों में कुछ नाम श्रीमन स्वामी, स्वामी, अलाराम, गोपालानन्द स्वामी, स्वामी, भास्करानन्द, स्वामी, ब्रह्मानन्द एवं खाकी बाबा आदि के गिनाए जा सकते हैं।

3. दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज की भूमिका: सन् 1880–94 की अवधि में गोहत्या के विरोध में अभियान चलाने वाले तथा गोरक्षिणी सभाओं का श्रीगणेश करने वाले संगठनों में प्रथम एक संगठन था। तदनन्तर, आर्यसमाज के साथ साथ समग्र भारत की विविध धर्मसभाऐं13, अन्य हिन्दू संगठन जुड़ गए। दयानन्द सरस्वती 1866 से ही गोहत्या के विषय में चिंतित थे। इन्होंने गोहत्या पर गोकरूणाधि नामक पुस्तक भी लिखी।इस पुस्तक का प्रथम अर्ध भाग गो एवं अन्य उपयोगी पशुओं की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के मामले को प्रस्तुत करता है।14

आर्थिक तर्कों के साथ, धर्मग्रंथों के उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए विषय को प्रतिपादित किया गया है। विरोधियों के प्रश्नों के उत्तरों को विस्तारपूर्वक दिया गया है। दयानन्द सरस्वती ने तर्क प्रस्तुत करते कहा कि गायों की हत्या किए जाने से समाज के लिए सर्वाधिक उपयुक्त सम्भावित भोजन निर्माण के उपक्रम को दुर्बल करने से समाज विनाश के कगार पर पहुंच जायेगा और प्रकृति के नियम तथा सामंजस्य को भंग करके भीषण विनाश को आमंत्रित करेगा। किसी भी दशा में मांस भक्षण करना पाप है। पुस्तक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय भाग में गोकृष्यादिरक्षिणी सभा जिसे गोरक्षिणी सभा के रूप में जाना जाता है, उससे संबन्धित नियम, उपनियम, समाहित हैं, सभा की सदस्यता, संगठन, प्रबंधन का ब्यौरा प्राप्त होता है।

4. भारत के विभिन्न राज्यों में पशुहत्या विरोधी आंदोलन

4.1. पंजाबः सन् 1862 में पटियाला के महाराजा ने वायसराय की विधान परिषद् के सदस्य के रूप में भारत में गाय के मांस की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु एक विधेयक प्रस्तुत किया किन्तु परिषद ने विधेयक को मंजूरी नहीं दी। पंजाब में गोहत्या के विरोध में भारत सरकार के समक्ष अनेक याचिकाऐं प्रस्तुत की जाती रहीं। 1883 तक इस आंदोलन ने प्रचंड एवं व्यापक रूप लिया एवं हिन्दुओं मुसलमानों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न होने लगी हिन्दू ऐसे मेलों व स्थानों का बहिष्कार करने लगे जहां गोमांस सरेआम बेचा जाता था।

1884 तक कई समाचारों गोसंरक्षण को वाणी देने का जिम्मा उठाया। गोहत्या विरोधी आंदोलन के प्रचंड रूप में चलने के कारण सरकार ने प्रतिशोध की भावना से गोरक्षिणी सभाओं से जुड़े सरकारी कर्मचारियों को दण्डित करके गोरक्षिणी सभाओं को बन्द करने की ठानी अनेक सरकारी कर्मचारियों को दण्डित किया गया जिन्होंने कालका में गोरक्षिणी सभा को आरम्भ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1886 के अन्त तक रिपोर्ट प्राप्त होने लगी कि आर्यसमाज के सदस्य सिपाहियों में आंदोलन छेड़ने के उद्देश्य से भर्ती हो रहे थे।15 1886–87 की शीतऋतु तक, गोहत्या विरोधी आंदोलन ने इतना व्यापक रूप लिया कि भारत सरकार ने 1840 में गठित ठगी एवं डकैती विभाग ने अपनी विशेष केन्द्रीय शाखा स्थापित की तथाविभिन्न स्थनीय सरकारों के मुख्यालयों में इसकी शाखऐं स्थापित कीं ताकि विभिन्न सूबों से ओदोलन विषयक जानकारी प्राप्त हो सके।

4.2. कश्मीरः कश्मीर राज्य में गोहत्या के विरोध में अत्यधिक कठोर कानून था। तत्कालीन वायसराय रिपन को यह कहते हुए सुना गया कि कश्मीर में गोहत्या के अपराध के लिए पहले से ही आजीवन कारावास की सजा देने का प्रावधान था। अतः ब्रिटिश सरकार को इसमें हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। 1882 में रिपोर्ट प्राप्त हुई कि कश्मीर राज्य में गोहत्या के विरोध में 800 मुसलमानों को कारावास की सजा दी गई। इस अवधि में ऐसी कई रिपोर्ट प्राप्त हुई कि यूरोपीय सहित अन्य लोगों को गोहत्या का दोषी पाए जाने पर जेल भेजा गया तथा मृत्युदंड दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जुलाई सन् 1886 में रिपोर्ट प्राप्त हुई कि सरकार के अनुरोध पर महाराजा ने ब्रिटिश सेना को अपने क्षेत्र में रहने की अनुमति दी थी किन्तु यूरोपीयों द्वारा एक गाय की हत्या किए जाने पर अपने आदेश को रद्द कर दिया।यह भी रिपोर्ट प्राप्त हुई कि यूरोपीयों द्वारा एक नीलगाय की गोली मारकर हत्या किए जाने पर उनका मामला वायसराय को भेजे जाने पर भी कश्मीर दरबार ने उन्हें फांसी पर लटका दिया था। 1889 में एक रिपोर्ट प्राप्त हुई कि स्वर्गीय महाराजा रणजीत सिंहजी की चौबरसी पर कश्मीर की जेलों से गोहत्या के अरोप में सजा काट रहे कैदियों को मुक्त किया गया था।

4.3. **उत्तर प्रदेश**[16]: 1886 में इलाहाबाद नगरपालिका परिषद के सदस्यों ने, जिनमें कई सदस्य स्थानीय कांग्रेस संगठन इलाहाबाद लोक परिषद से संबन्धित थे। नगरपालिका की सीमा में पशु हत्या निषेध विषयक अस्थायी उपनियम पारित कर दिया था। सन् 1887 में गोहत्या की वैधता विषयक विवाद इलाहाबाद उच्चन्यायालय में पहुंचा तथा इस ओर समग्र भारत के लोगों का ध्यान गया उसी वर्ष इलाहाबाद उच्चन्यायालय ने निचली अदालत का निर्णय दो बार पलट दिया था जो गोसंरक्षण का समर्थन कर रहे थे।

इससे इलाहाबाद के हिन्दुओं में उत्तेजना फैल गई, इलाहाबाद उच्चन्यायालय के निर्णयें ने विद्यमान कानूनों के अंतर्गत कानूनी समीक्षा के माध्यम से गोहत्या निशेध की समस्त सम्भावनाओं पर रोक लगा दी थी। जब हिन्दुओं को लगा कि सरकार स्थानीय कानूनों को,प्रशासनिक विनियमें को लागू नहीं करेगी तो उन्होंने मुस्लिम त्योहारों के अवसर चढ़ाई जाने वाली पशुबलि में स्वयं हस्तक्षेप किया, मुस्लिमों द्वारा अत्यधिक रूप में की जाने वाली पशुहत्या में सरकारी कर्मचारियों का उकसावा है। हिन्दू और सरकार के मध्य असहमति के कुछ मुख्य बिन्दु निम्न हैं–17

1. सामान्य रूप से बलि दी जाने वाली गायों की संख्या।
2. आजमगढ़ जिले में मुस्लिमों से प्राप्त 426 नोटिस सामान्यतः बलि चढ़ाने की संख्या से कहीं अधिक थे।
3. आजमगढ़ नगर पालिका उपनियम निजी घरों में पशु बलि चढ़ाने की अनुमति नहीं देते।
4. मजिस्ट्रेट ने फैसला सुनाया कि उपनियम ईद पर दी जाने वाली बलि पर लागू नहीं होते।
5. मण्डल आयुक्त द्वारा आजमगढ़ के मजिस्ट्रेट को निर्देश दिए गए थे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हिन्दू जनसंख्या वाले क्षेत्रों में केवल भेंडों, बकरियों की ही बलि दी जाये।

6. उपर्युक्त नियम का किसी भी प्रकार से उल्लंघन करने वालों पर पशुओं को बूचड़खाने की ओर ले जाने पर कानून तोड़ने वालों को डण्डित किया जाए।

किन्तु मजिस्ट्रेट ने इन निर्देशों का पालन नहीं किया। उसके परिणाम स्वरूप आजमगढ़ में खूब दंगे हुए।पूरे देश के समाचार पत्रों ने आजमगढ़ दंगों पर टिप्पणियां की, कुछ ने लिखा कि ये ब्रिटिस प्रशासन की फूट डालों और राज करो की नीति के परिणाम स्वरूप हुए हैं। मजिस्ट्रेट भी यूरोपीय है गोमांस खाता है अतः उसने मुस्लिमों को गोहत्या के लिए प्रेरित ही किया। मुंबई के एक समाचार पत्र ने लिखा कि हिन्दू मुस्लिम दंगे न तो हिन्दू सूबों में, न मुस्लिम सूबे हैदराबाद में ही होते हैं ये ब्रिटिश शासन वाले क्षेत्रों में ही होते है।

4.4. मध्यभारत मध्यप्रदेश, महाराष्ट्रः 1888 तक के अन्त तक यह आंदोलन मध्यभारत तक व्याप्त हो गया था।18 मध्यभारत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सभा के रूप में गौरव नागपुर की गोरक्षिणी सभा थी। नागपुर में प्रतिवर्ष की जाने वाली गोहत्याओं की संख्या 1887 में 16000 से 1892 में 500 तक कम कराने में नागपुर की यह सभा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1889 में सभा ने नागपुर की गलियों में एक शोभा यात्रा निकाली थी जिसमें स्थानीय कसाइयों से खरीदे गए 452 मवेशियों को अग्रभाग में रखा गया इस शोभायात्रा में हाथी घोडे, ऊंट थे। इसमें 20,000 लोगों ने भाग लिया।

लन्दन स्थित भारत के राज्य सचिव को लिखे गए एक पत्र में वायसराय डफरिन ने टिप्पणी की थी 'आपके 21 सितम्बर के पत्र में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में आपको सूचित किया जाता है कि हमें गोंडल और उसकी गायों के संबन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इस प्रकार की निशेधाज्ञा भारत के कई राज्यों में लागू है राजपूताना में मुसलमानों को भी गोहत्या की आज्ञा नहीं है, आबू पर्वत के हमारे सिपाहियों को हिन्दू पूर्वाग्रहों के कारण गोमांस के बिना अपना भोजन करना होता है।19 अतः यदि गोंडल इस स्थिति में परिवर्तन करना चाहता है तो मेरा मानना है कि हमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

जून 1890 में मध्यप्रदेश की सरकार ने नागपुर गोरक्षिणी सभा के विषय में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत किया कि गोरक्षिणी सभाओं की स्थापना होने के कारण कसाईयों को हत्या के लिए मवेशी प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया है। इससे ब्रिटिश सेना व नागरिकों के लिए गोमांस की उपलब्धता निश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रूप से प्रभावित हुई है। सेना के रसद विभाग अगस्त 1891 में मध्यप्रान्त में कामटी में सेना के रसद विभाग को सेना के लिए गोमांस की आपूर्ति करने में कठिनाई होने लगी। स्पष्ट रूप से गोरक्षिणी सभा को सेना के रसद विभाग के लिए मवेशी भेजे जाने से रोकने में सफलता प्राप्त हुई थी।20

गाय की पवित्रता विषयक कुछ आरम्भिक ब्रिटिश दृष्टिकोण:

गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स एवं डब्ल्यू पॉमर के बीच जोधपुर एवं राजस्थान के अन्य शाषकों के साथ राजनीतिक सम्बन्धों पर पत्राचार 1780

गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स एवं डब्ल्यू पॉमर को 24 –5–1780 आपके द्वारा भेजी गई रिपोर्ट से अवगत होने पर मैं जयपुर के राजा से संबन्धित अपनी राय व्यक्त करूगा। आपको जयपुर में सरकार की स्थिर एवं नियत प्रणाली में अब भी कोई विश्वास है तो राजा के साथ हमारा विनियोजन नजफ के साथ झगडे में हमें नहीं उलझायेगा, ऐसी संधि की प्रत्यासा को बढ़ावा मिलेगा यह संभव हो इसके लिए हम अपने सूत्रों से आवश्यक कड़ियां जोड़ने में लगे हुए हैं परन्तु मेरा सर्वाधिक विश्वास जोधपुर के राजा पर है, यदि वे इच्छुक हैं तो इस बिन्दु पर मेहनत करने के लिए उनके साथ बात आगे बढ़ाई जाए। किसी भी प्रकार से भेंट करना उपयोगी सिद्ध होगा यदि इससे तत्काल या बड़ा लाभ नहीं भी होता है तो भी इससे हमारा राजनीतिक ज्ञान बढ़ेगा ही और हमारे भावी साधन अधिक व्यापक बनेगे। मै आपके इन निजी निर्देशों को बोर्ड के समक्ष रखूगा यदि किसी सदस्य ने वास्तविक रूप से आपत्ति नहीं उठाई तो उन पर आपके द्वारा अभियोग चलाने हेतु अनुमति लेने की आवश्यकता होगी।उनका एक अनुरोध यह है कि उनके देश में किसी भी गाय की हत्या नहीं होनी चाहिए। मुझे खेद है कि इस सुझाव के भेजे जाने से पूर्व इसकी गहनता की जांच नहीं की गई है।

जयपुर के राजा या फिर उनके मातहतों के व्यवहार से मेरे मन में उनकी साख कम हुई है जब मैने उनकी प्रार्थना के संबन्ध में आपकों लिखा था तब से न तो उनकी ओर से कोई वकील आया है न किसी प्रकार का सन्धि प्रस्ताव ही आया है। यद्यपि उनके कार्य खेदजनक स्थिति में दिखाई देते हैं। मुझे सन्देह है कि राजा और उसके नौकरों ने नज़फ के प्रति विश्वासघात किया है। ऐसी विषम परिस्थिति में उन्हें नजरअंदाज करना आपको भारी पढ़ सकता है उनके द्वारा इस दिशा में आगे बढ़ने पर उनके गूढ़ प्रभाव का विपरीत असर हुए बिना नहीं रहेगा। ऐसा सोचने के लिए भी मेरे पास पर्याप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मात्रा मे कारण हैं, जिन्हें राजपूत राजकुमारों के पक्ष में आपकी योजना को निष्प्रभावी बनाने में लगाया जायेगा।21

जयपुर के राजा को कोई भी बढ़ावा देना ठीक नहीं होगा।कैप्टन पॉफम ने गायों की हत्या की मनाही कर दी होगी परन्तु अब अन्य मांस की उपलब्धता में कठिनाई होने से हमारे अफसरों के द्वारा तो नहीं परन्तु सेना के द्वारा आदेश का उल्लंघन हुआ है। राणा ने बताया कि निशेध को सख्ती से लागू करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु इसके उद्देश्य की सिद्धि के लिए इसकी आवश्यकता इसलिए अधिक दिखी क्योंकि वे धार्मिक आज्ञा के पालन करने के स्थान पर अपनी जाति के लोगों के बीच अपनी साख बढ़ाना चाहते हैं। मैने इसे अपराध या और किसी धार्मिक प्रथा को स्थानीय लोगों या मेरे अपने लोगों को रोकने के लिए पूरे प्रयास किए गए हैं मुझे आशा है कि जब तक जनरल कूप सत्ता संभाले रहेंगे मुझे आपके कार्याधिकारों मे सफलता प्राप्त करने की पूरी आशा है।

मुझे ज्ञात है कि जोधपुर के शाषक को लिखा गया है परन्तु उन्होंने यह पत्र अपने फ़ारसी दुभाषिए के नियत सरकारी माध्यम से नहीं भेजा है। उनके पास हमारे कैम्प का एक समाचार लेखक है जिसने ये खुफिया समाचार मुझे दिए हैं।

3. गवर्नर जनरल के सचिव जे0 एडम और दिल्ली के रेजीडेंट सी.टी. मैट्काफ के बीच पत्राचार

मुझे यहां उल्लेख करने का अवसर प्राप्त हुआ है कि राजपूत राज्यों के साथ किए जाने वाले समझौतों में वे अपने क्षेत्र के सींगो वाले पशुओं की हत्या के विरोध को सन्धि में शामिल करने के लिए कटिबद्ध है। यद्यपि मैने समान रूप से यह घोषणां कर दी है कि एक सन्धि में ऐसे अनुबन्ध शामिल नहीं किए जा सकते। मैने उन्हें भरोसा दिलाया है कि एक मुद्दे पर उनकी धार्मिक भावनाओं के प्रति पूरा ध्यान दिया जाएगा।22

सींगो वाले पशुओं की हत्या को प्रतिबन्धित करने हेतु सन्धि में ब्रिटिश सरकार को बाध्य करने वाली किसी भी धारा को शामिल करने के लिए राजपूत राज्यों में किसी भी मांग को समाविष्ट करने से इन्कार कर देने तथा इस मामले पर उनकी धार्मिक भावनाओं के प्रति ध्यान रखने के लिए आपके द्वारा दिए गए आश्वासन को गवर्नर जनरल ने पूरी तरह से अनुमोदित कर लिया है। मुख्य सेनाध्यक्ष के आदेशों के तहत यथासम्भव प्रतिबन्ध लगाने की दिशा में तदनुसार उपाय किए जाएें और इस प्रथा को राजपूताने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्षेत्राधिकारों में पढ़ाव डालकर रह रही था ब्रिटिश सेना के किन्हीं मंडलों में इन्हें पूरी तरह से प्रतिबंधित न भी कर पाऐ तो भी प्रयास जारी रहें23

वायसराय लार्ड डफरिन द्वारा भारत के राज्य सचिव को 31.10.1887 सार रूप में आपके 21 सितम्बर के पत्र में पूंछे गए प्रश्नों के उत्तर में आपको सूचित किया जाता है किहमें गोंडल या उनकी गायों के संबन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं है। प्रस्तावित फरमान अकेला है। यूरोपीय यात्रियों के कारण से है तथापि इस प्रकार से निषेध कई राज्यों में प्रवर्तमान है। राजपूताना में मुसलमान भी गोहत्या नहीं करते। आबूपर्वत पर हमारे सैनिकों को भी हिन्दुओं के इस पूर्वाग्रह से मतभेद होते हुए भी गोमांस के बिना चलाना पड़ा। अतः गोंडल में इस प्रस्तावित निशेध को कानूनन लागू किया जाता है तो हमारा मानना है कि हमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

महारानी ने गोहत्या आंदोलन विषयक वायसरॉय के भाषण की अत्यंत तारीफ की है।24 वे समुतचित रूप से सन्तुलित दृष्टिकोण बनाए रखने की हिमायती हैं। वे मानती हैं कि मुसलमानों को हिन्दुओं की अपेक्षाअधिक संरक्षण देने की आवश्यकता है क्योंकि वे अधिक स्वामिभक्त रहे हैं। मुसलमानों द्वारा की जाने वाली पशु हत्या तो आंदोलन का बहाना मात्र है वास्तव में यह आंदोलन हमारे खिलाफ सोची समझी साजिश है क्योकि हम अपनी सेनाओं के लिए मुसलमानों की अपेक्षा कहीं अधिक गोहत्या करते हैं। फिर भी यदि दोनो धर्मों के प्रभावी एवं महत्वपूर्ण लोग इस तरह की घटनाओं को नहोने देने के लिए कोई नियम बनाकर सख्ती से उसका पालन कराऐ तो आशा है कि इस तरह की भीषण स्थिति से बचा जा सकेगा।

यह महारानी ने वायसरॉय द्वारा उन्हें लिखे पत्र के उत्तर में सुझाव दिया था।

4.5. महात्मा गॉधी के गो विषयक व्याख्यान 25: हिन्दुओं में मुसलमानों में गो विषयक मतभेद हैं। यदि हम गायों को संरक्षित देखना चाहते हैं तो हमें उन्हें बूचडखाने की ओर ले जाए जाने से बचाना होगा। ब्रिटिश लोगों के लिए प्रतिदिन 30,000 गायों और बछडों की हत्या की जाती है। जब तक हम इन हत्याओं को रोक नहीं सकते हमें मुसलमानों की ओर ऊगली उठाने का कोई अधिकार नहीं है। ब्रिटिशों के द्वारा डेढ सौ वर्षो तक निरंतर हजारों गायों की हत्या की जाती रही।

4.6. भारत में गौ की स्थितिः भारतवर्ष में गौ की स्थिति अत्यंत दयनीय होने का कारण अंग्रेजों की नीतियॉ हैं। ब्रिटिसों द्वारा भारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनन्दिन गाय व उसकी संतति की हत्या किए जाने का क्रम विगत 150 वर्षों से भी अधिक समय से बरकरार है इन वर्षों में गोहत्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। जिनके कारण गाय माता की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई, वर्तमान में कोई उनके महत्त्व को जानता ही नहीं है। इस सब का कारण अंग्रेजों द्वारा किया जाने वाला मांसाहार ही मुख्य कारण था। जैसा कि गांधी जी ने उल्लेख किया है कि 1917 के आसपास लगभग 30,000 गायों की हत्या प्रतिदिन की जाती थी, 1945 के विश्वव्यापी युद्ध की समाप्ति पर, 1945 की की समाप्ति के आसपास अंग्रेजी एवं अमेरिकी सेनाओं की भारत से वापसी के समय से की जाने वाली गोहत्या की संख्या इतनी ही रही होगी। यही वह समय था जब भारत बूचडखानों बंद करना शुरू कर सकता था, एवं कुछ महीनों या एक वर्ष के अन्दर इस भीषण दूषित उद्यम का अन्त हो सकता था। ऐसी असीम दैनन्दिन हत्याओं की अनगिनत शाखाऐं भारत के प्रत्येक जिले में फैली थीं। 1840 तक प्रत्येक जिले में गोहत्या हेतु एक या अधिक बूचड़खाने कार्यरत थे।मद्रास प्रेसीडेंसी की 1893 की रिपोर्ट के अनुसार प्रेसीडेंसी के प्रत्येक जिले में गोमांस हेतु एक बूचडखाना कार्यरत था। हत्या से विविधप्रकार का गोमांस ही नहीं प्राप्त होता था अपितु चमड़ा समेंत कई उप उत्पाद भी प्राप्त होते थे। इस संबन्ध में ध्यातव्य है कि 1946 में राष्ट्रीय कांग्रेस की योजना समिति की एक उपसमिति ने गोचमड़े को अत्यंत मूल्यवान बताते हुए उसके निर्यात की सिफारिस की थी। यह वही कांग्रेस थी जो1890 के दशक में गोहत्या का कढ़ा विरोध करती रही थी[26]। अब यह बूचड़खानों को बंद करने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थी। जो वास्तव में पशुहत्या करते थे बूचड़खानों का प्रबंध करते थे, बूचड़खाने के मालिक थे तथा हत्या के उपरांत प्राप्त विविध उत्पादों के व्यवसाय से जुडे थे। यह भारत का सर्वाधिक व्यापक, सबसे बढ़ा सफल औद्योगिक उद्यम था इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बूचड़खानों को चालू रखने के लिए अत्यंत शक्तिशाली प्रकोष्ट कार्यरत थे वे इनके बंद होने का जमकर विरोध कर रहे थे। आज उन्होंने मांस उत्पादन का विस्तार कर दिया है। उप समूह की रिपोर्टों से यह भी सिद्ध होता है कि जीभ के स्वाद का मजा उड़ाने के लिए बड़ी भारी संख्या में पशुओं की हत्या की जा रही थी। फिर भी, इनमें मात्र उपरि उल्लिखित स्वार्थों तक बात सीमित नहीं है जिसकी वजह से गायों, भैंसों तथा उसकी संतति समेंत सभी प्रकार के पशुओं की हत्या बड़े पैमाने पर की जाती है। शिक्षा नीति में अंग्रेज उच्चाधिकारियों की गहन रूचि रही है जैसे कि ब्रिटिस प्रधानमंत्री पालमेर्स्टन ने 1557–58 के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दौरान रूचि दिखाई थी। भारत सरकार की उनकी सलाह थी कि भारतीय मूर्तिपूजा को इससे तुरन्त निकाल देना चाहिए। तत्पश्चात शीघ्र ही बड़ी भारी संख्या में लोगों ने अंग्रेजों के ढर्रे पर चलना प्रारम्भ कर दिया उनके जीवन मूल्यों को अपनाना शुरू कर दिया, परिणाम स्वरूप वे अपने निजी जीवन मूल्यों, शिष्टाचारों, परंपराओं, रीति, नीति, आचार विचारों को छोड़ने लगे। भारतीय जीवनमूल्यों को वे निकृष्ट कोटि का सिद्ध करने लगे। नई शिक्षानीति के माध्यम से विदेशी प्रभाव से प्रेरित होकर गाय की मंगलकारी एवं पवित्रता के प्रतीक रूप में भावना शनै–शनै आहत हुई भारतीय लोग भारी तादाद में गाय के प्रति मतभेद की भावना पैदा होने लगी। 1900 के पश्चात गो के विषय में यदि सोचते थे तो मात्र दूध देने वाली गाय के विषय में ही सोच पाते थे पवित्रता की भावना उनके दिमाग में पैदा नहीं होती थी। यूरोपीयों ने इस दृष्टि से गो को अधिक उत्पादक्षम माना था। 1920 के अंत तक, जब भारतीय कृषि पर रॉयल आयोग की रिपोर्ट आई, भारतीय गाय के प्रति पश्चिमी शिक्षा के रंग में रंगे शहरी अभिजन वर्ग में अत्यंत उपेक्षा भाव पैदा होना आरम्भ हुआ। इस प्रकार के बहुत से कार्य किए गए जिससे गो हत्या नहो किन्तु वह सफल नही हो पाए क्योंकि जो लोग इसमें लिप्त है वेही नीतियां बनाने वाले हैं इनकी संख्या अधिक है। प्रयास तब भी थे, प्रयास अब भी हो रहे हैं गुजरात में अभी कुछ दिन पहले गो को राष्ट्रमाता घोषित करने के लिए 8 लोगों द्वारा विषपान कर लिआ गया उनमें से एक की मृत्यु भी हो गई। फरवरी 1015 एन. डी.टी.वी। अभी गुजरात में ही एक गाय की शादी कराई गई जिसमें 5000 लोगों को आमंत्रण दिया गया। यह एन.डी.टी.वी में 22 मार्च 2015 को छपी। 2015 मे गाय पर्सन आफ द इयर रही यह खबर सभी न्यूज में छपी कही नकही जागृति तो आई है किन्तु यह तब तक संभव नहीं है जब तक हम अपने हृदय मे गो के प्रति सम्मान का, प्रेम का भाव नहीं जगाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. भारत में गोहत्या का अंग्रेजी मूल, पृ 20–24
2. कल्याण गो–अंक, पृ 221
3. कल्याण गोअंक, पृ 222
4. वही पृ 196, पृ 196
5. वही 215, पृ 215
6. रामचरित मानस तुलसीदास
7. भारत में गोहत्या का अंग्रेजी मूल, पृ 35–38
8. कल्याण गोअंक, पृ 619
9. आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती अक्टूबर 1883 में अपनी मृत्युपर्यंत उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने इस विषय पर चर्चा की है।, सत्यार्थ प्रकाश
10. भारत में गोहत्या का अंग्रेजी मूल।, सत्यार्थ प्रकाश
11. सन्यासी श्रीमन स्वामी गोहत्या विरोधी आंदोलन के अत्यंत महत्वपूर्ण आंदोलनकारी थे। 1891 में, 1892 में पंजाब में आंदोलन चलाया तथा 1892 में इलाहाबाद कांग्रेस अधिवेशन में भागीदारी की जून 1893 में वे गोसंरक्षण के लिए निचले बंगाल के मुसलमानों और ईसाइयों का समर्थन प्राप्त करने हेतु वहां रहे।
12. गोकरूणानिधिः, पृ 18– 27
13. कल्याण गोअंक, पृ 607
14. वही, पृ. 5–17 तक
15. गोहत्या से जुडे हिन्दू मुस्लिमें को दंगों का हवाला देते हुए मुस्लिमों को गोहत्या बंद करने का निवेदन किया है।, वासिर उल हक सियालकोट समाचार पत्र ने 12 अक्टूबर 1886
16. ईद वाले अंक में दंगों का हवाला देते हुए मुसलमानों को गोहत्या बंद करने का सुझाव दिया है। क्योंकि इस्लाम भी गोहत्या के पक्ष में नहीं हैं।, आफताब ए पंजाब–लाहौर समाचार पत्र ने अपने 6 सितंबर 1886
17. हिन्दू, मुस्लिम दंगों के लिए गोहत्या कारण बताया, कहा कि हिन्दुओं ने मुस्लिमों को दोषी ठहराने की गलती की है, जबकि गोमांसभक्षी यूरोपीय लोग इसके लिए दोषी हैं मुसलमान इसके लिए दोषी नहीं है, क्योंकि वे पशुहत्या में संलग्न हैं।, कोह–ए–नूर : लाहौर ने अपने 27 नवम्बर 1886 के अंक
18. अंक में लिखा है कि धार्मिक वजह से हिन्दुओं द्वारा गोहत्या विरोधी आंदोलन छेड़ना सर्वथा उचित ही है किन्तु गोहत्या के लिए अकेले मुसलमान ही दोषी नहीं है, यूरोपीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोगों की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति के लिए उन्हीं के इशारे पर गोहत्या की अनुमति दी गई है।, पंजाब पंच लाहौर ने अपने 3 मई 1888 –

19. के अंकमें ईसाइयों के लिए लिखा गया एक पत्र प्रकाशित करते हुए लेखक ने यह सिद्ध किया था कि गोमांस भक्षण करना ईसाइयों का कर्तव्य नहीं है और उन्हें हिन्दुओं के लिए इस प्रथा को बंद करने के लिए आव्हान करना चाहिए।,आफताब ए पंजाब–लाहौर समाचार पत्र ने अपने 30 मई 1888

20. स्वामी अलाराम अमृतसर के आर्यसमाज के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सदस्य थे उन्होंने पंजाब में गोहत्या के विरोध में एक बड़ा आंदोलन चलाया था। वे कांग्रेस के सदस्य थे उन्होंने 1888, 1890, 1891, 1892 के कांग्रेस अधिवेशनों को संबोधित किया था। वे आजीवन गो सेवा कार्यों से जुड़े रहे उनके भोजन वस्त्रों का प्रबंध लोगों द्वारा किया गया।, 1888,1890,1891,1892 के कांग्रेस अधिवेशन

21. डब्ल्यू पॉमर द्वारा गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के प्रति, 10–6–1780

22. सी.टी.मैट्काफ के द्वारा जे. एडम को 18–1–1818

23. जे. एडम द्वारा सी.टी. मैट्काफ को 2–2–1818

24. ब्रिटिस साम्राज्ञी रानी विक्टोरिया का पत्र वायसराय लॉर्ड लैंस्डाउन को, 8–12–1893

25. मुजफ्फरपुर का भाषण –11 नवम्बर 1917

26. मुजफ्फरपुर का भाषण –11 नवम्बर 1917

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अध्याय

वर्तमान में गोधन का समीक्षात्मक मूल्यांकन

वर्तमान में गोधन का मूल्यांकन उसके गुंण दोषों के आधार पर किया जाता है किन्तु उसके गुंण मनुष्यों को पता ही नहीं हैं। कहा जाता है कि वैदिक काल में पद्मगन्धा नामक गाय की एक प्रजाति थी इस जाति की गायें नन्दबाबा के महल में ही निवास करती थी इन गायों के अंग एवं दूध, दही, छाछ, धृत आदि से खिले हुए कमल के मकरन्द की सुगन्ध प्रकट होती थी। ऐसी एक लाख गायें नन्दबाबा के पास थीं। उन गायों के गोंबर गोमूत्र से एक विशेष प्रकार के कमल की महक आती थी। उस गोबर गोमूत्र के मिश्रणमें रज मिलकर एक विशेष प्रकार की सुगन्धित बृजकर्दम नामक कीच बन गई थी। इसी में कृष्ण बलराम लीला किया करते थे।

आज भारत दुनियां भर में उभरती हुई महासत्ता के रूप में प्रस्तुत हो रहा है लेकिन गंभीर विचार करने पर एक बात यह भी नजर आती है कि भारत दुनियां की महामंदी से बच निकला इस पर आज की वर्तमान अर्थव्यवस्था को देखकर संदेह उत्पन्न होता है इसीलिए आर्थिक सुद्रढ़ता के लिए भारत को फिर स्वदेशी आलंबन लेना होगा इसमें भी प्रथम प्राथमिकता देशी गोवंश को देनी होगी। आज देश की 12 प्रतिशत भूमि बंजर होने की कगार पर है।ईंधन आयात पर भारत सबसे अधिक खर्च करता है।शहरों का प्रदूषण और और रासायनिक मिश्रित खादों से उपजाए गए अन्न को खाने से होने वाली बीमारियों से हर वर्ष लाखों लोग मरते हैं जो बचते हैं उन्हें महंगी दवाइयाँ जीते जी मार देती हैं। बहुत विचार करने पर इन समस्त समस्याओं का एकमात्र यही निवारण है कि यदि हम भारतीय गोवंश की रक्षा कर पाए तो यह संभव है कि हम आज भी इस प्रकार के वातावरण से बच सकते हैं। यह श्रद्धा या विशिष्ट धर्म की भावना की बात नहीं है। तथ्यों के आधार पर राजीव जी दीक्षित ने एक याचिका सर्वोच्च न्यायालय में मुहम्मद कुरैशी के विरोध में दावा जीतते समय की थी। राजीव जी इलेक्ट्रानिक्स, दूरसंचार, उपग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग के अधिकारी थे। यह दावा जीतते समय उन्होंने जो आंकड़े प्रस्तुत किए उन्हें समझना बहुत ही आवश्यक है। तब भारत में 3 हजार 6 सौ परवाना धारक और 36000 अवैद्य वधगृह चलते थे जिनकी संख्या आज बढ़ गई है।

राजीव जी ने इसी बात से वर्धा के अखिल भारतीय गोसेवक संध व अहिंसा आर्मी ट्रस्ट के साथ के साथ मिलकर दावा दाखिल किया उनका आग्रह हैकि विषय व्याप्ति के अनुसार यह दावा एकाध न्यायाधीय के सामने चलने के बजाय खंडपीठ के सामने चले जिसको न्यायालय ने तीन चार वर्ष तक मान्यता ही नहीं दी थी आखिर न्यायाधीश आर सी लाहोटी की अध्यच्छता में सात न्यायाधीशों की खण्डपीठ स्थापन करके उनके सामने यह दावा चलना तय हुआ तब विरोधियों का पक्ष रखने का दायित्व इस देश के जाने माने प्रतिष्ठित वकीलों ने लिया जिसमें सोली सोराबजी ने 20 लाख,कपिल सिब्बल 22 लाख, महेश जेठमलानी 32 से 34 लाख लेकर खड़े थे। राजीव जी के पास एक भी वकील नहीं था तब न्यायालय ने राजीव भाई को अधिवक्ता दिया और कार्रवाई शुरू हुई उसमें जो तर्क विरोधियों द्वारा दिये गए वे निम्न हैं 1

1. गाय बूढी होने के बाद उसका कोई उपयोग न होने के कारण उसको मार कर मांस निर्यात करने से विदेशी मुद्रा प्राप्त होने से अर्थ व्यवस्था मजबूत होती है।
2. भारत में चारे की कमी होने के कारण उन्हें मारना उचित है।
3. जनसंख्या वृद्धि के कारण आदमियों के ही रहने के लिए स्थान नहीं है तो ंगायों को कहां रखें।
4. आखिर में विरोधियों ने कहा कि गायों कोमारना हमारा धार्मिक अधिकार है।

राजीव जी ने ये सारे मुद्दे बहुत तथ्यों के आधार पर निरस्त किए उनका पहला तर्क था कि

उत्तर– एक सुद्रण गाय का वजन तीन चार कुंटल होता है पर उसे मारने पर 70 किलो मांस का 50 रू माने 3,500 रूपये प्राप्त होते हैं। रक्त 25 रू0 ली0 उसका 1500 से 2000 रू0, हड्डियों का 1000 से 1200रू0 तक मिलता है अर्थात एक गाय मारने से अधिकतम 7000 रू0 की आय होती है जो सुद्रण गायके संबन्ध में है बूढ़ी गाय से इतना संभव नहीं। गाय को जीवित रखा जाए तो वह दस किलो गोबर, 3लीटर गोमूत्र 1 दिन में देती है 1 किलो गोबर से 33 किलो खाद बनाई जाती है जिसे सेंन्द्रिय खाद कहा जाता है। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
न्यायालय के आश्चर्य करने के बाद करने के बाद राजीव जी ने प्रयोग करके खाद बनाई जिसका परीक्षण आर आर सी के संशोधकों द्वारा हुआ उन्होंने कहा वनस्पति की वृद्धि के लिए जिन 18 प्रकार के सूक्ष्मतत्व आवश्यक हैं जो भूमि का अधिक उपजाऊ बनाते हैं जैसे मॅग्नीज, वे सब इसमें हैं ह्यइसके विपरीत रासायनिक खादों में केवल 3 ही पोषक तत्व होते हैं इसका अर्थ रासायनिक खाद से गोबर खाद 6 गुना अच्छा है।

न्यायालय ने इस तथ्य को स्वीकार किया। रोज गोबर से 330 किलो अर्थात माह में एक टन और 6रूपए किलो के हिसाब से 1800,1900 की खाद प्रतिमाह, एक वर्ष आय 70,000रू0 हुई एक गाय की अनुमानित आयु 20 वर्ष भी माने तो एक गाय अपने जीवन काल में एक करोड़ चालीस लाख का लाभ देती है। गोबर से उन्होंने मिथेन गैस बनाई जिससे हम अपनी रसोई गैस और गाड़ियां भी चला सकतें हैं इस पर न्यायाधीयों के अविश्वास के बााद राजीव जी ने उनकी ही गाड़ियॉ गोबर गैस से तीन माह चलाकर दिखाईं और बताया कि उसका खर्चा प्रतिकिलो 50से 60 पैसे इतना ही आता है यह पूरा ईंधन पर्यावरण प्रेमी है इससे धुआं नहीं होता शीशा नहीं फैलता आवाज भी कम होती है1 वह अपने अंतिम दिन तक गोबर देती है। यह सिद्ध होता है कि गोबर में लक्ष्मी का निवास है। गायों का गोबर एकत्रित करने पर देश में एक लाख बत्तीस हजार करोड़ रू0 की बचत हो सकती है तथा पैट्रोल डीजल के आयात पर पूर्ण रोक लगाकर भारत का परकीय मुद्रा भंडार सशक्त होगा भारत की अंतर्राष्ट्रीय ताकत बढ़ेगी। यह सारी आंकड़ेवारी सामने आने के बाद उन्होंने कहा कि गाय को मारने के बजाय गाय को जिंदा रखना अधिक लाभकारी है2

गोमूत्र का विचार करते हुए उन्होंने तथ्य दिया कि गोमूत्र से अड़तालीस प्रकार की औषधियां बनतीं है एक ली0 गोमूत्र की औषधि की कीमत 500 रू0 है अंतराष्ट्रीय बाजार में यह और बड जाती है आज अमेरिका भारत से देशी गाय के गोमूत्र को आयात करके अपने यहां मधुमेह की औषधियां निर्मित कर रहा है अमेरिका के पास गोमूत्र के तीन पेटेंट हैं अमेरिकी बाजार के हिसाब से देखाजाए तो हर लीटर को 1200 से 1300 का फायदा होकर एक गाय से प्रतिवर्ष 11 लाखरू0 प्राप्त होते हैं बीस वर्षों में 2,22,00,000 का फायदा होताहै।

विरोधियों ने कहा कि गाय को मारना हमारा धार्मिक अधिकार है। राजीव जी ने कहा कि कुरान, शरियत आदि ग्रंथ लाकर उसमें गोहत्या के आदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिखाने की चुनौती दी और विचार कि हदीस में ही कहा गया है कि गायों का रक्षण करो वे तुम्हारी रक्षा करती हैं। अनबोल जानवर होने के कारण उस पर दया करने को कहा गया है ऐसा स्वयं मोहम्मद साहब ने कहा है। यह भी कहा है कि जो गोहत्या करेगा उसको दोज़ख तथा जहन्नुम में भी जगह नहीं मिलेगी तो आपको किस धर्म के आधार पर यह अधिकार मिला। तब विरोधी निरूत्तर हो गए। न्यायालय ने ये भी कहा कि मक्का मदीना में या अन्य कहीं भी यदि कोई ग्रंथ हो तो उसे भी लाया जाए और देखा जाए किन्तु विरोधी एक माह तक कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं कर सके जिसके आधार पर उन्हें गोहत्या का इस्लामिक कोई भी आधार है। तथ्यों के आधार पर न्यायालय ने अपना निर्णय 26 अक्टूबर 2005 को दिया यह निर्णय 66 पन्नों का है न्यायालय ने इतिहास रचते समय बताया कि गाय की रक्षा करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।3

1998 में परमाणु परीक्षण के पश्चात भारत पर सारी दुनियां ने पाबंदी लगाई। 2008 की अंर्तराष्ट्रीय मंदी के बाद भी भारत दृणता से क्यों खड़ा रह सका इसका अभ्यास भारत विरोधियों ने किया, तब यह बात ध्यान में आई कि दुनियां की सबसे ज्यादा 55 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि भारत में है, यहां 16 प्रकार की जलवायु है, विश्व की 35 प्रतिशत जैवविविधता की संपदा है। ये तीन बातें भारत का आधार हैं इसको नष्ट किए बिना भारत नष्ट नहीं हो सकता। इसलिए भारतीय गोधन समाप्त करने, भारतीय बीज नष्ट करने के लिए विचारवंत बाजार, मीडिया के द्वारा कुटुंब व्यवस्था, नीतिमूल्य नष्ट करने का कार्यक्रम बरसों से चल रहा है। गायों की हत्या उसका ही एक भाग है। यह बड़ा षडयंत्र है।

1. भारतवर्ष के लिए गौ का महत्त्वः पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित मानसिकता भारतवर्ष को हर क्षेत्र में पतन की ओर ले जाने के अपने उद्देश्य में सफल रही है। वैदिक परंपरा में कृषि को ही एक मात्र सात्विक आजीविका का साधन माना जाता था, क्योंकि हमारी कृषि गो आधारित जैविक कृषि थी।2 भारत की 69 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 25 प्रतिशत है, अमेरिका की 4 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 1.5–2 प्रतिशत है, चीन की 50 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 19 प्रतिशत है। आंकड़ों से सिद्ध होता है कि भारत को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में लाने के लिए कृषि की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता है। हमारे देश में इतने वर्षों तक केवल रासायनिक कृषि करने के बाद भी अगर हम भूमि से अनाज प्राप्त कर रहे हैं तो केवल इसीलिए क्योंकि हमारे पूर्वजों इसी भूमि में युगों युगों तक केवल जैविक कृषि ही की है यदि ऐसा न होता तो अमेरिका जैसा देश केवल कुछ समय तक रासायनिक कृषि करके अपनी 12 करोड़ एकड़ कृषि योग्य भूमि गंवा न चुका होता और अब वह अपने कृषि कार्यक्रम में रासायनिक उत्पादों के साथ ही जैविक उत्पादों को भी पूरे जोर शोर से महत्त्व दे रहा है। वहीं जैविक कृषि का जनक रासायनिक कृषि के कुचक्र में दिनों दिन फंसता जा रहा है यदि ऐसी ही परिस्थितियां रही तो आने वाली पीढ़ियों को कृषियोग्य भूमि के नाम पर रासायनिक झील, दलदल, बंजर जमीन के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।4

गोकृषि से उत्पन्न संपन्नता को कोई हरण नहीं कर सकता, धूर्त व्यक्ति भी उस पर अपना प्रभुत्व नहीं जमा सकता, गौओं के स्वामी में इतनी बुद्धि होती है कि किसी भी प्रलोभन के वर्ष में भी वह अपनी संपन्नता को छोड़ना नहीं चाहता है। आधुनिक विकाश के नाम पर व्यापारी, स्वार्थी वर्ग द्वारा भूमि, भवन इत्यादि का स्वामित्व प्राप्त करने के लिए धन के प्रलोभन से गोकृषि के स्वामी को अपनी जीवनशैली छुडाने के प्रसंग में है।5

2. प्रदूषण एवं आणविक विकिरण से बचाव के लिए गोबर का प्रयोगः आवास गृहों को गोबर से लीपने की परंपरा प्राचीन है। इस लीपने के कारण हानिकारक कीटाणु, विषाणु नष्ट होने के अलावा वायु प्रदूषण तथा आणविक विकिरण से हमारी रक्षा होती है। जापान में नागाशाकी तथा हिरोशिमा में आणविक त्रासदी के बाद वहां के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला था कि गाय के गोबर में वह शक्ति होती है कि आणविक विकिरण को रोक देता है। वहां के अनेकों लोग गोबर के घोल को छानकर उसी पानी में अपने ओढ़ने की चादर को भिगोने के पश्चात् सुखाकर ओढ़ते हैं। रूसी वैज्ञानिक सिरोविच ने अपने शोध में पाया कि गाय के घी की अग्नि में अहुति देने के पश्चात् उसकी जो सुवास निकलती है वह जहां तक फैलती है उससे सारा वातावरण प्रदूषण एवं आणविक विकिरण मुक्त हो जाता है।

3. कूड़े, कचरे का शोधनकर खाद बनाने की गोबर की दक्षताः गाय के गोबर में ऐसी क्षमता है कि कूड़े, कचरे के उपर गाय के गोबर को डाला जाए तो वह वह कचरा तीन, चार महीने मे उपयोगी खाद बन जाता है। गोबरधन केन्द्र पुसद में इसका सफल प्रयोग देखने को मिला तब यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ज्ञात हुआ कि एक किलो गोबर में तीस किलो अनुपात में उपयोगी खाद तैयार हो सकती है, इसका प्रयोग अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं। गोबर खाद में उपस्थित पोषक तत्व पौधों के लिए धीरे धीरे विषमुक्त होते हैं इसी कारण खेतों में गोबर खाद का प्रभाव लंबे समय बना रहता है यह, खाद मृदा में विनिमय कैल्शियम बड़ाता है जो मृदा की भौतिक दशा को सुधारने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है खेतों में गोबर खाद का उपयोग करने पर पानी धीरे धीरे छूटता है जिससे पौधे लंबे समय तक लाभान्वित होते रहते है। गोबर खाद के कारण मृदा में सूक्ष्मजीवियों की सक्रियता बढ़ जाती है, जिससे मिट्‌टी में ह्यूमस की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण रेतीली मिट्‌टी में जलधारण की क्षमता का सुधार होता है।

मुंबई की एक फर्म एक्सल इंडस्ट्रीज़ के मालिक श्री कांतिभाई सर्राफ ने नगर निगम द्वारा लगाऐं गए कूड़े कचरे के ढेर पर गोबर के घोल के छिड़काव से न सिर्फ उसकी दुर्गन्ध को दूर किया बल्कि उसको बढ़िया खाद के रूप में परिवर्तित करके किसानों को देने को उद्योग भी चलाया है। 6

4. गोबर एक सस्ता व श्रेष्ठ उर्वरकः गोबर की खाद एक सर्वश्रेष्ठ खाद है यह भूमि का प्राकृतिक आहार है, भूमि की ऊर्वरा शक्ति को प्राकृतिक अवस्था में बनाए रखती है। प्रदूषणरहित, सस्ती है। इसके लिए किसान को परावलंबी नहीं रहना पड़ता है गोबर की खाद से उत्पादित खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट व स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। कृषि जगत् से संबन्धित वैज्ञानिक व प्रसार अधिकारी इस निर्विवाद सत्य पर एकमत हैं कि रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के प्रयोग से नष्ट हुई भूमि की उर्वरा शक्ति का एकमात्र विकल्प गोबर की खाद ही है। इस प्रकार की गई कृषि के निम्न लाभ हैं–

1. भूमि के सूक्ष्म लाभकारी जीवाणु बढ़ते हैं।
2. भूमि का प्राकृतिक रूप बना रहता है। जो खराब भूमि है वह ठीक हो जाती है।
3. सिंचाई के लिए कम पानी लगाना पड़ता है। क्योंकि भूमि की जल गृहण की क्षमता बढ़ जाती है। वर्षा का जल सोखने व रोकने की क्षमता भी बढ़ती है।
4. खेत व गांव के कूड़े कचरे का उपयोग होता है। वह प्राकृतिक चक्र में आ जाता है
5. किसानों और बैलों को अधिक काम मिलता है।
6. पर्यावरण में सुधार होता है, खाद्यान्न पौष्टिक व सुस्वादु होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. कीटनाशकों के जहर का अंश हमारे शरीर में नहीं जमता।
8. ग्रामीणों को रोजगार प्राप्त होता है। उनका अपना स्वावलंबी तंत्र स्वावलंबी कृषि का आधार बनता है विदेशी मुद्रा की बचत होती है। देश संपन्नता की ओर बढ़ता है।7

5. गोबर की राख के उपयोग: गोबर के कण्डों को ईंधन के रूप में जलाने के पश्चात् जो राख शेष रह जाती है। वह भी उत्कृष्ट मल शोधक है इसके प्रयोग से मल की दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है करोड़ों लोग आज भी जहां परंपरागत शौचालयों का प्रयोग होता है वहां पर मल पर राख डालकर मल की दुर्गन्ध को समाप्त किया जाता है। कालान्तर में यह मल भी खाद के रूप में परिवर्तित हो जाता है। राख कीट संहारक भी है। इसका प्रयोग किसान अपने खेतों में खाद और कीटनाशक के रूप में करते हैं। राख पड़ने से खेतों में दीमक आदि कीटाणु नहीं पनपते तथा फसल अच्छी होती है। कुकुरबिट्स वर्ग के पौधों पर विशेषतया राख का छिड़काव किया जाता है।

चेचक के व्रण जिनमें रोगाणु बहुतायत में होते हैं, राख के छिड़काव से समाप्त हो जाते हैं। भारत के गांवों, कस्बों में रहने वाले करोड़ों लोग बर्तनों की सफाई राख से करते थे जिससे करोड़ों रूपये की वचत होती थी। क्लीनिंग पाउडर से सफाई करने से चर्मरोग होने का खतरा रहता है, किसी को हो भी जाता था।इसके अलावा थोडी मात्रा में पाउडर बर्तनों पर लगा रह जाता है, वह मनुष्य के शरीर में जाकर नुकसान पहुंचाता है राख नहीं यह किसी भी प्रकार से हानिकारक भी नहीं है। राजस्थान के कुछ गांवों में बिना पानी के राख से ही बर्तन साफ किए जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह परंपरा रही है कि गोबर गोमूत्र से बहुमूल्य खाद तैयार करने के साथ साथ गोबर के सूखे उपले तैयार होते थे, जो घरों में चूल्हें में जलाने के काम आते थे और जलावन ऊर्जा के प्रमुख स्रोत थे।

उपले बनाने का यह कार्य मुख्यतः गर्मी व सर्दी के मौसम में किया जाता था और वर्ष भर के उपले तैयार कर लिए जाते थे उनको धूप में सुखाकर भंडारण बिटोरों के रूप में आज भी गांवों में सड़कों के किनारे दिखाई देते हैं। जर्मन के एक वैज्ञानिक जुगरन लेस भारत आए उन्होंने भारतीय जीवन मे गोवंश के योगदान पर अध्ययन करके अपनी पुस्तक भारत में गाय क्यों पूजनीय है में लिखा है कि जलाने के लिए कोयला या लकड़ी का ही इस्तेमाल किया जाए तो 3.5 करोड़ टन कोयला अथवा 6.8 करोड़ टन लकड़ी की आवश्यकता होगी उतनी बड़ी मात्रा में नतो कोयला उपलब्ध है न ही लकड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दोनों से गोबर के कंडे जैसी मंद मंद प्रदूषण रहित आग भी नहीं मिल सकती खाद के रूपमें गोबर का प्रयोग करने के पूर्व गोबर गैस तैयार करने के आधुनिक तरीके भी अब निकल आए हैं गोबर गैस संयत्र के माध्यम से गोबर से गैस जिसे बायोगैस भी कहते हैं प्राप्त की जा सकती है जिससे रसोई के चूल्हे तथा प्रकाश के लिए बल्ब, जैनरेटर, बाहन भी चलाए जा सकते हैं। संयत्र से गैस निकलने के पश्चात जो गोबर की स्लरी बचती है उर्वरक के रूप में उसकी गुणवत्ता बढ़ जाती है।

7. वैकल्पिक ऊर्जा: गोबर, गोमूत्र के अतिरिक्त कोई और विश्वसनीय वैकल्पिक ऊर्जा का स्रोत आज नहीं है। वृक्षों को काटकर ईंधन की आपूर्ति लंबे समय तक संभव नहीं है देहात में ईंधन की कमी के कारण ही वृक्ष कटने की दुर्घटना इस देश में व्यापक पैमाने पर हुई है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण के एकमात्र समाधान, वृक्षों द्वारा दी जाने वाली आक्सीजन में भारी कमी आई है। देश में कृषि, व्यावसायिक व घरेलू उपयोग में आने वाली ऊर्जा का मुख्य स्रोत पैट्रोलियम आधारित ही है।इन क्षेत्रों में ऊर्जा के उपयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। घरेलू कच्चे तेल के उत्पादन से आत्मनिर्भरता का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। वर्ष 1984, 85 में हम कुल आवश्यकता की 70 प्रतिशत पूर्ति करने में आत्मनिर्भर थे परंतु 1997, 98 में आत्मनिर्भरता कुल 35 प्रतिशत और 65 प्रतिशत कच्चे तेल के लिए हम विदेशों पर आश्रित हो गए यही परावलंबन नौवीं पंचवर्शीय योजना के अंत में 70,75 प्रतिशत हो जाने की पूरी संभावना है। परावलंबन के साथ साथ इस तेल के जलने से जो धुंआं निकलता है, उससे प्रदूषण की विकट समस्या पैदा हो रही है।

8. वैकल्पिक स्रोत के रूप में बैल व गोबर: ग्रामीण क्षेत्र में ऊर्जा का एकमात्र नैसर्गिक स्रोत हमारे पशु प्रमुखतः गोवंश ही हैं जिनसे हम विभिन्न उपयोगों के लिए उनका प्रयोग कर सकते हैं बल्कि डीज़ल, कीटनाशकों के प्रयोग से हो रहे भयंकर प्रदूषण से भी बच सकते हैं, कृषि को टिकाऊ आधार भी प्रदान कर सकते हैं पशुधन उर्जा को दो भागों में बांटा जा सकता है। गोबर जो उर्जा का अनंत स्रोत है।8

9. गोबर गैस संयंत्र के द्वारा गैस का उत्पादन: गोबर गैस संयंत्र उस गोवंश के द्वारा चलाए जा सकते हैं जो आज बूचड़खाने जा रहे हैं इसके निम्न प्रयोग है

1. ईंधन में प्रयोग से रोशनी के लिए गैस प्लांट के प्रसार और प्रचलन से ईंधन के लिए वनों की कटाई को कम किया जा सकता है जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर्यावरण की क्षति को कम किया जा सकता है।

2. गांव के लोगों के भी बिना धुएें के स्वच्छ ईंधन मिल सकता है जिसके कारण उन्हें आंखों की बीमारियों से भी छुटकारा मिल जाता है।

3. गोबर गैस संयंत्र से निकला गोबर सीधे खेतों में जाकर खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है जो खेती के लिए ज्यादा प्रभावशाली है।

4. गोबर गैस संयंत्र से जेनरेटर चलाकर बिजली पैदा की जा सकती है, इस प्रकार से चलाए गए जनरेटर केवल 20 डीजल का उपयोग करते हैं। प्रदूषण कम होता है। जनरेटर की बिजली से मोटर, पंखा, अन्य विद्युत उपकरण चलाए जा सकते हैं। बची हुई बिजली अन्य विकाश के कार्यों पर खर्च की जा सकती है, उससे बिजली पर भी कम दबाव पड़ेगा।

5. गांवों में कृषि के सभी कार्यों के साथ बैल भारवाहक, यातायात के मुख्य स्रोत आज भी हैं। अब बहुत से ऐसे अनुंसधान हो रहे हैं कुछ हो चुके हैं जिनसे पशु ऊर्जा को मेकेनिकल पॉवर में बदला जा रहा है।

6. गोवंश का आर्थिक दृष्टि से मूल्यांकन किया जाए तो निष्कर्ष निकलता है कि जन्म से मृत्यु पर्यन्त गोवंश का कोई भी अंग अथवा कृत्य ऐसा नहीं है जो अनुपयोगी या प्रकृति के प्रतिकूल हो। रोगोपचार के लिए अनेक आयुर्वेदिक औषधियों से लेकर रोज की कितनी ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कितने ही उत्पाद इसके आधार पर बन रहे हैं, जो ग्रामोंद्योग/कुटीर उद्योगों से स्वावलंबी आर्थिक ढ़ाचा खड़ा करने में चमत्कारिक भूमिका निभा रहे हैं और निभा सकते हैं आवश्यकता उन्हें जन सामान्य की जानकारी व प्रचलन में लाने की है। गोमय गोमूत्र से खाद, कीटनाशक, साबुन, शैम्पू, दंतमंजन, मरहम, धूपबत्ती, विभिन्न रोगों की औषधियां बनती हैं।9

मृत गाय के अहिंसक चर्म से निर्मित जूते, पर्स, से अहिंसक चर्म उद्योग चलता है, सींग खुरों से खिलौने तथा सजावटी सामान बनाया जाता है, गाय की हड्डियों को भूमि में दबाकर आर्गेनिक खाद तैयार की जाती है जो रासायनिक खाद से ज्यादा स्थाई ऊर्वरा शक्ति प्रदान करती है। वर्तमान में अनेक समस्याओं जैसे कृषि, उद्योग, ऊर्जा, पर्यावरण, स्वदेशी आदि के दृष्टिकोण से गोवंश की अत्यधिक महत्ता है। शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों की उपलब्धता तथा बीजों को उपचारित एवं संस्कारित करने की विधियों का आधार भारतीय गोवंश ही है। गोरस, गोमय के अधिकतम उपयोग से गोधन पर आधारित प्रदूषण मुक्त, स्वावलंबी, स्वदेशी, अर्थव्यवस्था को मूर्त रूप देकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपालन को लाभकारी उद्योग बनाकर बिना अधिक लागत के हमारे देश की गरीब जनता की गरीबी दूर करने लाखों बेरोजगारों को काम दिलाकर बेरोजगारी दूर करने का कार्य हो सकता है एवं राष्ट्र की सृमद्धि में योगदान दे सकते हैं।

10. बायोगैस एक दृष्टि में: एक वयस्क व्यक्ति के लिए औसतन 8 घनफुट बायोगैस एक दिन का भोजन बनाने में तथा तीन चार घंटे बल्ब जलाने के लिए पर्याप्त है चार पांच सदस्यो के परिवार के लिए एक घनमीटर /35 घनफुट गैस पर्याप्त है। – गैस प्लांट में यदि गोबर इस ढंग से डाला गया है कि उपयुक्त समय तक फरमेंट होता रहे तो एक किलो गोबर से 1.3 घनफुट गैस उत्पादित होती है अतः 35 घनफुट गैस के लिए 25 किलो गोबर की प्रतिदिन आवश्यकता है।

- एक गाय 7 से 10 किलो, भैंस 12 से 15 किलो गोबर प्रतिदिन देती है।बैल भी 8से 10 किलो गोबर प्रतिदिन देती है अतः 25 किलो गोबर से 35 घनफुट गैस के लिए एक गाय दो बैल या एक भैंस पर्याप्त है। चार पांच सदस्यों वाले परिवार के भोजन, प्रकाश के लिए इतना पर्याप्त है।
- गैस प्लांट एक घनमीटर से 85 घनमीटर तक क्षमता के लगाए जा सकते हैं। सामान्य परिवार का साइज 1 से 4 घनमीटर/35 से 140 घनफुट के ही पर्याप्त हैं।
- गैस प्लांट की औसतन लागत 6 से 8000रू/ आकार के अनुसार आती है।
- गैस प्लांट में गोबर का पानी व घोल 1:1 में बनाकर डाला जाता है गोबर पानी में स्वतः घुलनशील नहीं है अतः घोल बनाकर डालना पड़ता है यदि गोबर भरकर पानी भर दिया जाए तो अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होंगे।
- गोबर का फरमेंटेशन 30 दिन में प्रारंभ होजाता है अतः गोबर इस ढंग से डालना चाहिए कि 40 दिन तक जोकि सामान्य रिटेंशन पीरियड है उसमें पड़ा रहे यदि जल्दी बाहर निकल जाता है तो उसमें गैस नहीं बन पाएगी।

11. पशुगत ऊर्जा: यातायात व भारवाहन का कार्य पहले बैल गाड़ियों से किया जाता था। ट्रक व टेक्टर जितना माल ढ़ोतें हैं उससे अधिक ही बैलगाड़ियों से ढुलाई होती है क्योंकि वे उबड़ खाबड़ रास्तों पर भी चली जाती हैं और घर के दरवाजे तक माल पहुंचाते हैं एक अनुमान के अनुसार पशुओं की घटती जनसंख्या व चिंताजनक स्थिति में भी देश में 4 करोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
6लाख 70 हजार हल तथा 1 करोड़ 30 लाख बैलगाड़ियां हैं यह निर्विवाद सत्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में बैल ऊर्जा न केवल व्यावहारिक है बल्कि सामयिक है और रहेगी भी प्रश्न यह है कि किस प्रकार किसानों को जिन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, उससे बचाया जा सके तथा बैलों की क्षमता व उपयोगिता भी बड़ाई जा सके। इसी क्रम में बैल ऊर्जा की क्षमता बढ़ाने तथा बैलगत ऊर्जा आधारित यंत्रों मे सरलीकरण हेतु कई महत्वपूर्ण कार्य किए भी गए हैं तथा अनेकों संभावनाऐं अभी भी भविष्य के गर्त में छिपी हैं।

12. बैल चलित ट्रैक्टर[10]: केन्द्रीय कृषि यंत्रिकी अनुसंधान संस्थान, नवीबाग, भोपाल, ने बैलों की उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानों का श्रम कम करने हेतु एक बैल चलित मिनी ट्रैक्टर/एक तिपहिया संयंत्र बनाया है इसकी उपयोगिता यह है कि किसान ट्रैक्टर की भांति इस पर बैठकर अपने बैलों द्वारा खेती के कार्य कर सकता है। ऐसे हल/ट्रैक्टर के लिए भारतीय कैटल रिसोर्स डवलपमेंट फाउन्डेशन अहिंसा भवन, एफ 125 लाडो सराय, मेहरौली, नई दिल्ली 110030 से संपर्क कर सकते हैं।

13. पंचर रहित टायर की बैलगाड़ियां: अब तक बैलगाड़ियों कि पहिऐ लकड़ी के बने होते थे, उस पर लकड़ी की मोटी पत्ती चड़ाई जाती रही है कुछ वर्षो के पहले गाड़ियों में मोटर वाहन की तरह से ही टायर ट्यूब लगाए, इससे गाड़ी व उस बैल की परिवहन क्षमता निःसंदेह बढ़ी और गाड़ी खींचने में और हल्की हो गई किन्तु इससे आशातीत सफलता नहीं मिल पाई जिसका मुख्य कारण रहा कि जहां कही पहियों की हवा निकल जाए या पंचर हो जाए तो बेचारा किसान असहाय हो जाता है। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए केन्द्रीय कृषि यांत्रिकी अनुसंधान संस्थान भोपाल ने बस, ट्रैक्टर के पुराने पहियों के टायरों को लेकर उसमें नारियल की जटा भरकर इसे पंचर रहित बना दिया है।

14. बलवान गाड़ी: व्यावहारिक विज्ञान संस्थान, सांगली ने परंपरागत बैलगाड़ी को विकसित करके बलवान नाम से नया स्वरूप प्रदान किया है ज़िसकी निम्न विशेषताऐं हैं–

1. बलवान नामक इस विकसित गाडी का स्वरूप पूरा लोहे का बना है। एकदम नए ढंग से बनाई इस गाड़ी के पहिए का व्यास तो परंपरागत गाड़ी के जितना ही है लेकिन गोलाकार धुरी से जुड़े कोणों से बनाया गया है। पहिए में अलग अलग धुरियां हैं।
2. बलवान नामक इस मॉडल में सामान लादने के लिए 30 वर्गफुट स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रखा गया है, परंपरागत गाड़ियों में 10 वर्गफुट ही है।

3. नए मॉडल में चेचिस के नीचे जो बियरिंग ब्लाक लगाया गया है वह आसानी से झटके सह लेता है। इसमें स्टब एक्सेल का प्रयोग भी हुआ है।गाड़ी का ढ़ाचा इसप्रकार से बनाया गया है कि उसे गाड़ी की लंबाई के हिसाब से व्यवस्थित किया जा सके।
4. गाड़ी के पहिए में सपोर्टर खास तौर पर लगाए गए हैं। ये सपोर्टर अधिकांश भार को सीधा अपने उपर ही वहन कर लेते हैं।
5. गाड़ी में ब्रेक की व्यवस्था है।
6. गाड़ी की भारवाहन क्षमता अन्य गाड़ियों से दोगुनी है।
7. मरम्मत का खर्चा न के बराबर होता है।
8. गाड़ी की गति को बढ़ाने के लिए इसके पहियों पर रबर चढ़ाई गई है। इस प्रकार से सड़क को भी नुकसान नहीं पहुंचता। यह बैल गाड़ी किसानों के लिए बहुत ही कारगर सिद्ध हुई है।

15. ग्रामलक्ष्मी बैलगाड़ी: ग्रामलक्ष्मी नाम की एक विकसित गाड़ी हाल ही में सामने आई है। पिछले दिनों भारत सरकार के जहाजरानी मंत्रालय की प्रेरणा से पूर्ण रूप से इस्पात से बनाई गई इन गाड़ियों का प्रदर्शन भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलूरू की विज्ञान और प्रोद्योगिकी शाखा ने एक कृषि मेले में किया था। इसमें दो बैलों के स्थान पर एक ही बैल से काम चलाया जा सकता है। यह दोगुना माल ढो सकती है। इसमें भी ब्रेक की व्यवस्था है।

16. रहट से विद्युत उत्पादन: नेशनल इंस्टीट्यूट फार ट्रेनिंग इन इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग मुंबई ने ऐसा उपकरण बनाया है जिससे रहट के साथ बैलों के घूमने पर विद्युत उत्पन्न होती है। उस उपकरण से बैल एक हार्सपावर अर्थात 786 वाट बिजली लगातार पैदा करते हैं।

17. बैल ऊर्जा के अन्य प्रयोग: सरकारी आंकड़ों के अनुसार बैलों का उपयोग वर्ष में 50 से 100 दिन का ही हो पाता है बाकी दिन खाली रहते हैं। इस उपयोग को बढ़ाने के लिए भोपाल स्थित अनुसंधानशाला ने एक ऐसा उपकरण बनाया है जिसके द्वारा बैलों को एक ही स्थान पर घुमाकर 800–1000 चक्कर की गति मिल जाती है इस गति और शक्ति के माध्यम से नाना प्रकार के ग्रामीड़ उद्योग बिना बिजली, बिना डीजल खर्च किए संभव कर दिखाया है। इसका मुख्य कार्य चारा काटना, अन्न निकालना, आटा चक्की, दाल चक्की खराद, चारे के गठ्ठर बांधना आदि हैं। यह निश्चित बात है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यदि भारत में बैल ऊर्जा व गोबर ऊर्जा पर उतना ध्यान देकर अनुसंधान किया जाए जितना कि अन्य क्षेत्रों में दिया गया है तो आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं। ऐसा कोई कार्य नहीं जो बिजली व डीजल के बिना पशु ऊर्जा से संपन्न नहीं हो सकता है।आज की दयनीय स्थिति में तो बैलऊर्जा व गोबर ऊर्जा के अलावा कोई विकल्प भी तो नहीं है। समय रहते ध्यान देने की जरूरत है।

18. दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का निर्माण: श्री नारायण राव देवराव पंढरी जिनका उपनाम नॉडेप काका था उन्होंने गोबर से कंपोस्ट खाद बनाने की नवीन पद्धति का आविष्कार किया है। और एक अंगराग भी तैयार किया जो टिकिया के रूप में है और त्वचा रोगों में औषधी का कार्य करता है, गोबर की धूपबत्ती तैयार की, प्लास्टर भी बनाया जिसके छत, दीवार पर प्रयोग से शीत, ताप का प्रभाव बहुत कम हो जाता है। और अन्य उत्पाद जो पिछले अध्याय में प्रदर्शित किए हैं–11

वैदिक परंपरा में कृषि को एक सात्विक जीवन शैली माना जाता था हमारी कृषि गौ आधारित जैविक कृषि रही है। साधारण भारतीय से तात्पर्य एक ग्रामीण बन्धु का ही होता रहा है, जिसे आधुनिक विचार धारा नागरिक जीवन शैली में परिवर्तित करने में ही विकाश देखती है। गौका हमारे समाज में महत्व पाश्चात्य सभ्यता की समझ से बाहर है। पाश्चात्य देशों का गोवंश कृषि योग्य नहीं है।वहां कृषि अश्व आधारित होती है। पाश्चात्य समाज में गौ को मात्र दुग्ध व मांस से क्षुधा मिटाने का साधन माना जाता है। यही विदेशी मानसिकता भारतवर्ष के अब तक के विकाश के सब प्रयत्नों के विफल रहने और सामाजिक जीवन के लगातार पतन का कारण है।

भारत के विकास को ग्रामीण जीवन शैली का शहरीकरण लक्ष्य माना जाता है। गौ को केवल डेरी उद्योग द्वारा शहरी समाज में दूध व्यापार से जुडा धन कमाने का साधनही देखा जाता है। जीवन मूल्यों का लगातार ह्रास, बढते अपराध, आवश्यक वस्तुओं संसाधनों की हर संभव प्रयासों के बाद भी कमी, प्रत्येक वस्तु में मिलावट, कमर तोडती महंगाई, देश में विघटन कारी शक्तियों का विकाश, प्रचीन भारतीय गौआधारित जैविक कृषि के स्थान पर आधुनिक समझे जाने वाले ग्रमीण कृषक बन्धुओं के जीवन को असम्भव बनाती पाश्चात्य प्रेरित मानसिकता ही है इस सब के कारण किसानों की आत्महत्याऐं बडती ही जा रही हैं। वेदों के अनुसार एक सुखी, संपन्न, अपराध मुक्त, शोषणमुक्त, विकसित, पराक्रमी, समाज का निर्माण गौपालन पर ही आधारित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यहां पर भगवान कृष्ण के उपदेश को सुविख्यात वेद मंत्र में इस प्रकार दिया गया है।12

अमति से उत्पन्न मानसिक, चारित्रिक, आर्थिक पतन को गोपालन से दूर करो, गौ द्वारा सम्भव जैविक कृषि से सम्पूर्ण संसार की क्षुधा पूर्ति करो। तात्पर्य है कि यह जीवन शैली व्यक्तिगत सम्पन्नता के द्वारा राष्ट्र ही अराजक तत्वों पर विजय प्राप्त करने में समर्थ होता है। आधुनिक वैज्ञानिक, समाजशास्त्रियों के चिन्तन और भारतीय परंपरा के मार्गदर्शन से समाज में समग्र विकाश, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक मूल्यों, जन स्वास्थ्य, जन चेतना का पुर्नस्थापन गोमाता द्वारा ही संभव है। यह एक वास्तविकता है कि भारतीय मानसिकता में गोमाता के प्रति सदैव से अटूट श्रद्धा रही है। विदेशी शासकों के दुष्प्रयासों के चलते भी समाज स्वयं साधनों से स्थान स्थान पर गोशालाऐं चलानें की प्राचीन परंपरा को किसी प्रकार जीवित रखा है।अधिकांश गोशालाऐं आाज कार्यकौशल, साधन विहीनता से प्रभावित है। आज भारतीय गौ की उत्पादकता विश्व में सब प्रकार से निम्न स्तर पर पाई जाती है जो एक सोची समझी शासकीय नीतियों का दुष्परिणाम है। लगभग पिछले एक सहस्त्र वर्षो से तिरस्कृत गोमाता को भारतीय समाज के जनजीवन में पुनः स्थापित, प्रतिष्ठित करने में हमारी गोशालाऐं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज के पशु विज्ञान विशेषज्ञ भारतीय गौ की उत्पादकता को सुधारने के मूलकारणों की अनदेखी कर के केवल वर्णसंकरता ही एक मात्र विकल्प सुझाते हैं। यह सब प्रयास भारतीय शासन के पूर्ण सहयोग से पिछले साठ वर्षो से चल रहे हैं किन्तु गौ की दशा और ग्रामीण जीवन व्यवस्था में सुधार एक मृग तृष्णा ही रहा है। सार्थक प्रयास हर क्षेत्र में एक केन्द्रीय गोशाला को विकाश केन्द्र बना कर होने चाहिए। आरम्भिक खर्च के बाद यह गोशाला आत्मनिर्भर बन जाती है।

1. दुग्धहीन गोवंश का पालन सामाजिक कर्तव्य रूप से गोशाला का दायित्व बनता है।
2. क्षेत्र विशेष के आधार पर प्रत्येक गौ को जहां तक सम्भव हो, हरे चारे पर रखना चाहिए।
3. इस हेतु कृषि योग्य भूमि, गोचरों, सामाजिक भूमि, अरण्य क्षेत्रों के और जल संसाधनों का आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानित उपयोग भी गोशालाओं के माध्यम से क्रियान्वित होगा।
4. प्रत्येक गोशाला गोआधारित जैविक कृषि के विषय में अपने क्षेत्र में एक प्रशिक्षण और विस्तार केन्द्र के रूप में कार्य करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5. गोवंश संवर्धन के लिए उत्तम वृषभ पालने और उन के वितरण की योजना को भी गोशाला ही चलाएगी।
6. क्षेत्र के विद्यालयों में मद्यान्ह कालीन भोजन की स्वच्छ गोदुग्ध से पौष्टिकता भी गोशाला की सहायता से होगी।
7. आंगनबाड़ी योजना के अंतर्गत गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुपोषण कल्यांण की योजना है, उस के जिए ताजा जैविक हरी सब्जी, शुद्ध गोदुग्ध भी गोशाला की सहायता से उपलब्ध रहेगा।

19. असहाय गो: जिन गौओं की ठीक से देखभाल होती है वे हमारा कल्याण करती है।जिन का ध्यान नहीं हो पाता वे स्वयं नष्ट हो कर समाज को भी नष्ट कर देती हैं।13जो घूमती फिरती हुई अभक्षणीय पदार्थों को खाकर अपनी भूख मिटाती है, संक्रामक संघातक ऐसे रोगों से ग्रसित हो जाती है जो उपचार द्वारा भी असाध्य पाए जाते हैं। ऐसी गो के संपर्क में यह रोग मनुष्यों में भी आने की संभावना रहती है। ऐसी असहाय गौओं को अच्छी भावनाओं से प्रेरित होकर निस्वार्थ जनों के संरक्षण में पहुंचाने की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उनकी ठीक प्रकार से देखभाल हो सके।

गोपालन से मानसिकता में सुधार: गो सुन्दर वाणी को प्रेसित करने वाली, मनुष्यों में देवत्व; बुद्धि और समस्त उत्तम कर्मो कीद्ध भावना स्थापित करने वाली, समरसता बढ़ाने वाली होती है।

20. गोशाला का महत्त्व: ऐसी संस्थाओं द्वारा समाज का अत्यंत हित होता है। इनसे मनुष्यों, पशुधन, भूमि, पर्यावरण सभी की उन्नति होती है।जब इन गौओं के पोषण की सुव्यवस्था होती है, पुष्टिदायक दूध के साथ सहस्त्रों पदार्थ प्राप्त होते है। जहां इस पुण्य कार्य में स्वप्रेरित सौहार्द्रपूर्ण लोग आनन्द लेते हैं उस समाज में हिंसा रहित निरोग मनुष्य, पशुधन विचरण करता है। जहां ऐसे उदार ह्रदय एवं सत्कर्मशील व्यक्ति रहते हैं वहीं अग्निहोत्र के दर्शन होते हैं।14

21. गोशाला में गोसम्वर्धन: वेदों में वरूण को सामाजिक व्यवस्था बनाऐ रखने के लिए नियुक्त किया गया बताया गया है; सामाजिक व्यवस्था में सब स्थानों पर दृष्टि रखने वाले जैसे पुलिस अथवा म्यूनिसिपाल्टी के कर्मचारी वैदिक भाषा में वरूण कहलायेंगें सामाजिक व्यवस्था में कौन कर्मचारी गौओं को सुरक्षित गौशालाओं में पहुंचाएगें जहां अथर्वा जैसे वैज्ञानिक, समाज हित से प्रेरित होकर, भिन्न भिन्न गौओं का उपचार कर के उन्हें अच्छा, सुगमता से दूध देने वाली, नियमित बछड़े देने वाली, स्वस्थ गौओं में विकसित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर के समाज और राष्ट्र का कल्याण करेंगे

गोष्ठ सूक्त में गोशाला किस प्रकार की होनी चाहिए यह कहा गया है। गोशाला के द्वार उत्तर और दक्षिण की ओर खुलने चाहिए जिनसे प्राकृतिक प्रकाश के साथ हवा आर पार होती रहे फर्श स्वच्छ, सूखा तथा गायों और उनके रखवालों के लिए आरामदायक होना चाहिए। जिसमें रात्रि में प्रकाश और जल की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। गोसंवर्धन के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक गाय के लिए पांच पांच हाथ भूमि चारो ओर हो ;गो को उत्तर या दक्षिण की ओर मुख हो इस प्रकार बांधना चाहिए कभी भी पूर्व, पश्चिम की ओर नहीं बांधना चाहिए यह यजुर्वेद में वर्णित है।15

गोशाला के प्रकार और आस पास तत्वों का प्रबंधन वार्णित है जो सभी आवासों पर समान रूप से लागूहोता है।16 मंत्र का विस्तृत वैज्ञानिक विवरण निम्न है।

पवित्रमसिः पूरे रिक्त स्थान पर कुशा–दूब होनी चाहिए यह वैदिक परंपरा से कहा जाता है कि दूब एक प्राकृतिक प्यूरीफायर है। यही घास प्रत्येक समारोह और पूजन में प्रयोग की जाती है। पूर्वी उत्तरप्रदेश में ग्रामीण दूध विकेता जब दूध दुहने जाते है तो जिस बर्तन में दूध दुहते हैं17 उसमें चलनी के रूप में कार्य करने के लिए यही घास डाल दी जाती है इससे दूध घास से छनकर ही नीचे जाता है। यजुर्वेद में यह ग्रामीण गतिविधियों में मंत्र 1, 1, 3 में दृष्टिगोचर होता है। दुग्ध उत्पादन के लिए गायों से पूछा जाता है 'पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः' यह आधुनिक विज्ञान द्वारा निश्चित हो गया है कि दूब या कुश जिनका बॉटनिकल नाम ;ब्लदवकवद क्बजलसवदद्ध है जिसका कार्य फफूंद को न लगने देना, कीटाणुओं को नष्ट करना होता है। यह सभी जानते हैं कि दूब केवल पूर्ण जैविक पोषण से भरी हुई मिट्टी जिसमें गोमूत्र गिरता है में ही उगती है अन्यत्र नहीं होती। इस घास के संपर्क में आने से दूध के जीवन को बढ़ाती है। गाय जितनी मात्रा में ये दूब खाती है उसके दूध में इसके गुंण आते जाते हैं और उस दूध को पीने वाले को भी उसके गुंण प्राप्त होते हैं। गाय के भोजन मे कभी विषैला हानिकारक तत्व आ जाता है तो वह उसे अपने मांस मे सोख लेती है, मूत्र, गोबर, दूध में कभी भी उत्सर्जित नहीं करती है ऐसा अन्य पाशुओं के भी खिलाने के बाद मूत्र तथा गोबर में परीक्षण करके पाया गया है। इसीलिए गोमूत्र पवित्र गोबर मलशोधक है। अमेरिका में अनुसंधान में सिद्ध हो गया है कि विटामिन बी गौ के पेट में सदा ही रहता है।इसी लिए गोचर बड़ाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जोर दिया जाता था। इसप्रकार से जल के स्रोत भी बड़ते थे।18

द्यौद्योरसिः प्रत्येक गोशाला की बनावट ऐसी होनी चाहिए कि अधिक से अधिक स्थान खुला हो जिससे पर्याप्त प्रकाश में गौऐं रहे सौर विकिरण पृथ्वी और अंतरिक्ष के लिए यह सबसे बेहतर प्राकृतिक प्रक्षालक है इस प्रकार की गौशाला रहने पर गाऐं ऊर्जा का संरक्षण अपने शरीर में करती है जो दुग्ध आदि के माध्यम से हमें प्राप्त होता है।19

पृपृथिव्यसिः गायों के लिए ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जिसमें मनुष्य स्वयं रहना चाहे अत्यधिक नर्म व कठोर भूमि नहीं होनी चाहिए। गोशाला में रहने वाली गायों में अधिक कठोर व गीले फर्श पर रहने के कारण उनके खुरों में संक्रमण हो जाता है।

मतरिश्वनो घर्मोंसिः गोशाला की वायु को साफ करने के लिए प्राकृतिक सौर गर्मी का प्रयोग किया जाना चाहिए। सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा दुनियां में सभी को चाहिए। इनके जीवित और प्रसन्न रहने पर कभी भी हमें ऊर्जा को संरक्षित करने के निए अन्य उपायों की आवश्यकता नही होगी।20

पपरमेण धाम्ना दृँहस्वः नियमित रूप से अग्निहोत्र ही पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए आवश्यक है। इसके लिए वैदिक काल में गोशाला में ही यज्ञ करने का विधान था जो सभी मनवांछित फल प्रदान करता था।21

गो को प्रणाम करके जो भी कार्य किए जाते थे वे सभी सफल ही होते थे ऐसा माना जाता है हम इसको आज भी करके परीक्षण कर सकते हैं तभी तो कई स्थानों पर गो के प्रणाम भी द्रष्टव्य होते हैं।22 यदि किसी गृह में गो दुख प्राप्त करती थी तो उसको गो का श्राप लगता था इसके भी प्रमाण हमें वेदों में प्राप्त हैं।23 मनोरंजन के लिए जिस प्रकार से गीत संगीत होता था उसी प्रकार से पहेलिंयां भी पूछी जाती थीं अन्य विषयों के साथ ही गो पर भी पहेलिंयांप्राप्त होती है।24 गोप्रजनन के लिए अच्छा माहौल रहता था गौऐं सदा आनंद में रहें ऐसा प्रयास सभी का रहता था।25 माना जाता था कि गाय की रक्षा पूशा देवता26 करते हैं। विवाह में भी कन्यादान के समय गो का दान भी किया जाता था। राजा तो कई लक्ष गायों को कन्यादान में दिया करते थे 27 उनके आहार आदि का भी सदैव ही ध्यान रखा जाता था28 कृषि वैज्ञानिकों का मत है कि लगातार रासायनिक खाद के प्रयोग से भारत की हरित क्रांति में आगे बाधक होगा इसलिए वे जैविक खाद की उपयोगिता और महत्त्व को मानने लगे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. धर्मश्री पत्रिका, पृष्ठ 17–19
2. वही, पृष्ठ 18
3. व्ही, पृष्ठ 19
4. पांचजन्य, पृष्ठ 50 27 सितम्बर 2015
5. नताअर्वा::::::::::चरन्तियज्वनः।।, ऋ6.28.4, अथर्व 4.21.4
6. जय जयति गौ माता पृ38
7. वही पृ 38, पृ 38,
8. वही पृ47.51, पांचजन्य / पत्रिका, पृ47.51, पृ 32–33 सितम्बर 2015
9. वही, पृ 52, इंडिया टुडे / पत्रिका, वही पृ 52, पृ 17.19' 21 अक्टूबर 2015
10. सेवा साधना / पत्रिका, 18 अगस्त 2014 पृ 41
11. जय जयति गौ माता, पृष्ठ 37–41
12. गो::::::::::::::जयेम्।।, ऋ 10.42.10
13. प्रजया स ::::::::::गां न दित्सति।।, अथर्व 12–4–2
    कूटयास्य :::::::::दीयते स्वम्।।, अथर्व 12–4–3
14. पांचजन्य, पृ26–27, 27 सितम्बर 2015
15. वसोः :::::::::यज्ञपतिर्ह्वाषीत्।।, यजु 1.1.2
16. वायुरेना::::::::::भून्मेचिकित्सतु।।, अथर्व 6–141–1
17. पदज्ञा::::::::::::घृतेनास्मान्त्समुक्षत .., अथर्व 7–52–2
    उपत्वा ::::::::::प्राणेषु जागृहि।।, अथर्व 3.15.7
    अध प्र :::::::::धाम।।, ऋ1.121.6
18. उद्वत्स्वस्मा::::::::::::::नानु गच्छथ।।, ऋ 1.161.11
19. या ते अष्ट्रा::::::::::::::::::::सुम्नमीमहे।।, ऋ6.53.9
20. अग्नि::::::::::::::पाशांश्चृतामसि।।, अथर्व9.3.14
    वस्व्स्यदितिरस्यासि:::::वसुभिराचके।।, यजु 4.21
21. भूर्भुवः :::::::::::::: सूर्यो वेतु स्वाहा, यजु 3.5:से यजु 3।10
    सं सं ::::::::::::हविषा जुहोमि!!, ऋ 10–169 गो सूक्त
    अथर्व 2.26.3
22. नमस्ते::::::::::तेनमः।।, अथर्व 10–10–1
23. प्रजया स::::::::::गां न दित्सति।।, अथर्व 12–4–2
    कूटयास्य :::::::::दीयते स्वम्।।, अथर्व 12–4–3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24. को नु गौरू ::::::::कतमो नु सरू।।, अथर्व 8–9–25
एको गौरेक::::::::::::::::::कर्तुर्नाति रिच्यते।।, अथर्व 8–9–26
25. यो वेहतं :::::::::::बृहस्पति।।, अथर्व 12–4–38
26. आगावों:::::::::::::::::::दुहाना:।।, ऋ6–28–1
परिपूषा:::::::::::::::::::::::::::::नष्टमाजतु।।, ऋ6.54.10
27. बृहस्पतिनावसृष्टा::::::::::::सृजामसि।।, अथर्व14.2.53
से 58 तक
28. उत नो ::::::::::::::::::वीतये।।, ऋ 6.53.10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठ अध्याय

गोधन एवं गोसंरक्षण के लिए निर्मित संवैधानिक प्रावधानों की समीक्षा

भारतीय संविधान में गोसंरक्षण के लिए अनेक प्रावधान निर्मित किए गए हैं। इनका विस्तार से वर्णन इस अध्याय के अंतर्गत आता है। भारतवर्ष के अनेक राज्यों में इस कानून की क्या रूपरेखा है यह सब बताया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले और आज तक गोहत्या बंदी के लिए कई आंदोलन हुए हैं। कई चल रहे हैं। पशु हत्या के लिए हनीफ कुरैशी का मामला बहुत ही प्रसिद्ध है। इसी केस में न्यायलय ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया था।1

गोहत्या बंदी के लिए भारत के हर राज्य में कानून हैं। लेकिन उनमें बहुत सी खामिंयां हैं। 43वें आर्टिकल में दिशा निर्देश दिए हैं कि भारत के राज्यों को कृषि, प्राणीशास्त्र के आधुनिक वैज्ञानिक स्तर पर व्यवस्थापन के प्रयास करने चाहिए। उनकी नस्लों को संरक्षित करना चाहिए साथ ही गाय बछडों व अन्य दूध देने वाले और खेती में काम आने वाले जानवरों को कटाई से बचाना होगा। भारत सरकार ने 1960 में प्राणी हिंसा रोकने के लिए जो कानून मंजूर किया उसी कानून पर 9 मार्च 1962 को एक प्राणीदया बोर्ड की स्थापना की गई। यह बोर्ड भारत में पशुओं का रक्षण करने वाली गोशालाओं आदि को आर्थिक मदद करता है। आंध्र प्रदेश राज्य ने 1977 में गोहत्या प्रतिबंधक,पशु सुरक्षा कानून बनाया जिस के माध्यम से गाय, गाय के बछडे, भैंस के बछडों के कत्ल पर प्रतिबंध और अन्य कृषि उपयोगी प्राणी, दूध देने वाले प्राणियों की सुरक्षा का प्रावधान है। 1960 के पशु हिंसा और कूरता प्रतिबंधक कानून के सेक्शन 9 के अनुसार जो 1982 को संशोधित किया गया जिसमें जीवदया बोर्ड किस तरह कार्य करेगा इसके निर्देश दिए गए हैं। 1 – बोर्ड कानून की निरंतर समीक्षा करेगा और सरकार को समय समय पर कानून में क्या सुधार किया जाए इसकी सलाह भी देगा।

2. बोर्ड इन प्रवधानों में पशुओं को जब वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ले जाए जाते हैं, प्रसव के समय अथवा बंदी बनाने के समय अनावश्यक पीडा न मिले इसका प्रबंध करेगा।

3. पशुओं को ढोने वाले वहनों की डिजाइन की सलाह देगा, पशुओं के शेड, गोशालाओं में किस प्रकार की व्यवस्थाऐं होनी चाहिए इस सबका निर्धारण बोर्ड करेगा।

दिल्ली के न्यायाधीश श्री सी0के0 चतुर्वेदी जी ने पशु वध संबन्धी ऐतिहासिक निर्णय 1992 में दिया था उसका हिन्दी में मंतव्य संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।2 पशुओं का वध असंवैधानिक तथा अमानवीय हैं शाषन को इस प्रकार का कोई अधिकार नहीं है कि वह पशुओं की हत्या की अनुमति दे क्योंकि पर्यावरण की शुद्धता का दृष्टिकोंण सर्वोपरि है। ऐसे मूक प्राणी जिनकी हत्या की जाती है उनकी जीवन रक्षा भी मानव के लिए आवश्यक है क्योंकि वधगृहों की वजह से जिस प्रकार का प्रदूषण तथा गंदगी बढ़ती है वह तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए हानिकारक है। पशु इस धरती पर अतिक्रमण कारी नहीं हैं मानव के साथ ही उन्हें जीने का अधिकार है क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के लिए हितकारक तथा पोषक हैं। पशुओं का वध बड़ी संख्या में किया जा रहा है। हमारी कृषि का मूलाधार पशु ही हैं। कृषि मंत्रालय के एनिमल हसबैड्री3 तथा डेयरी विभाग को इसमें शामिल किया गया क्योंकि इन विभागों से ही चतुर्दिक जानकारी प्राप्त हो सकती है भारत सरकार का यही महकमा भारतवर्ष के विभिन्न भागों में वधगृह स्थापित करने की इजाजत देता है। राज्य शाशन के ये कर्तव्य हैं कि पशुधन तथा दुधारू पशुओं की रक्षा करे। भारतीय संविधान भी इस प्रकार की रक्षा चाहता है। संविधान के इन अधिनियमों में इतनी शक्ति होती है कि ये किसी भी पशु के म्यूनिसिपल वध को वधगृह के बाहर किए जाने से रोक सकता है।

भारत में मवेशियों के वध से संबन्धित कानूनों के विषय में राज्यों में अत्यंत अंतर प्राप्त होता है।4 कुछ राज्यों में उम्र एवं लिंग जैसे कारकों के आधार पर अधिनियम जारी किया जा सकता है। 5कुछ राज्यों में कुछ विषयों पर प्रतिबंध के साथ पशुओं के वध की अनुमति है। विशेष रूप से केरल में कोई प्रतिबंध नहीं है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 48में पशुवध पर प्रतिबंध लगाने के लिए गोहत्या के निशेध राज्य के नीतिनिर्देशक सि़द्धातों की सूचि में है कि यह राज्य आधुनिक और वैज्ञानिक तर्ज पर कृषि एवं पशुपालन को संगठित करने का प्रयास करेगा विशेष रूप से दुधारू पशुओं, मसौदापशु, गाय बछडों, बछियों के वध पर रोक लगाने के साथ ही नस्ल सुधार, पशुओं के संरक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए कदम उठाऐं जाऐंगे।6 गायों के नियमित अवैद्य परिवहन के द्धारा राज्यों की सीमाओं के बाहर वध के लिए वधगृह भेज दिया जाता है भले ही वध के लिए पशुओं की आवश्यकता न हो इसके पश्चात मांस राज्यों को भेज दिया जाता है। ऐसे कई वधगृह चेन्नई मुंबई जैसे सभी बडे शहरों में कार्य करते हैं।7 कानूनी रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में 3600 बूचड़खाने कार्यान्वित हैं किन्तु 30 से 40 हजार अवैद्य हैं। उन बूचडखानों को बंद करने के लिए अभी तक भारत में जितने भी प्रयास हुए है वे बहुत हद तक असफल रहे हैं भारत ने 2012 में 3,643,000 मीट्रिक टन गोमांस काउत्पादन किया पर था और 1.680 लाख मीट्रिक टन का निर्यात किया था। भारत घरेलू खपत में मांस उत्पादन में दुनियां में पांचवे से सातवें स्थान पर और निर्यात में एक नंबर पर है।

प्राचीन भारत के इतिहास में कानूनी नियमोंमें समरूपता वाले राज्य और केन्द्रशासित प्रदेश8

असम	आंध्रप्रदेश	बिहार	गोआ	हरियाणा
गुजरात	ओडिसा	दमनदीव	दिल्ली	मध्यप्रदेश
महाराष्ट्र	पश्चिम बंगाल	राजस्थान	तमिलनाडु	उत्तरप्रदेश
पुदुचेरी	पंजाब	हिमाचल प्रदेश	जम्बू कश्मीर	कर्नाटक

प्राचीन भारत में मवेशियों के प्रति धार्मिक विचारों पर चर्चा के लिए धर्म में मवेशियों को देखते हैं।9 भारतपर तुर्की, फारस अरब, अफगानिस्तानमें से विभिन्न इस्लामी शाशकों द्धारा हमले किए गए थे तब भारत में गोवध नहीं होता था। भारत में गोवध 1000 ईसवीं के समय से ही प्रारंभ हुआ। अरब देशों की इस्लामी परंपरा के अनुसार बकरी, भेड बलिदान के रूप में मारेजाते थे विशेष अवसरों पर ऊंट का बलिदान होता था वहां कोई भी गायको बलि के रूप में नहीं मारता था वहां के मध्य और पश्चिमी एशियाके इस्लामी शाषक गोमांस खाने के आदी नहीं थे। इस्लामी शाशकोंद्धारा भारत आने के बाद उन्होंने बकरीद के विशेष अवसर पर गायों की हत्या करनी प्रारंभ कर दी।

राज्य विधानमंडलों में पशु चिकित्सा प्रशिक्षण संरक्षण, सुधार के लिए और वध की रोकथाम के कानून बनाने की शक्ति होती है।10 संविधान की सातवी अनुसूचि की द स्टेट सूचि की प्रविष्टि 15 में कई राज्यों और संधशासित प्रदेशों में मवेशी संरक्षण कानून बनाए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निम्न लिखित राज्यों/ संघशाशित राज्य क्षेत्रों में गोवध संबन्धी कानून बनाए गए हैं

आंध्रप्रदेश	असम	ओडिसा	दमनदीव	दिल्ली
गोआ	मध्यप्रदेश	महाराष्ट्र	मणिपुर	मेघालय
पश्चिम बंगाल	राजस्थान	तमिलनाडु	उत्तरप्रदेश	गुजरात
पुदुचेरी	पंजाब	नागालेंड	हिमाचल प्रदेश	हरियाणा
बिहार	जम्बू कश्मीर	कर्नाटक		

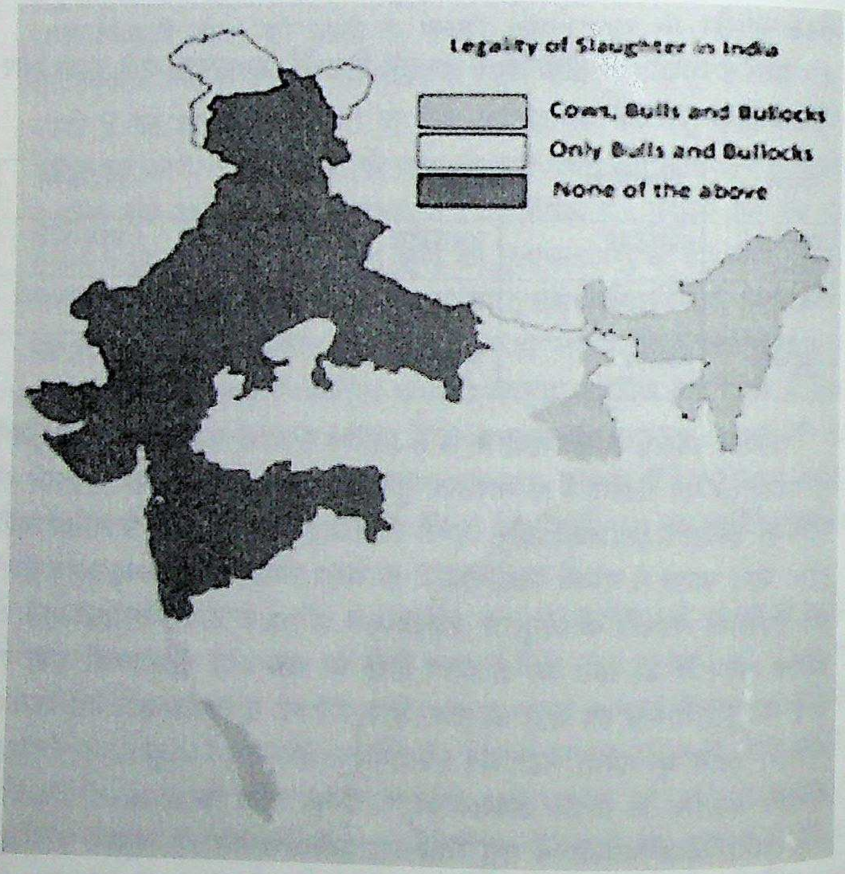

चित्र – 111

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अरूणांचल प्रदेश, केरल, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, लक्षद्वीप में गोवध के लिए कोई नियम नहीं है केरल मांस का बडा उपभोक्ता है वहां गोवध पर कोई पाबंदी नहीं है कोई नियम नहीं है। नतीजतन पशु नियमित रूप से वध के लिए तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश जैसे पडोसी राज्यो से तस्करी के लिए ले जाए जाते हैं।12 बिहार राज्य के सुप्रीमकोर्ट ने बेकार बैल,बछडों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक रूप से आर्थिक परिस्थितियों मेंऐसे पशु समाज पर बोझ हो सकते हैं इसलिए पशुवध पर एक पूर्ण प्रतिबंध नहीं है। पशुवध शासी राज्यों में कानूनी नियमों में एकरूपता की कमी है कठोरतम कानूनमें जहां दिल्ली गुजरात, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान में बैल एवं सभी आयु के गोवंश और अपनी संतान के वध पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा है। उत्तरप्रदेश में 15 वर्ष की आयु, स्थायी रूप से अक्षम बैल के वध का परमिट है। हालांकि 2001 में जारी किए गए अध्यादेश द्वारा गाय, बछडों की हत्या निषिद्ध है।13 ज्यादातर राज्यों में सभी उम्र की गाय का वध निषिद्ध है। असम, तमिलनाडु, पश्चिमबंगाल में क्रमशः 14,10,14 वर्ष की उम्र से अधिक की गायों के वध की अनुमति है। ज्यादातर राज्योंमें बछड़ा हो या बछिया का पूर्ण निषेध है। जहां बिहार और राजस्थान के अपवाद के साथ अन्य राज्यों के लिए बछड़े की उम्र को परिभाषित नहीं किया है मवेशी पर राष्ट्रीय आयोग के अनुसार बछड़े की परिभाषा कुछ कार्यकारी निर्देश के द्वारा अलग अलग है। दिल्ली, गोआ पुडुचेरी, उत्तरप्रदेश, पंजाब में राज्यों कानून का उल्लंघन हो रहा है। यहां संज्ञेय और गैर जमानती अपराध हो रहे हैं। कारावास की अधिकतम अवधि 6 वर्ष 5 महीने और न्यूनतम 1हजार और अधिकतम 10 हजार रूपये के जुर्माने को तय कर दिया गया है।

1. आंध्रप्रदेशः आंध्रप्रदेश के गोहत्या व पशुसंरक्षण अधिनियम 1977 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है।13 सभी उम्र की गायों का वध निषिद्ध है। कानून बछड़े की उम्र को परिभाषित नहीं करता बैल के वध के लिए वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति अधिनियम में दी है पशु किफायती नहीं है या प्रजनन या कृषि कार्यों के लिए ठीक प्रकार से तैयार होने की कोई संभावना नहीं है यह प्रमाणपत्र तभी प्रदान किया जाएगा। कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 6महीने के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।

2. असमः असम के गोहत्या व पशुसंरक्षण अधिनियम 1950 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। बैल, गाय, बैछडों, नर, मादा भैंस और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके बच्चों सहित सभी पशुओं के वध के लिए निसिद्ध है।14 सभी पशुओं का वध मवेशियों की उम्र 14 वर्ष से अधिक है या स्थाई रूप से चोट आदि के कारण, विकृति की वजह से, किसी असाध्य रोग की वजह से प्रजनन के लिए अक्षम हो गया है तो वधप्रमाण पत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 6महीने के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।

3. बिहारः बिहार के पशुसंरक्षण और सुधार अधिनियम 1955 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय और बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित है। बैल की उम्र 15 वर्ष से अधिक है या स्थाई रूप से चोट आदि के कारण, विकृति की वजह से, किसी असाध्य रोग की वजह से प्रजनन के लिए अक्षम हो गया है तो वध की अनुमति दी है15 कानून ने किसी भी उद्देश्य के लिए बिहार से गायों, बछडों, बैलों के निर्यात पर रोक लगाई है ऐसा पाए जाने पर दंडित किया जाएगाकानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 6 महीने के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।

4. दमन और दीवः गोआ, दमनदीव में गोवध रोकथाम अधिनियम 1978 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय किसी कष्ट या संक्रामक रोग से पीडित है, चिकित्सा अनुसंधान के लिए गाय की आवश्यकता है16 इसके अलावा गोवध पर पूर्णप्रतिबंध है इसमें बछड़ा या बछिया भी शामिल है। कानून बछड़े की उम्र को परिभाषित नहीं करता है। केन्द्रशासित प्रदेश में किसी भी रूप में गोमांस या मांस के उत्पादों पर पूर्ण प्रतिबंध है। कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 2 वर्ष के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह गैर जमानती अपराध माना जाता है।

5. दिल्लीः दिल्ली कृषि मवेशीसंरक्षण अधिनियम 1994 से राज्य में सभी कृषि पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। कानून सभी उम्र की गायों कों कृषि मवेशी के रूप में परिभाषित करता है।17 कानून ने किसी भी उद्देश्य के लिए दिल्ली से गायों, बछड़ों, बैलों के निर्यात को भी निषिद्ध किया गया है। प्रदेश द्धारा ऐसे पशु का वध नहीं किया जाएगा जो पूर्ण रूप से स्वस्थ है। स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी असाध्य रोग की वजह से प्रजनन के लिए अक्षम हो गया है ऐसे घोषणापत्र प्रस्तुत करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ही वध की अनुमति प्राप्त हो सकेगी। कानून का उल्लंघन करने पर5 वर्ष के कारावास और 10,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध माना जाता है। कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।

6. **गोआः** गोआ, दमनदीव में गोवध रोकथाम अधिनियम 1978 से और गोआ पशुसंरक्षण अधिनियम, 1995 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। 1978 के अधिनियम के तहत गाय किसी कष्ट या संक्रामक रोग से पीडित है, चिकित्सा अनुसंधान के लिए गाय की आवश्यकता है18 इसके अलावा गोवध पर पूर्णप्रतिबंध है इसमें बछड़ा या बछिया भी शामिल है। कानून बछडे की उम्र को परिभाषित नहींकरता है। गोआ में किसी भी रूप में गोमांस या मांस के उत्पादों पर पूर्ण प्रतिबंध है। कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 2 वर्ष के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह गैर जमानती अपराध माना जाता है। गोआ पशुसंरक्षण अधिनियम, 1995 बैल, बछडे, सभी उम्र की भैंसों के लिए भी लागू होता है। सभी पशु मसौदे के लिए किफायती बनने की संभावना नहीं है ऐसा प्रमाण नहीं दिया जाता है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं होगा अन्य राज्यों से आयतित मांस की बिक्री कानूनी है। कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 6 महीने के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।

7. **गुजरातः** गुजरात के पशुसंरक्षण अधिनियम 1955 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित है। भैंसों के वध पर कुछ शर्तों पर अनुमति है। कानून का उल्लंघन करने पर किसी को भी 6 महीने के कारावास या 1000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।19

8. **हरियाणाः** पंजाब के गोवध निशेध अधिनियम 1955 हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब के लिए लागू होता है।इसलिए हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, पंजाब के लिए कानून में एक ही प्रावधान है। हालांकि हरियाणां में अन्य दो राज्यों की तुलना में कानून का उल्लंघन करने पर काफी सख्त दंड का प्रावधान है। गाय बैल एवं सभी आयु के गोवंश और अपनी संतान के वध पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा है। वध और मांस बिक्री दोंनों के लिए पशुओं के निर्यात प्रतिबंधित है। कानून का उल्लंघन करने पर5 वर्ष तक के सश्रम कारावास और 5,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध माना जाता है। कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।20 हरियाणा में उच्चन्यायालय ने सरकार को निर्यात किए गए मवेशी की सूची रखने के आदेश दिए हैं पहले इस प्रकार का कोई नियम नहीं था।

9. हिमाचल प्रदेश: पंजाब के गोवध निशेध अधिनियम 1955 हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, पंजाब के लिए लागू होता है। इसलिए हिमाचल प्रदेश में पशुओं के वध के कानून उपयुक्त राज्यों के जैसे ही है। हिमाचलप्रदेश, पंजाब में हरियाणां की अपेक्षा कानून का उल्लंघन करने पर हल्का दंड है।21 है। गाय बैल एवं सभी आयु के गोवंश और अपनी संतान के वध पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा है। वध और मांस बिक्री दोंनों के लिए पशुओं के निर्यात पूरी तरह से बंद नहीं है। 18 अक्टूबर 2015 को उच्चन्यायालय ने सरकार को गोवंश के निर्यात के पूर्ण प्रतिबंध का आदेश दिया है। कानून का उल्लंघन करने पर2 वर्ष तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध माना जाता है। कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।

10. जम्बू और कश्मीर: रणबीर दंड संहिता 1932 को जम्बू और कश्मीर पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित है।ऐसे गाय बैल एवं बछडे सभी आयु के किसी भी गोजातीय पशु की स्वैच्छिक मृत्यु 10 वर्ष तक हो सकती है।22 जो यह करने के लिए उत्तरदायी होगा तो कारावास का दंड दिया जाएगा। अदालत द्धारा निर्धारित रूप से पशु वध करने वाले पर पशु की कीमत से पांच गुना अधिक कीमत का दंड दिया जा सकता है। बलि दिए गए पशुओं के मांस पर अधिकार करना भी एक अपराध है ऐसा करने पर भी 1 वर्ष तक के कारावास और 500 रूपये का जुर्माना दोनों से दंडित किया जा सकता है।

11. कर्नाटक: कर्नाटक गोहत्या की रोकथाम और मवेशी संरक्षण अधिनियम 1964 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछडे भैंस के बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। बैल, भैंसों के वध की उम्र के 12 वर्ष से अधिक होने पर है। स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या दूध देने के लिए अक्षम हो गया है बिक्री, खरीद या राज्य के बाहर वध के लिए परिवहन की अनुमति नहीं दी है। माना जाता है। कानून का उल्लंघन करने पर6 तहीनें तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध है।23

12. केरलः केरल राज्य में पशुओं के वध के विषय में कोई विधान नहीं है। गो हत्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है। अन्य राज्यों कें विपरीत केरल राज्य में मांस एक बड़े वर्ग द्धारा खाया जाता है। पूरे राज्य में साप्ताहिक मवेशी बाजार पर कारोबार हो रहा है। मांस की दुकाने है जहां मांस बेचा जाता है।पंचायत कानूनों में गैर नगरपालिका क्षेत्रों में उपयोगी पशु के वध कप प्रतिशेध किया जाता है। केरल पंचायत वध करने के स्थान और मांस स्टालों के नियम 1964 के अनुसार कोई प्रमाणपत्र गाय के बछडे, बैल के संबंध में नियम 8 के तहत प्रदान किया जाएगा वह भैंस 10वर्ष से अधिक है या बिना बछडे की है अयोग्य है स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी असाध्य रोग की वजह से प्रजनन के लिए अक्षम हो गया है 1976 में केरल राज्य सरकार के साथ साथ नगर निगम के क्षेत्रों में उपयोगी पशुओं के वध पर प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए गए है। ऐसे घोषणापत्र प्रस्तुत करने पर ही वध की अनुमति प्राप्त हो सकेगी।24

13. मध्यप्रदेशः मध्यप्रदेश कृषि मवेशीसंरक्षण अधिनियम 1994 से राज्य में सभी कृषि पशुओं के वध को प्रतिबंधित करता है। गाय, बैल और बछडे भैंस के बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। बैल, भैंसों के वध की उम्र के 15 वर्ष से अधिक होने पर है। स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या दूध देने के लिए अक्षम हो गया है बिक्री, खरीद या राज्य के बाहर वध के लिए परिवहन की अनुमति नहीं दी है। बलि दिए गए पशुओं के मांस पर अधिकार, बिक्री करना, उपयोग करना भी निसिद्ध है। कानून का उल्लंघन करने पर3 वर्ष तक के कारावास और 5,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। आम तौर पर कारावस कम से कम 6 माह 1,000 रूपये का जुर्माना होता है।[25]

14. महाराष्ट्रः महाराष्ट्र पशुसंरक्षण अधिनियम 1976 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछिया बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। भैंस के बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या दूध देने के लिए अक्षम हो गया है सभी पशु मसौदे के लिए किफायती बनने की संभावना नहीं है ऐसा प्रमाण दिया जाता है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। कानून का उल्लंघन करने पर6 तहीनें तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध है।कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।26

15. मणिपुरः मणिपुर में पशुवध गाय की हत्या के समान एक पाप का कृत्य है। हिन्दू धर्म के अनुसार 1939 की उद्घोषणा जो राजा द्धारा दरबार में की गई थी उसमें संकल्प लिया गया था कि यहां गोवध प्रतिबधित होगा। यह मणिंपुर कस्टम के खिलाफ भी है।मणिपुर के राजा द्धारा दरबार में कहा गया था कि इस प्रकार के कृत्य करने या इस प्रकार की बात करने की अनुमति नहीं है मेरे राज्य में प्रतिबद्ध हो यदि ऐसा राज्य में गोहत्या की गई तो मुकदमा चलाया जाएगा। हालांकि काफी हद तक बड़े ईसाई आबादी वाले पहाड़ी जिलों में मांस का सेवन किया जाता है। आईजोल जैसे शहरों में मांस खुले तौर पर बेचा जाता है।

16. मेधालयः मेधालय में मवेशियों के वध पर कोई प्रतिबंध नहीं है बीफ खुले तैार पर शहरों में बेचा जाता है।

17. नागालैण्डः नागालैण्ड में मवेशियों के वध पर कोई प्रतिबंध नहीं है बीफ खुले तैार पर शहरों में बेचा जाता है।[28]

18. ओडिसाः ओडिसा के गोवध निशेध अधिनियम 1960 से राज्य में सभी पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछिया बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। बैल की उम्र के 14 वर्ष से अधिक होने पर, स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या ड्राफ्ट के लिए स्थाई रूप से अयोग्य हो गया है सभी पशु मसौदे के लिए किफायती बनने की संभावना नहीं है ऐसा प्रमाण दिया जाता है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। कानून का उल्लंघन करने पर2वर्ष तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय माना जाता है।29

19. पुदुचेरीः पुदुचेरी के गोवध की रोकथाम अधिनियम 1968 से राज्य में सभी पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछिया बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबधित किया गया है। बैल की उम्र के 15 वर्ष से अधिक होने पर, स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या ड्राफ्ट के लिए स्थाई रूप से अयोग्य हो गया है सभी पशु मसौदे के लिए किफायती बनने की संभावना नहीं है ऐसा प्रमाण दिया जाता है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। बैलों की बिक्री, खरीद या राज्य के बाहर वध के लिए परिवहन की अनुमति नहीं दी है। कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का उल्लंघन करने पर2वर्ष तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है। यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध है।30

20. पंजाबः पंजाब के गोवध निशेध अधिनियम 1955 हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, पंजाब के लिए लागू होता है। इसलिए पंजाब में पशुओं के वध के कानून हिमाचलप्रदेश, हरियाणां राज्यों के जैसे ही है। पंजाब में हरियाणां की अपेक्षा कानून का उल्लंघन करने पर हल्का दंड है। है। गाय बैल एवं सभी आयु के गोवंश और अपनी संतान के वध पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा है। वध और मांस बिक्री दोंनों के लिए पशुओं के निर्यात पूरी तरह से बंद है। कानून का उल्लंघन करने पर 2 वर्ष तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध माना जाता है। कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।31

21. राजस्थानः राजस्थान गोजातीय पशु वध का प्रतिशेध और अस्थाई प्रवास या निर्यात का विनियमन अधिनियम 1995 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय बैल एवं बछडे सभी आयु के किसी भी गोजातीय पशु का वध पूरी तरह से प्रतिबधित है। वध और मांस उज्पादों के परिवहन के लिए पशुओं का निर्यात निसिद्ध है। कानून द्धारा वध के लिए ले जाए जानवरों को जब्त किए जाने पर जानवरों को किसी उपयुक्त व्यक्ति, गौशाला या स्वयंसेवकों द्धारा बनाए गए मान्यताप्राप्त स्वैच्छिक पशुकल्याण एजेंसी में सुरक्षित रखे जाऐं ऐसे स्थान बनायें जाने की आवश्यकता है। कानून का उल्लंघन करने पर 2 वर्ष तक के कारावास, 1 वर्ष के कठोर कारावास 10,000 रूपये का जुर्माना दोनों से दंडित किया जा सकता है। कानून आरोपी को सबूत के बोझ देता है।

22. तमिलनाडुः तमिलनाडु पशुसंरक्षण अधिनियम 1958 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। सभी जानवरों के फिट के लिए वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने पर वध किया जा सकता है। गाय, बैल और बछिया, बछडे, सभी उम्र के भैंसे के रूप में परिभाषित कानून में पशु शब्द का प्रयोग है उनकी उम्र के 10 वर्ष से अधिक होने पर, स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण से प्रजनन या ड्राफ्ट के लिए स्थाई रूप से अयोग्य हो गया है सभी पशु मसौदे के लिए किफायती बनने की संभावना नहीं है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। 30 अगस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
1976 को तमिलनाडु सरकार ने गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने का आदेश दिया नए कानून के तहत गायों के वध पर तमिलनाडु के सभी बूचड़खानों में प्रतिबंध लगा दिया गया है हालांकि प्रतिबंध लागू नहीं किया गया है। गोमांस की खपत प्रतिबंधित नहीं है और यह मांस की दुकानों पर बेचा जाता है लेकिन कुछ मांस व्यंजनों को छोडकर बडे रेस्तरां द्वारा उपयोग नहीं किया जा रहा है।

कानून का उल्लंघन करने पर 3 वर्ष तक के कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है यह दंड अधिक भी हो सकता है। यह अपराध संज्ञेय यह और गैरजमानती अपराध है।

23. उत्तर प्रदेशः उत्तर प्रदेश के गोवध की रोकथाम अधिनियम 1955 से राज्य में सभी पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। गाय, बैल और बछिया बछडे के वध को पूरी तरह से प्रतिबंधित है।[32] बैल की उम्र के 15 वर्ष से अधिक होने पर, स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण कृषि कार्य के लिए स्थाई रूप से अयोग्य हो गया है ऐसा प्रमाण दिया जाता है तो वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है।गाय, बैलों की वध के लिए राज्य के बाहर परिवहन की अनुमति नहीं है।गोमांस की बिक्री निसिद्ध है ऐसा बैल, बछडा जिसका वध अधिनियम के तहत निसिद्ध है उसका मांस के कंटेनर प्राप्त होने पर वह सील किया जाता है। उत्तरप्रदेश के आयात में इस प्रकार के मांस शामिल नहीं है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने बैल की उम्र के 15 वर्ष से अधिक होने पर या कौन बैल स्थाई रूप से अक्षम हो गए हैं उनकी अनुमति दी है सरकार ने गाय, बछडों की हत्या पर रोक लगाने के लिए 2001 में एक अध्यादेश जारी किया है।9

अधिनियम का उल्लंघन करने पर 2 वर्ष तक के कठोर कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह गैरजमानती अपराध है।

24. पश्चिम बंगालः पश्चिम बंगाल पशुवध अधिनियम 1950 से राज्य में पशुओं के वध को नियंत्रित करता है। सभी पशुओं के वध के लिए एक फिट के लिए वध प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। गाय, बैल और बछिया बछडे व सभी उम्र की भैंसों के लिए जानवर शब्द का प्रयोग किया गया है। जानवर की उम्र के 14 वर्ष तरह से प्रतिबधित से अधिक होने पर, स्थाई रूप से चोट के कारण, विकृति की वजह से, किसी अन्य कारण कृषि कार्य के लिए स्थाई रूप से अयोग्य हो गया है ऐसा प्रमाण जारी किया जाता है तो वध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रमाणपत्र प्राप्त करने की अनुमति दी है। अधिनियम का उल्लंघन करने पर2वर्ष तक के कठोर कारावास और 1,000 रूपये का जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है।यह संज्ञेय अपराध के रूप में व्यवहार किया जाता है। यह गैरजमानती अपराध है।33

जिस तरह भारत अपनी सांस्कृतिक विविधताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है ठीक उसी तरह भारत अपनी गोवंशीय आनुवांशिक विभिन्नताओं के लिए भी जाना जाता है। भारतवर्ष में गोवंश की तकरीबन 30 परिभाषित नस्लें पायी जाती है। गौनस्लों की प्रचुरता देश में उपलब्ध विभिन्न जलवायु क्षेत्रों एवं वातावरण के कारण ही है। यह नस्लें पहाड़ी क्षेत्रों से समुद्रतटीय क्षेत्रों तक एवं रेगिस्तान से लेकर तराई क्षेत्रों तक में वितरित है एवं अच्छा प्रदर्शन करती हैं। उक्त नस्लें काफी लम्बे समय के नैसर्गिक एवं मानवीय चयन–प्रक्रिया का ही परिणाम हैं। उक्त गौनस्लों की प्राचीन भारत में उपयोगिता इसी बात से सिद्व होती है कि प्राचीन भारतवर्ष में 'दूध की नदिया' बहने का वर्णन भी होता है।

संपूर्ण विश्व में 'ब्राह्मण' या 'जेबू' उपनामों से विख्यात भारतीय गोवंश का विदेशों में बहुतायत में यूरोपीय/अन्य गोवंश के साथ संकरण हेतु प्रयुक्त किया गया है। विश्व के कई विकसित एवं विकासशील देशों में भारतीय–गोवंश को 'गिर', 'गुजेरात' 'कांकरेज', 'नैल्लोर', 'इंडो–ब्राजील', 'ब्राह्मण' एवं 'जेबू' आदि उपनामों से भी जाना जाता है, आमतौर पर 'जेबू' शब्द भारतीय गोवंश के उठे कंधों वाले बैलों के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. "Mohd. Hanif Quareshi & Others vs The State Of Bihar". (Indiankanoon.org. Retrieved 2013-11-19. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)
2. "India Constitution of India" ((PDF). Govt of India official site.)
3. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I (8. The genesis of cow slaughter in India)". (Department ofAnimal Husbandry, Dairying & Fisheries (DAHD). Retrieved 2013-06-04. This article incorporates text from this source, which is in the public domain)
4. भारत में मवेशी वध, विकीपीडिया, मुक्तविश्वकोश से
5. "From the annals of history". The Hindu (India). 25 June 2010.
6. "SC upholds cow slaughter ban". (. The Times Of India. TNN.2005-10-27. Retrieved 2013-11-19.)
7. "SC upholds ban on cow slaughter". Religious Nationalism, Hindus and Muslims in India, (Peter van der Veer, pp. 87-88, ISBN 0-520-08256-7)
8. "From the annals of history". (The Hindu (India). 25 June 2010.) S.M. Jaffar (1936). The Mughal Empire from Babar toAurangzeb ((First ed.). Kissa Khani, Peshawar: S. Muhammad Sadiq Khan. pp. 23-24. Retrieved 13 November 2013.) "Full text of "The Mughal Empire From Babar To Aurangzeb"". (Archive.org. Retrieved 2013-11-19.)
9. S.M. Jaffar (1936). The Mughal Empire from Babar to Aurangzeb (First ed.). Kissa Khani, Peshawar: S. Muhammad Sadiq Khan. pp. 23-24. Retrieved 13 November 2013.) Deol, Harnik (16 December 2003). (Religion and Nationalism in India. London and New York: Routledge. p. 64. ISBN 978-0-415-20108-7. Retrieved 14 November 2013.)
10. "The States Subjects List". (Vakilbabu.com. Retrieved 2013-03-25.)
11. Map india (Page 137)
12. Knapp, Stephen (2009). (Crimes Against India: And the Need to Protect Its Ancient Vedic Tradition. iUniverse. p. 64.) "The Constitution of India - Part IV"(PDF). Ministry of Law and Justice. (p. 21. Retrieved 8 November 2013. This article incorporates text from this source, which is in the public domain)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I (9. Cow slaughter in British India)". DAHD.
(Retrieved 2013-11-19. Thisarticle incorporates text from this source, which is in the public domain.)
14. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I (10. Beginning of mass protests against cow-killings)".
(Dahd.nic.in. Retrieved 10 November 2013. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)
15. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I (11. Leaders of Swaraj movement - Assurance to the public)". DAHD.
(Retrieved 2013-11-08. Thisarticle incorporates text from this source, which is in the public domain.)
16. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I (13. Constituent Assembly Debate on Cow Protection)". DAHD.
(Retrieved 2013-11-19. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)
17. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter II (17. Legislation regarding ban on Cow slaughter)". DAHD.
(Retrieved 2013-06-04. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)
18. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter I Annex I (1)". DAHD.
(Retrieved 2013-11-08.)
19. "Gujarat Assembly passes Bill on cow slaughter". The Hindu.
(PTI.2011-09-27. Retrieved 2013-11-19.)
"7 years jail for cow slaughter in Gujarat?"
(Zee News. 27 September 2011. Retrieved 2013-11-19.)
20. "TODAY'S EDITORIALS - Beef Stakes". The Times of India.
(2003-05-08. Retrieved 19-Nov-2013.)
21. Knapp, Stephen (2009). Crimes Against India: And the Need to Protect Its Ancient Vedic Tradition. (Knapp, Stephen (2009). iUniverse. p. 64.)
22. Jl Mehta. Advanced Study in the History of Medieval India.
(Sterling Publishers Pvt. Ltd. p. 495. Retrieved 13 November 2013.)
23. "Report of the National Commission on Cattle - Chapter II (10 A. Cow Protection in pre-Independence India)". DAHD.
(Retrieved 2013-11-08. Thisarticle incorporates text from this source, which is in the public domain.)
24. "India May Discard Old Taboo by Killing Cows".
(Los Angeles Times. 1974-04-19. Retrieved 2013-11-19)
French, Patrick (8 September 2011). "
("Part I". Liberty or Death: India's Journey to Independence and Division. Penguin UK. Retrieved 13 November 2013.)
25. "MP goes tough on cow slaughter".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(1. The Times of India. Jan 4, 2012. Retrieved 19 September 2012.)
"TTD to popularise use of `Panchagavy
(The Hindu, 10 December 2005, retrieved 13 September 2011)

26. The Making of an Indian Metropolis, Colonial governance and public culture in Bombay,
(1890è1920, Prashant Kidambi, p. 176, ISBN 978-0-7546-5612-8.)
"Gau man gau".
(The Indian Express. 2003-01-23. Retrieved 2013-11-19.)

27. "Beefed up law". The Telegraph.com.
(2012-01-18. Retrieved 2013-11-08.)

28. "Can Restaurants in India Legally Serve Beef?". The Wall Street Journal.
(2012-05-21. Retrieved 2013-11-19.)

29. "Gau man gau".
(The Indian Express. 2003-01-23. Retrieved 2013-11-19.)
Jha, Dwijendra Narayn
(The Myth of the Holy Cow. LondonèNew York: Verso 2002)

30. "TODAY'S EDITORIALS - Beef Stakes".
(The Times of India. 2003-05-08. Retrieved 2013-11-19.)
"India May Discard Old Taboo by Killing Cows".
(Los Angeles Times. 1974-04-19. Retrieved 2013-11-19.)

31. Surinder Singh Johar (1975). Guru Tegh Bahadur: A Biography.
(Abhinav Publications. p. 154. Retrieved 13 November 2013.)
A Punjabi saying of those times was "
("khada peeta laahey daa, te rehnda Ahmad Shahey daa" which translates to, "what we eat and drink is our property; the rest belongs to Ahmad Shah.")
Yogendra Bali (2010). Sri Satguru Ram Singh Ji and Freedom Movement of India.
(Har Anand Publications. p. 74. Retrieved 2015-10-08.)
L. Griffin (2004). Ranjit Singh and the Sikh Barrier Between Our Growing Empire and Central Asian
(Asian Educational Services. p. 60. Retrieved 2015-10-08.)
A concise history of modern India,
(Barbara Daly Metclaff and Thomas R Metclaff, p. 83.)

32. Retrieved 2013-11-08. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.
(Retrieved 2013-11-08. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)
"Report of the National Commission on Cattle, Annex II (8)". Government of India, Ministry of Agriculture.
(Retrieved 27 November 2014. This article incorporates text from this source, which is in the public domain.)

33. "India May Discard Old Taboo by Killing Cows".

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(Los Angeles Times. 1974-04-19. Retrieved 2013-11-19.)
"TODAY'S EDITORIALS - Beef Stakes".
(The Times of India. 2003-05-08. Retrieved 2013-11-19.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम अध्याय

भारतीय आहार-व्यवस्था में गोधन के योगदान की समीक्षा

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मानव शरीर के ऊतकों की हानि को रोकने के लिए मुख्य घटक के रूप में विटामिन डी के का उपयोग करता है। आस्टियोपोरेसिस, सोरायसिस जैसी त्वचा की गंभीर समस्याओं के लिए जीर्ण कैल्सियम, चयापचय संबन्धी विकार, अपर्याप्त सौर विकिरण कारण होते हैं क्योंकि विटामिन डी अग्न्याशय में इन्सुलिन के स्त्राव को नियंत्रित करता है इससे मधुमेह टाइप 2 की घटनाओं को नियंत्रित करता है वेदों में इस प्रकार का वर्णन प्राप्त होता है।2

1. गौदुग्ध से वर्चस्व वृद्धिः गो दुग्धसब में अपना हित देखने की दृष्टि, ओज, अन्याय के विरूद्ध आक्रोश प्रदान करने वाला होता है।गोसेवा द्वारा निपुणता के साथ कार्य कौशल, शुद्ध सम्पन्नता के साथ स्वस्थ शरीर भी प्रदान करती है।

सूर्य की किरणों, गाय के दूध में पाया जाने वाला विटामिन डी ही सबसे प्रभावी है विटामिन डी की कमी की वजह से होने वाली बीमारियां 3-

आस्टियोपोरेसिस कैल्सियम बिगड़ने के कारण

2. उन कोशिकाओं के विकाश के प्रभावित होने से जिनसे कैंसर होता है।

3. बच्चों में रिकेट्स नामक हड्डी का रोग

4. इन्सुलिन उत्पादन बिगड़ने की वजह से टाइप 2 की डायबिटीज।

5. एक प्रकार का पागलपन

6. सोरायसिस के प्रकार के सात त्वचा की व्याधियां

2. गाय और हृदय का स्वास्थ्य की दृष्टि से मेलः

1. मनुष्य के लिए सूर्य की किरणें प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं विटामिन डी का मुख्य स्त्रोत हैं

2. शरीर के लिए अनिवार्य ई एफ ए; ओमेगा 3, सी,एल,ए,9, संयुग्मिक लिनोलिक एसिड प्रकृति की सौर क्रियाओं और गाय के जैविक कार्यों द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गोदुग्ध में बनते हैं जिनसे हमारे शरीर में कई प्रकार के रोग जैसे मोटापा, डायबिटीज, कैंसर, गठिया, हृदय के धमनी रोग ;सी,ए,डीआदि नहीं होते हैं तथा हमारे शरीर के स्वास्थ्य, सुरक्षा प्रदान करने के पारंपरिक तरीके के रूप में होने के साथ ही अब नवीन चिकित्सा शोध भी इस बात की पुष्टि करते हैं।

3. आधुनिक विज्ञान के अनुसार एच,डी,एल पक्षक ओमेगा 3 जो रक्त ले जाने वाली धमनियों की भीतरी दीवारों को और रक्त के घटक के रूप में उन्हें संरक्षित करता है।

4. शारीरिक और मानसिक गतिविधियों में हमारे शरीर में प्रतिदिन होने वाली वसा

की खपत से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

चत्वारि ::::::::::::::::::::आ विवेश।।4

4 Horns, 2 right pulmonary arteries to right lung, 2 left pulmonary to left lung, 7 Hands, 3 Right and 4 left pulmonary veins from lungs

This is an anatomical description of the physiology of human heart)

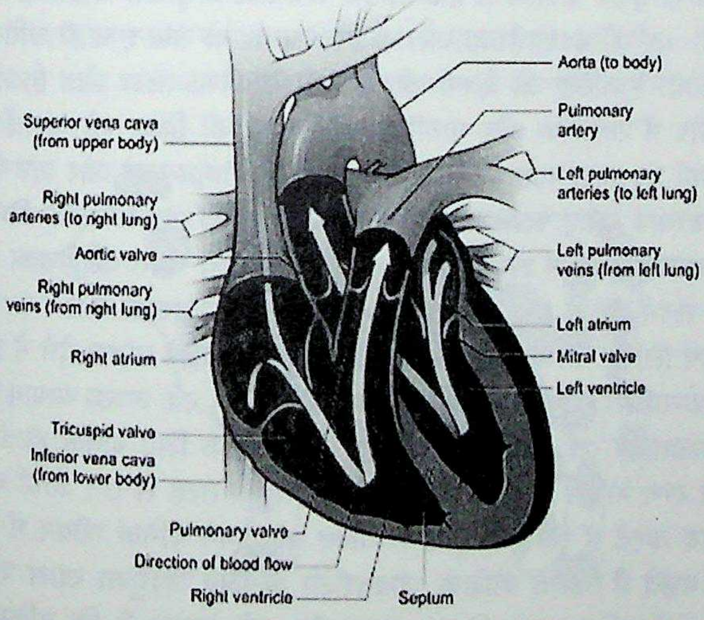

चित्र – 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके चार सींग, दो सिर, तीन पैर, सात हाथ, यह तीन स्थानों पर बंधा हुआ है।यह एक बैल के समान ध्वनि करता है ;मनुष्य के हृदय की तुलना इस श्लोक से की गई है तीन स्थानों से बंधा होने से तात्पर्य है कि मानव हृदय में तीन अवशोषक होते है जो मनुष्य के जीवन को समर्थन प्रदान करते हैं।

चार सींग–दो शिराऐं दाहिने फेफडे में रक्त छोडने के लिए, दो शिराऐं बाऐं फेफडे में रक्त छोडने के लिए,

सात हाथ– तीन शिराऐं दाहिनें, चार शिराऐं बाऐं जो फेफडों से नसों में रक्त छोडती हैं।

त्रिधा हितं ::::::::::::::::स्वधयानिष्टतक्षुः।। 5

एता अर्षन्ति ::::::::::::::::आसाम।।6

मानव ह्रदय से मानव शरीर में रोगों और शरीर को अस्वस्थ करने वाली ताकतों से लड़ने तथा शरीर को स्वस्थ रखने के लिए से हजारों गर्म रक्त धाराओं के समुद्र उत्पन्न करता है जो अपने साथ कोलेस्ट्राल के कण जो सुनहरे रंग के बांस के पेड़ के आकार के होते है प्रयोगशाला में ;माइक्रोस्कोप से देखने पर सुनहरे रंग के कोलेस्ट्राल के कण देखे जा सकते हैं।7

मानव ह्रदय प्रणाली में एक समान रूप और प्राकृतिक तरीके से रक्त की धाराओं का जो प्रवाह है वह जल के हल्के बहाव के समान, न ही अधिक मोटा, भारी होता है बल्कि जो हिरण की चंचलता के जैसा तरल होता है जो मनुष्य के शरीर में शारीरिक और मानसिक शुद्धीकरण की क्रिया को करता है।8

यहां पर लाल रक्त कणिकाओं के प्रवाह में तीव्रता लाने और वांछनीय स्तर पर रक्तचाप बनाए रखने के लिए रक्त धमनियों के अपने पथ के किनारों पर शीघ्र सफाई करने में लगने वाले घटक हैं।यह उच्च घनत्व लिपिडका बहुत ही स्पष्ट संदर्भ है जो धमनियों को स्वच्छ और निर्बाध रखता है।9

इन लिपिड का मुख्य कार्य शारीरिक गतिविधियों में ताकत देने में ईंधन का कार्य करता है जो मूड को स्वस्थ, प्रसन्न रखता है। एक अच्छा व्ययाम उस मेद को जलाता है जो मानसिक, शारीरिक फिटनेस के लिए बाधक होता है।10

ये कण भोजन के साथ संयोजित होकर पूरी तरह से उन कार्यो को करने में मदद करते हैं जो एक गृहस्थ व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में नियमित करने पड़ते हैं।उचित बौद्धिक जीवनशैली के लिए उपयुक्त खाद्य पदार्थों के साथ संयोजन बनाना अति आवश्यक है। यही कारण है कि बुद्धिमान जन अपने गृहों में नित्यही पंचगव्य का उपयोग करके उत्तम परिणाम प्राप्त करते थे, अपने जीवन को स्वस्थ रखते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पशु चिकित्सा विज्ञान के अनुसार हमें ज्ञात हुआ है कि गाय के पाचन तंत्र में तीन अलग भाग होते है हमनें उसकी व्याख्या लौकिक एवं वैदिक दोनों प्रकार से की है ऋग्वेद के निम्न मंत्र में भी उसके पेट की व्याख्या की गई है

दूध के लिए उसे खिलाने के रूपान्तरण के लिए पाचन तंत्र के अलावा भोजन को तीन अतिरिक्त भागों में बंटना पड़ता है पहला भाग सौर विकिरण के लिए है जिसके स्वामी सूर्य हैं दूसरा भाग इन्द्र के अधीन है तीसरा उसके स्वयं के जैविक कार्यों के लिए इन तीनों के समन्वित रूप से किए गए कार्यों के द्वारा ही सभी प्रकार के विटामिन या पोषक पदार्थों का निर्माण होता है जो उसके दूध, दही के द्वारा हमें प्राप्त होते हैं

गाय के पेट का अन्य प्राणियों से प्रथक होना ही इस प्रकार से मानव स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है गाय के पेट का रहस्य गाय के चार पेट होते हैं एवं खाने का अलग तरीका इसका पाचनतंत्र ही आज्ञा देता है कि कड़क या कैसा भी भोजन करने के लिए गाय किस प्रकार से भोजन का पाचन करती है।

1. गाय भोजन को निगलती है।
2. भोजन रूमेण व जालिका में चला जाता है।
3. गाय भोजन को रूमेण व जालिका में एकत्र कर लेती है।
4. जब गाय थक कर बैठती है तब वह भोजन को पुनः जुगाली के द्वारा खाती है।

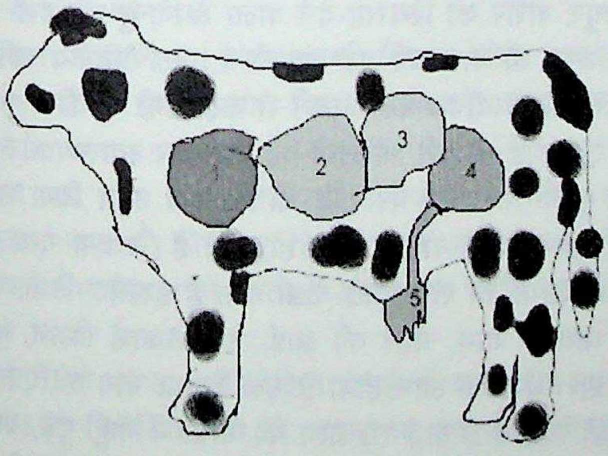

चित्र –3

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
5. अब यह भोजन पूरी तरह से चबा कर पुनः निगला जायेगा।

6. जुगाली द्वारा भोजन सीधे तृतीय अमाशय और जठरआंत में जायेगा।

7. तृतीय अमाशय और जंठरआंत में भोजन पूरी तरह से पच जाता है।

8. पचे भोजन से कुछ रक्त में चला जाता है यह रक्त में गया हुआ भाग उदर में जाता है वही थन में दूध के रूप में हमें प्राप्त होता है।11

गायों के आशीर्वाद स्वरूप दुग्ध में होने वाले कणों से समाज को धन, यश, स्वस्थ्य समृद्धि प्राप्त होती है। यह केवल विद्धान, बुद्धिमान मनुष्य ही जानते हैं। लाभ–हानि हैं इस सब का विस्तृत वर्णन प्रमाणों के आधार पर किया गया है। गव्य पदार्थों के गुंण और रोगनाश के लिए उनका उपयोग–

4. गाय का घीः गाय का घी कुरूपता, पाप, राक्षस बाधा, नजर आदि नाशक होता है। जब श्रीराम जी को नजर लग जाती थी तो माता उनके शरीर के वजन के बराबर घी को तौलकर उसका दान किया करती थीं।यह देवताओं का अन्न और प्राणी मात्र का जीवन है।12 दोनो स्थानों पर यह कथन ऋषिका उर्वशी का ही है इसलिए देवयज्ञ में गोघृत काही विधान है। इसी से कार्य सिद्ध हाते हैं। गीता मे घी में पके स्निग्ध आहार को तमोगुंण हरने वाला, सात्विक कहा गया है13। घी विष का भी नाश करता है। सर्प दंश वालों को गाय का घी पिलाने का विधान है जो विश को दूर करता है।14 यह बुद्धि, कान्ति, स्मरण शक्तिदायक, बलकारक, मेधाजनक, पुष्टिकारक, कफ नाशक, श्रम निवारक, पित्त नाशक, अग्निप्रदीपक, ह्रदय के लिए हितकारी, पचने में मधुर, शरीर को स्थिरता देने वाला है किन्तु यह देशी गाय का शुद्ध घी ही हो अन्य घी दोश को बढ़ा सकते हैं। 15 तैत्तिरीय संहिंता में इसका वर्णन है इस घी के दीपक को जलाने से कई रोगों के कीटाणु स्वतः ही नष्ट होजाते हैं एवं कोई भी बुरी शक्तियों को नष्ट कर स्वारस्थ्यवर्धक तरंगें उत्पन्न करता है। मृतक के शरीर पर यदि घी का लेप लगा दिया जाए तो उसके शरीर से निकलने वाले रोगाणु नष्ट हो जाते हैं। श्यामा गाय के घृत प्रयोग से अनेक व्यक्तियों को रोग मुक्त देखा गया हैं इससे गठिया, कुष्ठरोग, जले तथा कटे घाव के दाग, चेहरे की झाईं, नेत्र विकार, जलन, मुह का फटना आदि पर आश्चर्यजनक लाभ होता है।एक श्यामा गाय को एक माह तक हरे चारे के अतिरिक्त ढ़ाईं ढ़ाईं सौ ग्राम की मात्रा में गेंहू, गुड़, कच्चा नारियल, कच्ची मूगफली, आमा हल्दी, चना, सफेद दूब, बेल की पत्ती, महुआ, सेंधा नमक, सफेद नमक तथा 50,50 ग्राम अजवाइन, मेंथी प्रतिदिन के हिसाब से एक माह तक खिलाया गया गर्मी का समय था, अतः गाय को अत्यंत स्वच्छ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातावरण में रखकर दोनों समय नहलाया धुलाया भी जाता था प्रातः सायं थोड़ा सा गुड़ खिलाकर तीसरे दिन से निकाले गए उक्त गो के दूध से ग्रामीण पद्धति के अनुसार गोहरी की आंच पर मिट्टी के पात्र में पकाए गए दूध से दही तैयार कर उसका घी निकाला गया उसके लाभ निम्न हुए कुछ उदाहरण –

इस घी की मालिस से एक सप्ताह में ही गठिया गायब हो गया।

एक सज्जन की अवाज ऑपरेशन के दौरान बहुत समय तक नाक में नली पड़ने के कारण चली गई थी उनके गले में तीन चार दिन इसी घी की मालिस करने पर उनकी आवाज खुलने लगी, आठ दस दिन में ही वे पहले के ही समान बोलने लगे।

प्रिंटिंग प्रेस में दबकर एक युवक की हथेली तथा उंगलियां बुरी तरह से फट गई थी तुरंत आपरेशन के बाद भी ढ़ाइ माह में जब हाथ ठीक हुआ तो चमड़े के तनाव और आपरेशन के दाग के कारण उसकी अंगुलियां खुल ही नहीं पातीं थी तथा हथेली भी बदसूरत लगती थी। घी की मालिश से महीने भर में शेष चारों अंगुलियां और हथेली पूर्ववत् हो गई, आपरेशन का निशान ऐक रेख भर ही शेष रहा।

एक लड़की के गले में सफेद दाग हो गए थे। घी की मालिश से महीना बीतते बीतते लड़की सफेद दाग के स्थान पर लाली आने लगी, दूसरे माह में त्वचा एक रंग की हो गई।उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि कभी कहीं कोई दाग भी था। 16

इस प्रकार जोड़ों में दर्द, नेत्र संबन्धी विकार, चोट, सूजन, फोड़े फुन्सी आदि अनेक रोगों पर इसके प्रयोग किए गए जिसमें आश्चर्य जनक सफलता प्राप्त हुई है।

5. गाय का दूधः यदि किसी भी इलाके में प्राकृतिक आपदा से सौ फीसदी फसल नष्ट भी हो जाए तो भी गाय अपने उत्पादन को 40–65 प्रतिशत बचाने मे कामयाब हो जाती है और मानव जाति का मां के ही समान भरण पोषण करती है17

वयस्कों में तो स्पष्ट नहीं लेकिन बच्चों में जब तक ब्लड ब्रेन बैरियर सम्पूर्ण प्रकार से विकसित नहीं हो जाता तब तक भैंस के दूध में विद्यमान बाइल्स साल्टस मस्तिष्क में जाम होकर विकाश में बाधा डालते हैं। गाय के दूध में बाइल्स साल्टस नहीं होते हैं।

शरीर के प्रतिरक्षण तंत्र में रक्त के निर्माण और मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिए आवश्यक विटामिन बी12 केवल प्राणिस्त्रोत से प्राप्त होता है जो गाय के दूध में उपलब्ध होता है।

गाय के ताजे दूध के सेवन से कभी पथरी नहीं बनती क्योंकि पथरी के लिए उत्तरदाइ यूरिक एसिड के निर्माण में मूल केन्द्रक की भूमिका निभाने वाले प्यूरीन्स नामक क्षारीय लवण केवल दूध में बनते हैं। होम्योपैथी में स्ट्रोन्सिया नामक दवाई बहुत पुरानी चोट के इलाज के लिए दी जाती है जो गाय का दूध में काफी मात्रा में पाई जाती है। शरीर के लिए आवश्यक अमीनों अम्ल में से ट्रिप्टोफैन गाय का दूध में सर्वाधिक मात्रा में पाया जाता है। यह फील गुड नाम से विख्यात सैरिटोनिन नाम के हारमोन्स का ही प्रौरूप है जिसकी कमी आदमी का मूड उखाड़ देती है गाय के दूध का सेवन करने वाले व्यक्तियों में सैरिटोनिन खूब बनता है इसलिए गोदुग्ध के सेवन करने वाले खुशमिजाज होते हैं।

आठ अमीनों अम्ल से बना एन्जियोटैन्सिन–2 नामक ओकाप्टेटाइड मानसिक तनाव को बढ़ाने वाले रसायनों में सबसे प्रमुख माना जाता है शरीर के ऊतकों में उसका निर्माण एसीई की सहायता से होता है। गाय का दूध में पाए जाने वाले कुछ छोटे छोटे पैप्साइड इसकी क्रिया विधी पर ही रोक लगा देते है।

गााय के एक ग्राम घी से हवन करने पर एक टन आक्सीजन प्राप्त होता है जो दूषित वायु को शुद्ध करता है।

गाय अति संवेदनशील होती है गाय का दूध मनुष्य में संवेदनशीलता को बढ़ाता है। यह चैतन्यशक्तिसम्पन्न होने के साथ बुद्धि में प्रखरता लाता है।

पतला होने के कारण यह शीघ्र पच जाता है, चुस्ती फुर्ती बढ़ाता है।

पेट की बीमारियों को जड़ से समाप्त करता है, आंतों के कीड़ों को समाप्त करता है।

स्मरण शक्ति को बढ़ाकर मस्तिष्क व बुद्धि को उन्नत करता है। दिमागी काम करने वाले, स्कूल जाने वाले बच्चों की मेधा शक्ति को बढाता है।

गाय के दूध से ही ताकत आती है यह भारतीय सेना ने सिद्ध किया है क्योंकि देश की सभी 41 मिलिट्री डेयरी फार्म में एक भी भैंस नहीं है वे सभी जवान, जनरल, उनके पालतू पशु भी गोदुग्ध का ही सेवन करते हैं।18

गाय का दूध स्वादिष्ट रूचिकर, स्निग्ध, बलकारक, अतिपथ्य, कान्तिप्रद, बुद्धि, प्रज्ञा,मेधा, कफ, तुष्टि, पुष्टि, वीर्य,शुक्र को बढ़ाने वाला, आयु को दृढ करने वाला, हृद्य, रसायन, गुरू, पुरूशत्व को बढ़ाने वाला, नमकीन होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली गाय का दूध विशेषकर वात का नाश करता है। लाल और चितकबरी गाय का दूध विशेषकर पित्त का नाश करता है। पीली गाय का दूध वात पित्त का नाश करता है श्वेत गाय का दूध कफकारक होता है। मरे हुए बछड़े वाली गाय तथा तुरंत बछडेवाली गाय का दूध त्रिदोशकारक होता है बाखरी गाय का दूध गाढा, बलवर्धक, तृप्तिकारक, त्रिदोशनाशक होता है। खली भुना दाना खाने वाली गाय का दूध कफकारक, बिनौला, घास, पाला, पत्ती आदि खाने वाली गाय का दूध सब रोगों के लिए हितकर होता है। जवान गौ का दूध मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक होता है। बूढ़ी गौ का दूध दुर्बल, गर्भवती गौ का तीन माह बाद का दूध पित्तकारक, खराश लिए हुए मधुर और शोषण करने वाला होता है। पहली बार ब्यायी हुई गाय का दूध निःसार और गुणहीन होता है। नई ब्यायी गाय का दूध रूखा, दाहकारक, और रक्तदोशकारक पित्तकारक होता है तथा अधिक दिन बाद का दूध मधुर होता है। तुरंत का दुहा दूध वृष्य, धातुवर्धक, निद्राकारक, कान्तिप्रद, पथ्य, स्वादिष्ट, अग्निवर्धक, अमृत सदृश सर्वरोगनाशक होता है। गाय की रीढ़ में सूर्यकेतु नाड़ी होती है यह जागृत होने पर स्वर्ण रंग का पदार्थ छोड़ती है इसी कारण गोदुग्ध व घी का रंग स्वर्ण सा होता है यही पदार्थ रोग व विष नाशक होता है यह तत्व मां के दूध के अतिरिक्त दुनियां के किसी पदार्थ में नहीं प्राप्त होता है। गाय के दूध में कई इस प्रकार के रोगों से लड़ने की शक्ति है जो आज के मेडिकल साइंस के पास भी नहीं है जैसे नशे से मुक्ति, टी बी का समाप्त होना, मलेरिया की सदैव के लिए समाप्ति, कोलेस्ट्राल बढ़ने से रोकना, कैंसर के कभी न होना हुए रोग को समाप्त करना, संगृहणी का निदान, यौवन रक्षा एवं इस प्रकार के कई अद्‌भुत् प्रयोग है जो आज भी मेडिकल साइंस के पास नहीं है। दुग्ध को बीमारियां रोकने के लिए एक प्रकार का रोग प्रतिरोधक भी कह सकते हैं।19

6. दूध की मलाईः शीतल, स्निग्ध, वृश्य, बलकारक, शुक्रप्रद, तृप्तिकर, रूचिकर, कफवर्धक, धातुवर्धक है। पित्त, वायु, रक्तपित्त, दाह एवं रक्तरोगों का नाश करती है।

7. गाय का दहीः स्वादिष्ट, बलवर्धक, रूचिकर, तेजस्वी, पौष्टिक, मीठा, ठंडा और वातजन्य बवाशीर का नाश करने वाला है। दही मन्द, स्वादिष्ट, स्वाद्वम्बल स्वादिष्ट खट्टा, अतिखट्टा के भेद से पांच प्रकार का होता है। मन्द दही भारी, स्वादिष्ट दूध के समान मूत्रकारक, त्रिदोष नाशक होता है। स्वादिष्ट दही भी भारी, मीठा, वृश्य, पाककाल में मधुर, मेद,वायु, कफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का नाश करने वाला, रक्त शुद्ध करने वाला और पित्त का शमन करने वाला होता है स्वाद्वम्बल दही भारी, तुर्श, अन्य गुंण स्वादिष्ट दही के समान ही हैं। अतिखट्टा दही रक्त, पित्त, कफ बढ़ाने वाला गले में दाह करने वाला रोंगटे खड़ेकरने वाला दांतों के लिए हानिकारक और दीपन है। दही का निचोड़ा हुआ पानी बल बढ़ाने वाला, गरम, कफ की बवाशीर, वायु, विश्टम्भ, पांडुरोग, शूल, श्वासरोग का नाश करने वाला है। दूसरे गुंण दूध जैसे ही हैं। 20

8. गाय का मक्खनः गाय का मक्खन स्वादिष्ट रूचिकर, स्निग्ध, बलकारक, अतिपथ्य, कान्तिप्रद, बुद्धि, प्रज्ञा, मेधा, कफ, तुष्टि, पुष्टि, वीर्य,शुक्र को बढ़ाने वाला बालक, वृद्ध के लिए ठोस, आंखों की ज्योति बढाने वाला, सर्वाग्शूल, तन्द्रा का नाश करता है।

ठंडा मक्खन :– उपरयुक्त गुणों के अतिरिक्त दो तीन दिनों का हो तो खारा, खट्टा, तीखा, वान्ति, अर्श, कोढ, नेत्ररोग, दूसरे सब रोगों का नाश करने वाला होता है।

9. गाय की छाछः सधारण छाछ स्वादिष्ट, ग्राही, खट्टी, तुर्श, लघु, गरम, पाक के समय मधुर, तीखी, रूखी, अवृश्य, बलप्रद, तृप्तिकर हृदय को विकसित करने वाली, शरीर को कृश बनाने वाली होती है। यह प्रमेह, मेद, अर्श, पांडु, संग्रहणी, मलस्तंभ, अतिसार, प्लीहा, भगन्दर, गुल्म, सूजन, कफ, कोढ़, कृमि, पसीना, घी का अजीर्ण, वायु, त्रिदोष, विषम ज्वर, शूल का नाश करती है। कफ का नाश करती है। पित्त का नाश करती है। वात का नाश करती है। यह त्रिदोश निवारक, पथ्यों में उत्तम तथा बवासीर और अतिसार रोगों में हितकारी है। भोजन के बाद तक्र का सेवन अमृत के समान लाभकारी है।

10. गोबरः सभी प्रकार के चर्मरोगो के लिए गोबर एक श्रेष्ठ औषधी होती है। यह यह सर्प, बिच्छू, मधुमक्खी आदि किसी भी विष को दूर करने में सक्षम है। जले हुए स्थान पर गोबर का रस लगाना लाभकारी होता है पर यह स्वस्थ गाय का ही होना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार विभिन्न रंग वाली गो के पंचगव्य में विभिन्न गुंण उपस्थित होते हैं जो गायें जंगल में चरने जाती हैं, विभिन्न प्रकार की वनस्पति खाती है उनका पंचगव्य अधिक उपयोगी होता है।21 अब तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि बड़े गलकम्बल ऊंचें ककुद वाली भारतीय नस्ल की गाय में सब रोगों को दूर करने की शक्ति होती है।

सभी प्रकार के विषों को दूर करने के लिए स्वस्थ गाय का गोबर 250 ग्राम, पानी 500 ग्राम, हल्दी 20 ग्राम मिलाकर पिलाने से उल्टी होगी विष का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रभाव कम हो जाएगा, शरीर पर भी गोबर का लेप लगाना है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोबर का लेप दीवारों, आंगन, चूल्हे पर करनें सें सभी प्रकार के कीटाणु व रेडियों धर्मिता नहीं फैलती। भोपाल गैस काण्ड में भी इसका प्रभाव देखने को मिला है।

अब तो गोबर के भूकंपरोधी, अग्निरोधी, वातानुकूलित घर भी बन गए है।22

11. गोमूत्रः गोमूत्र कड़वा, चरचरा, कशैला, तीक्ष्ण, शीघ्र पाचक, मस्तिष्क के लिए शक्ति वर्धक, कफ, वात हरने वाला, शूल, गुल्म,अनाह, दर्द, खुजली, मुखरोग नाशक, कुष्ठ, आम बस्तिरोग नाशक, नेत्र रोग, अतिसार, वायु के द्वारा सब विकार, कास, शोथ, उदररोग, कीटणुनाशक, पाण्डु, तिल्ली, कर्णरोग, श्वास, मलावरोध, कामला, बिल्कुल ठीक हो जाते हैं।

गव्यं सुगधरूं किन्चद् दोशध्नं कृमि कुष्ठनुत्
कण्डुन्घ्न,शमयेत,पीतंसम्यक् दोषों वहे हितम् ।23

चिकित्सा में गोमूत्र काही प्रयोग करना चाहिए सभी मूत्रों में गोमूत्र में ही अधिक गुंण होते हैं। भाव प्रकाश संगृह ग्रंथ में भाव मिश्र ने निम्न गुंण दिए हैं। भाव प्रकाश आयुर्वेद का अतिप्रचलित ग्रंथ है गोमूत्र चरपरा, तेज, गरम, क्षार, कडुआ, कसैला, लवण, अनुरस, लघु, अग्निदीपक, मष्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं को बढ़ानेवाला, वात, कफ नाशक पित्त करने वाला, पेट में दर्द, वायुगोला, पेट के अन्य रोग, खुजली, नेत्र रोग, मुख के सभी रोगों को नष्ट करता है। सफेद दाग, ल्यूकोडरमा, ए रक्त विकार, सभी प्रकार के कुष्ठ रोग ठीक हो जाते हैं। कास श्वाथ, शोथ, पीलिया, रक्त की कमी, दस्त लगना, वायु के सभी रोग, सभी प्रकार के कीटाणु नष्ट करता है आम वृद्धि, मूत्र रोग, स्नायु, विकार, 80 प्रकार के वात रोग नष्ट होते हैं। गोमूत्र अकेला ही पीने से विकार नष्ट करने में पूर्ण रूपेण सक्षम होता है। लीवर तिल्ली, उदर रोग, सूजन, दस्त साफ न आना, बवासीर, कर्ण में डालने से कान का रोग समाप्त होते हैं।

गोमूत्र रोगों पर किस प्रकार से कार्य करने में सफल होता है यह जानने से पूर्व यह जान लें कि रोग क्यों होते हैं विभिन्न जीवाणुओं के किसी प्रकार से शरीर के विभिन्न अंगों पर आक्रमण करने के कारण, शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति की कमी के कारण, त्रिदोषों के विषम हो जाने के कारण, आरोग्यदायक तत्वों की किसी प्रकार की कमी के कारण, कुछ खनिज तत्वों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शरीर में न होने के कारण, मानसिक विषाद के कारण, किसी भी औषधी के अतिप्रयोग के कारण, विद्युत तरंगों की कमी के कारण, वृद्धावस्था में उपरोक्त किन्हीं कारणों के कारण, आहार में पौष्टिक तत्वों की कमी के कारण, माता, पिता के द्वारा आनुवंशिक रोग, विषों के द्वारा रोग होते हैं। अब गोमूत्र किस प्रकार से रोगों पर प्रभावी है यह स्पष्ट करते हैं गोमूत्र में किसी भी प्रकार के कीटाणु नष्ट करने की चमत्कारी शक्ति है। इसमें त्रिदोषों को समान बनाने की शक्ति है इस कारण त्रिदोष जन्य बीमारी नष्ट हो जाती है।

गोमूत्र शरीर में लीवर को सही कर स्वच्छ रक्तबनाकर किसी भी रोग का प्रतिरोध करने की शक्ति प्रदान करता है, गोमूत्र में सभी तत्व ऐसे होते हैं जो हमारे शरीर के आरोग्यदायक तत्वों की कमी की पूर्ति करते हैं, गोमूत्र में कई खनिज खासकर ताम्र होता है, जिसकी पूर्ति से शरीर के खनिज तत्व पूर्ण हो जाते हैं, स्वर्ण क्षार होने से रोगों से बचने की शक्ति में वृद्धि होती है, मानसिक क्षोभ से स्नायु तंत्र को आधात होता है, गोमूत्र को मेद और ह्द्य कहा जाता है क्योंकि मस्तिष्क और ह्रदय को शक्ति प्रदान करताहै। अतएव मानसिक कारणों से होने वाले आधात से ह्रदय की रक्षा करता है। इन अंगों को होने वाले रोगों से बचाता है।24

किसी भी प्रकार की औषधियों की मात्रा का अति प्रयोग हो जाने से जोतत्व शरीर में रहकर किसी प्रकार के दोष उत्पन्न करते हैं उनकों गोमूत्र अपनी विषनाशक शक्ति से नष्टकर रोगी को निरोग करता है।

विद्युत तरंगें हमारे शरीर को स्वस्थ रखती हैं ये वातावरण में विद्यमान हैं सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से तरंगें हमारे शरीर में गोमूत्र से प्राप्त ताम्र के रहने से उसके विद्युतीय आकर्षण गुंण के कारण शरीर में आकर्सित होकर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं

गोमूत्र रसायन है यह बुड़ापा रोकता है।

आहार में जो पोषक तत्व कम होते हैं, उनकी पूर्ति गोमूत्र में विद्यमान तत्वों से हो जाती है।

आत्मा के विरूद्ध कार्य करने से ह्रदय और मस्तिस्क संकुचित हो जाता है, जिससे शरीर की क्रिया कलाप पर प्रभाव होता है और हम रोग ग्रस्त हो जाते हैं। गोमूत्र सात्विक बुद्धि प्रदान कर सही कार्य कराकर इस प्रकार से हमारी रक्षा करता है।

यह भूताभिश्यंगता को भी समाप्त करता है

बड़ी बड़ी विषैली औषधियां गोमूत्र से शुद्ध की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गोमूत्र से नष्ट होने वाले रोग[25]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1. अग्निमाद्य	कफ
2. अजीर्ण	अतिसार
3. अन्तवृद्धि	गुल्म
4. वमन करना	विरेचन
5. अल्पपित्त	अपस्मार
6. दाह	बालरोग
7. अन्त्रवृद्धिशोथ	दाद
8. बुद्धिमाद्य	बुद्धिमाद्य
9. भगंदर	पलित
10. अश्मरी	नेत्ररोग
11. नाशारोग	अश्टीला
12. निद्रानाश	अर्श
13. अर्बुद	आरोचक
14. अन्त्रपुच्छ प्रदाह	चक्करआना
15. भस्मक	धातुक्षीणता
	अश्थिअंग
16. अन्तस्त्रावग्रंथिविकृति	छंतरोग
17. प्रतिशयजुकाम	प्रमेह
18. वमन	रक्तस्त्राव
19. अहिफेन विष	अफारा
20. वातरोग	आमवात
21. अमाशयव्रण	हैजा
22. उदर रोग	विदध्रि
23. विष विकार	गैस
24. विसर्प	लूलगना
25. डायबिटीज	ज्वर
26. प्रवाहिका	वृक्कविकार
27. ज्वरातिसार	पांण्डु
28. खुजली	पित्तवृद्धि
29. त्वचारोग	तृषा
30. विविधवृण	प्लीहावृद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31.	शिरःशूल	बद्धकोष्ठ
32.	सूजन	बहुमूत्र
33.	हाथीपांव	श्वासदमा
34.	मदात्यय	मसुरिका
35.	सन्निपात्	मुखरोग
36.	मूर्छा	संगृहणी
37.	मूत्राघात	सुजाक
38.	मूत्रवाहिनी में वृण	स्नायुविकृति
39.	मेदोवृद्धि	स्त्रीरोग
40.	यकृतवृद्धि	स्नायुक
41.	रक्तदबाव वृद्धि	स्तनरोग
42.	रक्तपित्त	हल्लीमक
43.	उन्माद	हिचकी
44.	उपदंश	हिस्टीरिया
45.	उरूस्तोय	हृदयरोग
46.	शुक्राणुअल्पता	क्षुद्ररोग
47.	क्षुद्ररोग	कण्ठरोग
48.	कब्ज़	कुष्ठरोग
49.	मधुमेह	कर्णरोग
50.	कर्णरोग	कृमि
51.	विचर्चिका	कामला
52.	क्षयरोग	उन्माद
53.		उरस्तम्भ

आयुर्वेद की दृष्टि से गोमूत्र के तत्वों का नव्य रसायन शास्त्र के मतानुसार रोगों पर लाभ की तालिका

क्र	रासायनिक तत्वों के नाम	रोगों पर तत्वों का प्रभाव
1.	नाइड्रोजन (एनएच2,ए1)	मूत्रलवृक्क का प्राकृतिक उत्तेजक रक्त विषमयता को निकालता है
2.	सल्फर(एस) गन्धक	इससे बडी आंत की पुनःसरण की प्रक्रिया को बल प्राप्त होता है, यह रक्त शोधक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. अमोनियां(एन एच3)	यह शरीर के धातुओं, रक्त संधटकों को स्थिर करता है।अमोनिंयां गैस फेफड़ों व अंगों के संक्रमण को रोकता है
4. कॉपर (सी यू)	अनुचित मेद या उभार को बनने से रोकता है
5. आयरन,लोहा(एफ,ई)	रक्त में उचित लाल कणों का निर्माण बनाए रखता है।यह कार्य करने की शक्ति स्थिर रखता है।
6. यूरिया,सी,ओ(एन,एच2)2	मूत्र उत्सर्ग पर प्रभाव डालता हैकीटाणु नाशक है।
7. यूरिक एसिड (सी5एच4एन4ओ3)	ह्रदय शोथ नाशक,मूत्रल होने से विष शोधक है।
8. फास्फेट(पी)	मूत्रवाही संस्थान से सिकता कण (पथरी)निकालने में सहायक
9. सोडियम	रक्त शोधक, अम्लता नाशक
10. सोडियम (एन,ए)	एण्टी एसिड है।
11. पौटैशियम	क्षुधाकारक, मांसपेशी दौर्बल्य, आलस्य नाशक,आमवात नाशक है।
12. मैग्नीज़	कीटाणुनाशक, बनने से भी रोकता है। गैगरीन सड़ाघ से बचाता है।
14. कार्बोटिक एसिड	कीटाणुनाशक, बनने से भी रोकता है। गैगरीन सड़ाघ से बचाता है।
15. अन्य मिनरल्स	रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाते हैं।
16. कैल्सियम	रक्तशोधक, अस्थिपाशक, जन्तुघ्न रक्त स्कंदक है।
17. लवण	सामान्य विषमता, अम्ल रक्तता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	नाशक,जन्तुघ्न रक्त स्कंदक है।
18. विटामिन ए,बी,सी,डी,ई	जीवनीय तत्व, उत्साह स्फूर्ति बनाए रखना, घबराहट, बार बार प्यास से बचाताहै, अस्थि पोषक,प्रजनन शक्ति प्रदाता है।
19. लैक्टोज़ दुग्ध शर्करा	तृप्ति रहती है, हृदय को शक्ति देताहै स्वस्थ रखताहै, प्यास घबराहट को मिटाता है।
20. एन्जाइम	आरोग्य कारक तत्व पाचक रस बनाते है, रोगप्रतिरोधक शक्ति बड़ाते हैं
21. जल	जीवनदाता है, रक्त को तरल बनाए रखता है, ताप क्रम को स्थिर रखताहै
22. हिप्यूरिक एसिड	मूत्र के द्वारा विषों को बाहर निकालता है।
23. क्रियोटिन	जन्तुघ्न है।
24. आठ माह की गर्भवती गो के गोमूत्र में	वह सभी स्वास्थ्य वर्धक गुंण होते है
25. स्वर्ण क्षार	जन्तुघ्न, रोग निरोधक शक्ति दाता, विषनाशक है।

गो की किसी भी स्थिति में कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं होती। जिस समय में गाय दूध देती है उस समय गोमूत्र में लैक्टोज रहता है। जो हृदय और मस्तिष्क के विकारों में बहुत उपयोगी है। अभी तक गोबर और गोमूत्र के विषय में हमारे वैज्ञानिक सुप्तावस्था में थे। अब जागृति आई है। उन्होंने प्रयोगों के द्वारा गोमूत्र की उपयोगिता सिद्ध की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूची:

1. सम्पादक गोधन मासिक पत्रिका, दिल्ली
2. संवर्चसा::::::::::::यद्विलिष्टम्।।, यजु2.24
   त्वष्टानो::::::::::::::::::::::::यद्विरिष्टम्।।, अथर्व6.53.3
3. डॉ माइकेल होलिक के शोधपत्र धूप और विटामिन डी की हीलिंग पावर से, सत्य प्रकाशन सार्वजनिक रिलीज दस्तावेज 18 मई 2004
4. चत्वारि :::::::::::::::::::आ विवेश।।, ऋ 4–58–3
5. त्रिधा हितं :::::::::::::::::::::::::स्वधयानिष्टतक्षुः।।, ऋ 4–58–4
6. एता अर्षन्ति ::::::::::::::::आसाम, ऋ 4.58.5
7. सम्यक:::::::::::::::::माणाः।।, ऋ 4.58.6
8. सिन्धोरिव ::::::::::पिन्वमानः।।, ऋ. 4.58.7, ऋ. 4.58.7
9. अभिप्रवन्तु ::::::::::::जातवेदाः।।, ऋ 4.58.8
10. कन्याइव::::::::तत्पवन्ते।।, ऋ 4.58.9
11. अभ्यर्षत:::::::::::::::::::::::मधुमत्पवन्ते।।, ऋ. 4.58.10
12. घृतस्य स्तोकं सकृद आश्नाम्, ऋग्वेद 10,85,13, शतपथ11,5,1,20
13. गीता, 17/8
14. घृतं प्राश्य विशुद्धयति, मनु.5,103
15. आयुर्वै घृतम् 2.3.2.2 तैत्तिरीय संहिता, 2.3.2.2तैत्तिरीय संहिता
16. गोसेवा के चमत्कार पृ 39, पृ 39
17. स ताँल्लोकान्त्समाप्नोती :::::::शतौदनम्।।, अथर्व 10.9.6
18. शिप्रिन :::::::सहस्रेषु तुवीमघ।।, ऋ 1.29.2
19. तिस्रो ::::::::::::::दुष्प्रतिग्रहा।।, अथर्व 10–10–28, अथर्व 10–10–28
20. ब्राह्मनेभ्यो ::::::::::::ब्रह्माथो तपः, अथर्व 10–10–33
21. उपेदमुपपर्चनमासु::::::::::::::::::::::::वीर्ये।।, ऋ 6.28.8
22. सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः, ऋ5.83.8
23. वसवत्वा :::::::::::::::::::::::साग्निष्टोममति द्रव।, अथर्व 10.9.8
24. वशा :::::::::::::::::वसवश्च ये। अथर्व 10–10–30, अथर्व 10–10–30
25. प्रजापतिर्महयमेता:::::::::::::::::::संसदेम।।, 10.169.4
26. गोधन मासिक पत्रिका पृ18, पृ18
27. गो सुषमा पृ 5, पृ 5
28. कल्यांण का गोअंकपृ 402, पृ 402

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

29. तृणं चरन्ती अमृतं क्षरन्ती...........पापं मे हर गोमयः।।, कठोपनिषद्
30. गोधन ज्ञान एवं विज्ञान, गोबर भाग से
31. चरकसहिंता, अध्याय1 श्लोक100
32. गोधन ज्ञान एवं विज्ञान, गोमूत्र भाग से
33. गोधन ज्ञान एवं विज्ञान, पृ 6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रासंगिक सुझाव एवं उपसंहार

गोमूत्र मनुष्य को प्राप्त होने वाला दुर्लभ वरदान है।यह स्वस्थ व्यक्ति की स्वास्थ्य रक्षा तथा असाध्य रोगों को नष्ट करने हेतु हानिरहित आरोग्य रक्षक रसायन है। वर्तमाान समय में करोड़ों रूपये दवा एवं अस्पतालों में खर्च हो रहे हैं। फिर भी रोग एवं रोगियों की संख्या इतनी तीव्रता से बड़ रही है। ऐसे में पंचगव्य औषधि वरदान साबित हो रही है। पंचगव्य अमृतरसायन होने से इसके सेवन काल में शरीर के रोग क्षय होकर सभी उत्सर्ग अंगों से धीरे–धीरे बाहर निकल जाते हैं।गाय धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के साथ ही विविध रोगों की चिकित्सा के लिए एक केंन्द्र स्थान है।इसे एक चलता फिरता औषधालय कह सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने गाय को इतना महत्त्व दिया इसका एकमात्र कारण है गोवंश की उपयोगिता ही है।

इसकी अनुभूति हमारे पूर्वजों ने की थी। गाय की महिमा जो वेदों और प्राचीन ग्रंथों में हैं केवल उसी का गुणगान करके हम अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं कर सकेंगे, बल्कि बराबर घटती हुई गोवंश की संख्या और गोहत्या रोकने के लिए, जीवित गायों के संवर्धन और संरक्षण आदि के लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम स्वयं गौ के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए जागरूप हों और गोरक्षा, गो संरक्षण आदिके लिए अपने कर्तव्यों का निर्वाह करें, तभी हम सच्चे अर्थों में गोभक्त कहलाने के अधिकारी होंगे।अभी तक पश्चात्य् प्रभाव के कारण यही आम धारणा थी कि गाय जब तक दूध देती है तभी तक उसकी उपयोगिता है किन्तु परीक्षणों के अनुभवों तथा प्रत्यक्ष कार्यवाई से यह सिद्ध होता है कि गाय सदैव ही पूर्ण रूपेण लाभदायक ही होती है अभी जिन विषयों पर वैश्विक सम्मति प्राप्त हो रही है वह गोमूत्र की रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा वर्तमान की समस्या मूलक बने अनेक दुर्धर रोगों को जड़ मूल से समाप्त करने की अलौकिक शक्ति, अभी तक मिले अमेरिकी पेटेंटों से यह तथ्य उजागर हो गया है कि गोमूत्र अर्क व उसके अन्य उत्पादनों में स्वास्थ्य व आरोग्य की पूर्ण क्षमता है। गो दुग्ध से ही प्रारंभ करें तो देशी गोनस्ल का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दूध न केवल पोशक व शक्ति वर्धक है बल्कि विशेष परिस्थितियों में प्रबल रोग प्रतिरोधक भी है।

घी अनेक मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों पर रामबाण औषधी है। ज्यों ज्यों इन पर अनुसंधान हो रहे हैं उनकी नई उपयोगिता पर प्रकाश पड़ रहा है गर्भावस्था में यह मां के स्वास्थ्य के साथ ही बच्चे के लिए किस प्रकार से उपयोगी होता है यह वैद्यों के द्वारा ही स्पष्ट हो जाता है।भारत में होने वाले इन पृगतिशील अनुसंधानों के परिणामों से हमें ज्ञात हो जाता है कि गोदुग्ध, गोमूत्र की उपयोगिता पाश्चात्य् समाज ने बरसों पहले ही भांप ली थी और भारत की उन नस्ल के गोवंश को पूरी तरह से समाप्त करने का षडयंत्र तो रचा ही साथ ही उन नस्लों को अपने यहां आयात करके वहां विकसित किया और उनका आर्थिक लाभ उठाने की पूरी योजना बना ली इसीलिए गिर नस्ल की एक सुविकसित गाय की कीमत लाखों रूपये तक पहुंच गई है। इन नस्लों का उपयोग इनके मूल स्थानों में न हो इसकी भी पूरी व्यवस्था कर दी गई यह कहकर कि गाय का दूध अच्छा नहीं हैं भैंस का दूध आर्थिक दृष्टि से अधिक प्रचलित कराया गया फलतः आज भारत में गायों से ज्यादा भैंसें हैं। गाय के महत्त्व, आवश्यकता को इससे होने वाले आर्थिक महत्त्व तक ही सीमित कर दिया गया किन्तु हमारे प्रवर्तक वैज्ञानिकों ने अपने शोधकार्यों के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि अपने जीवन में तो गो हमें दूध, गोमूत्र, गोबर के द्वारा धनलाभ देती है मृत्यु के उपरांत भी उसके शरीर की समाधी खाद बनाई जा सकती है, उसकी हड्डियां, सींग भी उपयोगी होते हैं।

वैज्ञानिक अब इस बात तक भी पहुंच गए हैं कि गायों को एक विशिष्ट खुराक देकर उससे प्राप्त दूध, गोमूत्र, गोबर के द्वारा विशेष प्रकार के रोगों का इलाज किया जाता है। गाय के दूध के सेवन से महिलाओं को प्रसव क्रिया में बहुत ही सुविधाजनक स्थिति प्राप्त होती है।वर्तमान विषाक्त एवं कीटनाशक तत्वयुक्त आहार से स्त्रियों के गर्भाशय में होने वाले एक प्रकार के रोग पर गाय का दूध असरकारक सिद्ध हुआ है।आयुर्वेद के अनुसार भिन्न भिन्न गायों को लेकर अलग अलग प्रकार की खुराक देकर दूध, घी से अलग अलग रोगों का इलाज किया जा सकता है।

गुजरात के जामनगर में गोसेवा अध्ययन व शोध संस्थान ने वैद्य श्री हितेश ज्ञानी के नेतृत्व में उनके इंजीनियर मित्र श्री सिद्धार्थ ने गोबर गैस पर ही अगली प्रक्रिया करते हुए बायोगैस के साथ अतिदाहक मीथेन गैस के उत्पादन का भी सफल प्रयोग किया है जो अधिक ज्वलनशीन ऊर्जा दे सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है।गांवों कस्बों तथा आवासीय बस्तियों में भगवान श्री सत्यनारायण की कथा के साथ ही अब कामधेनु कथा का भी प्रचलन हो गया है जिसमें गौ के सर्वांगीण उपयोग तथा पंचगव्यचिकित्सा का भी ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। गांवों में जानकारी प्रसारित कर उन्हें गाय की उपयोगिता समझाई जा रही है गाय के दूध, गोमूत्र, गोबर के लाभप्रद प्रयोजन के लिए प्रवृत्त किया जा रहा है। गुजरात में एक आदर्श गांव का सृजन करने की पहल की जा रही है जिससे हर घर में गाय की उपयोगिता के साथ उसके पंचगव्य से निर्मित वस्तुओं से हर परिवार की आर्थिक संपन्नता का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सके।

ऐसा ही एक बड़ा उदाहरण रायसेन जिले कि इमलिया गौंडी में जाकर देख सकते है कि उस गांव में गांव के लोगों की जिंदगी में गौ पालन ने एक बड़ा बदलाव ला दिया है। एक तरफ जहां वह लोगों के रोजगार का जरिया बन गई है, वहीं लोग गाय की सौगंध खाकर नशा न करने का संकल्प ले रहे हैं। और उस पर कायम भी है। गांव के 95 प्रतिशत लोग अब तक नशा न करने का संकल्प ले चुके हैं। इमलिया गौंडी गांव में पहुंचते ही गौ संवर्धन की छवि उभरने लगती है क्योंकि यहां के प्रत्येक घर में एक गाय है। इस गाय से जहां वे दूध प्राप्त करते हैं वहीं गोमूत्र से औषधियां, गोबर से गोबर गैस, खाद, उपले बनाकर गांव वालों को रोजगार भी मिला है। भोपाल के गायत्री शक्तिपीठ ने इस गांव के जंगल में गौशाला स्थापित की है गौशाला के जरिए उन परिवारों को गाय भी उपलब्ध कराई जा रही है जिनके पास गाय नहीं है। अभी तक 150 परिवारों को गाय उपलब्ध कराई जा चुकी है। गौशाला मे हर रविवार को ग्रामीड़ क्षेत्र के लोग औषधि बनाना सीखने आते हैं। गोशाला के लोग निःशुल्क इन ग्रामीड़ों को 44 प्रकार की औषधिंया बनाना सिखाते हैं साथ ही गरीब किसानों को निशुल्क खाद और एक गाय भी दी जाती है।

गौशाला का संचालन करने वाले डा. शंकरलाल पाटीदार ने बताया कि यह गौशाला 22 एकड़ क्षेत्र में फैली हुई है और यहां अलग अलग प्रजाति की 350 से अधिक गाय मौजूद हैं यहां आने वाले ग्रामीणों को गोबर और गोमूत्र से बनने वाली औषधिंयां बनाने का प्रशिक्षण दियाजाता है, इससे एकओर तो गाय परिवार के लिए दूध देती है वहीं गोबर और गोमूत्र से बनने वाली औषधिंयां आय का साधन भी बन रहीं है साथ ही जैविक खाद को प्रोत्साहन और बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।इस गांव में 2500 की आबादी है और लगभग 450 घर हैं जिसमें अब तक 150 गाय गौशाला की ओर से दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जा चुकी है। पिछले वर्ष गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ.प्रणव पण्ड्या की अध्यक्षता में इसी गांव में राष्ट्रीय गौ– विज्ञान कार्यशाला का आयोजन हुआ था। तभी से यहां पर गोमूत्र व गौ आधारित पदार्थों से कई प्रकार की दवाईयां बनाना सीखने के बाद कई महिलाओं ने अपना स्वयं का रोजगार स्थापित किया है। गौ संरक्षण, गोपालन, गो संवर्धन सबका कर्तव्य है डॉ. पण्ड्या ने कहा हमने गांव वालों से किया वादा पूरा कियाहै, अब इसे निरंतर जारी रखने का कार्य ग्रांम वासियों का है। बदली हुई गांव की तस्वीर आने वाले दिनों में समाज की तस्वीर बदलेगी।

गायत्री परिवार के प्रमुख केन्द्र शांतिकुंज के मीडिया सेल की तरफ से बताया गया कि इस गांव की ही तरह कई और जगहों पर भी गौ संरक्षण का कार्य चल रहा है जिसमें उत्तराखंड का भोगपुर, हरिद्वार तथा मध्यप्रदेश में सेंधवा, बुरहानपुर आदि प्रमुख हैं। यह खबर गांव के लिए गाय बनी वरदान के नाम से सुदर्शन न्यूज में 30 जनवरी 2016 को छपी थी। गाय का महत्त्व विषद करते हुए गोसेवा से होने वाले कुछ आश्चर्यजनक परिणाम भी प्राप्त हुए हैं जैसे पूरी श्रद्धा से गाय के उपर चार माह तक प्रतिदिन 30 मिनट हाथों से सहलाने से बिना किसी औषधि के रक्तचाप जैसी बीमारी समाप्त होने को व्यक्तिगत प्रमाण प्राप्त हुआ है। गोमूत्र अर्क के इलाज से कैंसर जैसी बड़ी बीमारी पूरी तरह से समाप्त होने के कई प्रमाण भी मिले हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि गाय भारत देश की तारनहार हो सकती है यदि हम उसकी उपयोगिता समझ लें और उस ज्ञान विज्ञान को कार्य रूप में परिणत करें इस उपजाऊ भारत भूमि को कृत्रिम खाद व कीटनाशकों ने बंजर बना दिया है उसे गोबर गोमूत्र से बन उर्वरकों से पुनः जीवित करे। हर परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है यदि वह गोपालन करें और भुखमरी और बेकारी से बचें।गोशालाओं में देशी गायों की नस्लों को ही विकसित किया जाए उन्हें प्राकृतिक खुराक दी जाए तो वह और अधिक दूध देने में सक्षम हो सकेंगी।

प्रत्येक समृद्ध उच्चस्तरीय मध्यम वर्ग के परिवार के गोप्रेमी व्यक्ति को कम से कम एक गाय का पालन अवश्य करना चाहिए या स्वयं न कर पाने की स्थिति में जो गाय गोसदन या गोशाला में रहती है उसके खर्च का जिम्मा लेना चाहिए। भारतवर्ष में जितने व्यक्ति इस कार्य को करने में सक्षम हैं यदि वे सभी अपना कर्तव्य निभा लें तो कोई भी गाय कभी भी कसाई के हाथ नहीं बिक सकती। फिर स्वतः ही हम गोवध को रोकने में सक्षम हो जाऐंगे। विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुद्रा के लालच में हम विदेशों में गोमांस भेज रहे हैं। यह तो कृतघ्नता और क्रूरता की पराकाष्ठा है क्या हम अपने वृद्ध माता पिता को धन के लालच में बेंच सकते, उन्हें कसाइयों के हाथों वध के लिए भेज सकते हैं? गाय की हिंसा से गोवंश के नाश की भयंकर समस्या उपस्थित हो गई है। गोबर की खाद सर्वोत्म खाद है।

बैल से जोते गए खेत की ऊर्वरा शक्ति नष्ट नहीं होती, आज डी.ए.पी. , यूरिया आदि रासायनिक खादों ने तथा ट्रेक्टर की गहरी जुताई ने हमारे खेतों की उर्वरा शक्ति नष्ट कर दी है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी भारत भू अन्नपूर्णा बनी रहे, हमारे बच्चे तेजस्वी, वर्चस्वी ओजस्वी और प्राणवान् हों तो हमें गायों को अच्छी तरह से पालना होगा उनकी रक्षा करनी होगी, उनकी हत्या को सर्वांश में रोकना होगा। हम अहिंसक तरीके से सरकार पर दबाव डालें कि गोहत्या पर प्रतिबंध लगे। गाय की हत्या अपने धर्म और संस्कृति की, अस्तित्व, आर्यत्व की भी हत्या है। यद्यपि पिछले 10–15 वर्षों से भारतीय ग्रंथों में समाए ज्ञान को विद्वान वैज्ञानिकों द्वारा लाभ उठाते हुए पेटेंट भी हासिल करने में सफल हो रहे हैं किन्तु सर्वसाधारण स्तर पर इन ग्रंथों में समाए अभूतपूर्व ज्ञान भंडार की जानकारी के अभाव में इनका अध्ययन करने वालों को आदिकालीन धार्मिक अंधविश्वास से ग्रसित और पिछड़ा हुआ व्यक्ति ही समझा जाता है। फलस्वरूप यह कर्मकाण्डीय पंडितों का व्यवसाय बनकर रह गया है। हम भारतीयों को यह समझना और समझाना आवश्यक हो गया है कि इन प्राचीन ग्रंथों के रचनाकार उच्चस्तरीय भविष्य द्रष्टा और वैज्ञानिक थे। उन्होंने अपने स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त कर मानव जीवन को चिरकालीन् बनाए रखने में असाधारण भूमिका निभाई है और यह सिखाया है कि कैसे प्रकृति से तालमेल रखते हुए विकासरत रहना है जिसमें जियो और जीने दो का सिद्धांत निहित है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और भविष्य में भी रहेगा इस दूरदर्शिता के आधार पर ही हमारे इन विद्वान पूर्वजों ने भारतीय गोधन को मात्र दूध प्रदान करने वाला पशु ही नहीं माना अपितु उसे कामधेनु के रूप में समस्त भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करने वाली एक अनमोल जैवऊर्जा के स्त्रोत के रूप में समाज में प्रतिष्ठित किया। हमारे पूर्वजों ने गोबर गोमूत्र आधारित जैव कृषि में सुविज्ञता प्राप्त करनी आरंभ की तो अनाज, साग, सब्जियां व फलों का उत्पादन बढ़ने लगा इसी बीच पंचगव्य तथा जड़ी बूटी आधारित औषधज्ञान हमारे पूर्वज प्राप्त कर चुके थे। इसके बाद उन्होंने भारतीय गोधन जो दूध देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में सक्षम हो या नहीं को पूर्ण संरक्षण प्रदान करने का विचार किया और सफल भी हुए। इस समय में भारतीय गोधन की संख्या मांस भक्षण के कारण लगातार घटती ही जा रही थी जो भविष्य में नुकसान दायक हो सकता था तात्पर्य यह है कि गोहत्या का आदेश कोई धार्मिक आदेश नहीं है। यह सब बनाई गई बातें हैं।

यह परंपरा तो उसी प्रकार एक पर्यावरण संगत आधारभूत जैव ऊर्जा स्त्रोत को संरक्षण प्रदान करने के सफल व्यावहारिक प्रतिबद्धता से उभरी आर्थिक व्यवस्था का आदर्श स्वरूप है। जिस प्रकार वृक्षों को काटना आज अपराध माना जा रहा है क्योंकि यह तो जनकल्यांण व्यवस्था का अंग है ताकि अर्थव्यवस्था सदैव गतिशील रूप में विकाश करती रहे। इसीलिए यह तो अत्यंत खेद का विषय है कि भारत में गोमाता को केवल धार्मिक प्रतीक समझते हुए उसे मात्र राजनीति का मोहरा बना दिया गया है।

हम शायद अपने देश के इतिहास से भी विमुख हो चुके हैं, इसलिए शायद यह नही जाानते कि अधिकतर मुस्लिम शाशकों ने भी गोहत्या के उपर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। बादशाह अकबर ने तो एक कदम आगे बढ़कर कसाइयों को पृथक रहने का कानून बना दिया था,जो नागरिक उनसे मेल जोल रखते थे उन्हें जुर्माना देना पड़ता था। सभी बुद्धिमान मुस्लिम शाशक भली भांति समझ चुके थे कि भारतीय परिदृश्य के अंतर्गत स्वदेशी गोधन अपने भौतिक स्परूप व पंचगव्य के माध्यम से सार्वभौम आर्थिक समृद्धता प्रदान करने वाला एक शशक्त जैव ऊर्जा का स्त्रोत है चाहे वह नागरिकों के स्वास्थ्य संरक्षण का प्रश्न हो या भोजन के लिए अनिवार्य अन्न, सब्जी, फल उत्पादन वृद्धि की बात या नागरिकों की आर्थिक समृद्धता से नियमित राजस्व प्राप्ति की हो।

इस ज्ञान के अभाव में आज हमारे देश में गोमाता के संदर्भ में नकारात्मक दृष्टिकोण उभर चुका है, स्वदेशी गोधन को एक समस्या के रूप में प्रचारित किया जाता है। अब तो आधुनिक विशेषज्ञ भी यह मानने लगे हैं कि खान पान व जलवायु का प्रभाव जीवों में स्थापित होता है औद्योगीकरण प्रदूषण, बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याऐं शहरीकरण, ग्रामों की दुर्दशा तथा गंदगी के कारण साधारण व्यक्ति के स्वास्थ्य पर कितना गंभीर परिणाम हुआ है देश के 17 राज्यों का जल प्रदूशित हो गया है क्योंकि उसमें कीटनाशक तत्वों का प्रयोग आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है। जिसके कारण अनेक समस्याऐं खड़ी हो गईं हैं रोगों का फैलाव हो गया है खेतों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पड़ने वाले कीटनाशकों के कारण खाद्यान्न में भी विषैले तत्त्व प्रवेश कर गए हैं और लोगों के शरीर को व्याधि से भर दिया।

प्रकृति से छेड़छाड़ न की जाए चाहे विकाश की गति मंद ही क्यों न हो क्योंकि व्याधिग्रस्त विकाश किसी काम का नहीं। अभी कुछ दिन पूर्व ही बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, मड काऊ डिसीज रोग के कारण पशुधन के साथ ही आर्थिक हानि भी अपरिमित हुई वास्तव में यह सब उन विशाक्त कीटनाशकों के कारण ही हो रहा है जो अधिक उत्पादन कराने के लिए खेतों में डाले जा रहे हैं वही भोजन के माध्यम से मानव शरीर में प्रविष्ट हो रहे हैं। भारत में आज भी 138 प्रकार के कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है जिनमें अधिकांश का प्रयोग पश्चिमी देशों में बंद हो गया है परंतु हमारे देश में उनका बिक्री ऊची कीमतों पर धड़ल्ले से की जा रही है।

सरकार उनके लिए प्रोत्साहन भी दे रही है। ज्ञातव्य है कि पॉल मुलर ने 1938 में डी.डी.टी. का आविष्कार किया था पर यह जहरीला विष उन्हीं देशों में दस वर्षों के अंदर ही निषिद्ध कर दिया गया था। इन दवाओं के कारण गुर्दे निष्क्रिय हो रहे हैं और नवजातों में अपंगता बड़ रही है, कैंसर व दिमागी रोगों में वृद्धि हो रही है, प्रजनन क्षमता में भी इसका प्रभाव देखने को मिला है पहले बहुत कम ही सुनने में आता था कि उस व्यक्ति के संतान नही है किन्तु अब तो हर 10 में से 2 लोगों के संतान नही हो रही है किसी को तो इलाज से हो जाती है किसी को वो भी नही हो रही है।

अब शालेय पाठ्यक्रम में एक अध्याय पशु पक्षी विषयक होना चाहिए। विशैले कीटनाशकें के स्थान पर गोमूत्र से उपचारित खाद व कीटनाशकों को ही उपयोग में लाऐं। वर्तमान में अनियंत्रित वेग, अनावशयक तनाव, मनोरूग्णता आदि चरम पर है इसका मुख्य कारण पर्यावरण में अस्थिरता का होना ही है। किसानों ने गाय का दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी खना बंद कर दिया और अपनी नई पीड़ी को कमजोर और आलसी बना दिया। वे गोबर गोमूत्र खाद का प्रयोग न करके केमिकल खाद का प्रयोग करने लगे परिणाम स्वरूप गोधन बेकार लगने लगा, कसाइयों के हाथ बेचा जाने लगा रोगों को आमंत्रित किया जाने लगा यही कारण है कि भारतीय गोधन के पंचगव्य में असाधारण स्तर के उपचारिक/जैव उत्पादन क्षमता वाले गुंण समाए हुए हैं क्योंकि वे हजारों वर्षों से जंगली व चट्टानी इलाकों में नाना प्रकार की जड़ी बूटियों व घास पात खाते आए हैं इसीलिए केरल, पश्चिम बंगाल, नागालैंड, मिजोरम, अरूणांचल प्रदेश, मेघालय, त्रिपुरा, मणिंपुर इन प्रदेशों के गोधन में अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रदेशों के गोधन से कहीं अधिक उच्च स्तरीय गुण पाए जाते हैं।

इनका असाधारण लाभ इन प्रदेशों के नागरिक उठा सकते हैं क्योंकि जैव प्रौद्योगिकी व्यवसाय/रसायन मुक्त व्यवसाय व औषधियां विश्व का मुख्य व्यापार बनने की कगार पर ही है। विश्व के व्यापार विश्लेषकों के अनुसार अगले एक दो दशक के भीतर ही 60 प्रतिशत से अधिक व्यापार जैव प्रौद्योगिकी उत्पादनों में होने लगेगा। पंचगव्य आधारित उद्योग प्रसार से इन प्रदेशों के नागरिकों की आमदनी में वृद्धि होगी और स्थानीय स्तर पर रोजगार भी उपलब्ध होने लगेगा। अखिल भारतीय स्तर पर जनजागरण अभियान चलाना एक महत्त्वपूर्ण विषय बन चुका है ताकि भारतवासी जान सकें कि स्वदेशी गोधन में प्राकृतिक वरदान स्वरूप अनेकों गुंणकारी विशेषताऐं विद्यमान हैं जिनकें माध्यम से घर बैठे पैसा कमाया जा सकता है बड़े बड़े महानगरों में तो अब गोमूत्र बाजार में भी बिकने लगा है इस प्रकार की जागरूकता वृद्धि होने पर कोई भी नागरिक अपना गोधन आवारा नहीं छोंड़ेगे।

पिछले कुछ वर्षों से इस प्रकार का चिंतन भारत में उभरने लगा है कुछ प्रांतीय सरकारें व कई गैर सरकारी संस्थान गली कूचों में आवारा घूमते गोधन के लिए पृथक से गोशालाऐं स्थापित कर जैव खाद, कीटनाशक उत्पन्न करने लगे हैं। इन प्रयासों से गोधन के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है और कई गायें विशेष उपचार से पुनः दूध देने में सक्षम भी हुईं है। प्राचीन भारतीय परंपरा के चलते यहां परिवारों में संपूर्ण वैदिक परंपराओं का ज्ञान होता था कितनी सरलता से अभूतपूर्व विलक्षण कुशाग्र बुद्धि, विस्मयकारी स्मरण शक्ति द्वारा युवा पूर्ण होते थे। इतनी विलक्षण मस्तिष्क शक्ति को हम सब भारतीय कभी महत्त्व नहीं देते हम इसे स्वाभाविक मान बैठते हैं।

ऐसी बुद्धि का परिचय विश्व की किसी भी सभ्यता में इतने साधारण रूप में कभी भी नहीं पाया जाता यह एक पुस्तक का विषय है कि मानव मस्तिष्क पर यह विस्मयकारी प्रभाव केवल भारत में ही क्यों देखने को मिलता है? आधुनिक विज्ञान यह बताता है कि मानव मस्तिष्क का 70: भाग वसा का होता है केवल एक विशेष प्रकार की वसा ही मानव मस्तिष्क का पोषण करती है विज्ञान की भाषा में इन्हें DHA (DocosoHexaenoicAcid) और EPA(Ecosapentaenoicacid) कहते हैं। पाश्चात्य आयुर्विज्ञान Phospatidylserine का प्रयोग प्रौढ़ों की स्मरण शक्ति सुधारने के लिए करते हैं जो गाय के मस्तिष्क में पाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बूचड़खानों से गौ के मस्तिष्क से इस तत्व को निकालकर स्मरणशक्ति से बढ़ाने की औषधी बनाई जाती है। कृत्रिम रूप से इसे सोयाबीन के तेल का भी निकाला जाता है। आधुनिक विज्ञान यह बताता है कि मानव मस्तिष्क को बनाने वाले DHA और EPA वसा प्राकृतिक रूप से केवल हरे चारे पर पोषित गौ के दूध मे ही पाए जाते हैं। केवल इन्हीं दो तथ्यों से समझा जा सकता है कि भारत में गोचर में पोषित गोदुग्ध को अमृत क्यों कहा जाता है। वैज्ञानिक अब विटामिनक को एक महत्वपूर्ण तत्व मानने लगे हैं मानव के स्वास्थ्य में यह विटामिन एक अनिवार्य पोषक तत्व बताया जाता है। कृत्रिम मस्तिष्क की नींव पिता द्वारा माता के गर्भ में स्थापित की जाती है, गर्भ में माता से जैसा पोषण मिलता है शिशु वैसे ही बड़ता है उसके उपरांत आहार में जैसा पोषण प्राप्त होता है। इस समय भारत सरकार का 40 हजार करोड़ के लगभग चिकित्सा पर खर्च हो रहा है।

इनमें से केवल 10 हजार करोड़ आयुर्वेद व पंचगव्य चिकित्सा पर खर्च होता है। एलौपैथी चिकित्सा पद्धति अधूरी है क्योंकि उससे एक रोग समाप्त होकर दूसरा प्रारम्भ हो जाता है, दवाऐं भी अधिकतर विदेशी कंपनियां ही बनाती हैं जो बहुत मंहगी होती है आम आदमी की पहुंच से बाहर हैं। सरकारें चाहे तो आयुर्वेद व पंचगव्य चिकित्सा को व्यापक प्रोत्साहन देकर देश को रोग मुक्त और कर्जमुक्त बना सकतीं हैं। देश का 6 लाख करोड़ रूपया प्रतिवर्ष बच सकता है।आरोग्यभारती एवं नेशनल मेडिकोज आर्गनाइजेशन, विश्व आयुर्वेद परिषद आयुर्वेद व्यासपीठ व अखिल भारतीय व्यास परिषद निरामय 2006 के द्विदिवसीय सत्रों में विभिन्न विषयों पर चर्चाओं के दौरान वर्तमान चिकित्सा पद्धति में गोविज्ञान एवं अनुसंधान के सफल योगदान पर नीरी के वैज्ञानिक डॉ.कृष्णमूर्ति ने गोमूत्र अर्कपर किए गए विभिन्न परीक्षणों में प्राप्त उपलब्धियों के विषय में बताया कि इस अर्क में रोग प्रतिरोध की अपार क्षमता है जिसका कैंसर जैसे रोग की कोशिकाओं पर मारक और सृजनात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं।

लीवर किडनी आदि रोगों पर भी इस अर्क में विद्यमान तत्वों का प्रभाव पड़ता है। अभी तक मिले तीन पेटेंट इसके प्रमाण हैं। प्रकृति में होने वाले ऋतु परिवर्तनों के कारण प्राणी के शरीर में होने वाले बदलाव को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक औषधि का मानकीकरण होना चाहिए व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा, व्यावसायिकता, तथा सामाजिक कंटकों से बचने के लिए ही इन सभी पंचगव्य औषधियों का भी मानकी करण होना आवश्यक है। गोमूत्र के संगृहण, भंडारण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रलेखाव आदि के विषय में भी आवश्यक निर्देश होने चाहिए ताकि कोई हानि न हो, आयुर्वेद में इसका उल्लेख है।

इस प्रकार से इलाज करने से अनेक दुर्धर रोगों के इलाज का प्रमाण प्रस्तुत किया है चेहरे पर व्रणों का इलाज, लीवर की सूजन का समाप्त होना विभिन्न अंगों में कर्करोग, जीभ, फेफड़े, कुशठ रोग, श्वेत कुष्ठ आदि का भी इलाज संभव हुआ है।बरसों पुराने रोगों का प्रभाव कम करने की क्षमता इन औषधियों में विद्यमान है। हम अपने प्राचीन कालीन वैभव के आधार को भूल गए इसीलिए देश में सभी ओर दौर्बल्य आया है जब तक हम गाय का दूध पीते रहे मुगलों को टक्कर देते रहे किन्तु जब से अंग्रेज आए हमने गाय का दूध पीना बंद कर दिया और दासत्व में जकड़ गए जब से समुद्र मंथन से कामधेनु की उत्पत्ति हुई तभी से पंचगव्य चिकित्सा का भी प्रारंभ हुआ इस पंचगव्य में विष को भी समाप्त करने की क्षमता है इसे सुपर स्पेशियलिटी औषधि वर्णित करते हुए इसके प्रचार प्रसार एवं सामाजिक जागृति लाने की आवश्यकता है।

गोबर और गोमूत्र दरिद्रता नाश का परम उपाय है। गौ के शरीर को जल से स्नान कराना, सहलाना, सींगों को मलना चाहिए।

शरीर के जिस अंग में शून्यता आ गई हो उसमें गोबर को लेप करके 30 मिनट छोड़ देने पर अंग पुनः शक्तिमान हो जाएगा।

सन् 2000 के समकालीन अमेरिका के डा. मैकफर्सन ने गोबर पर दो वर्ष अनुसंधान कार्य किया उसका महत्त्व न्यूयार्क टाइम्स में छपवाया लिखा है कि गोबर के समान उत्तम कीटनाशक दूसरा उपयुक्त पदार्थ नहीं है जो कीटाणु तो नाश करता ही है किन्तु मानव शरीर को कोई विषमता नहीं पहुंचाता। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस गाय का गोबर प्रयोग किया जाए वह निरोग हो और उसका आहार भी शुद्ध हो जो सड़कों पर घूमती हुई गाय का नही होता गौशाला या घर की गायों का ही होता है।

गोमूत्र गोबर, दूध, दही, घृत, कुशा के जल को ग्रहण करने से दुःस्वप्न नहीं होते।

गोमय लेपन से कृमि कीट का विनाश होता है गोग्रास दान से स्वर्ग प्राप्त होता है।

पर पुरूष की गौ को ग्रास देना स्वर्ग प्राप्त कराता है, गौओं का हित करने वाला ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। गोदान, गोकीर्तन ;गौओं को मधुर संगीत का सुनानाद्ध द्वारा गोरक्षा से कुल का उद्धार होता है।गौ के श्वास से भूमि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पवित्र होती है, गौ की स्पर्श से पाप क्षीण हो जाते हैं। गोमूत्र गोमय कुशा से उपचारित जल, कुशाओं पर पली गौ के दूध, दही, घृत से सम्पूर्ण रोगों का नाश हो जाता है।गोमूत्र में अनेक संक्रामक रोगों को सीमित रखने की पूरी क्षमता है।गोआधारित अन्न भोजन और नियमित उपवास शरीर को रोग रहित बनाता है। प्राचीन ऋषियों की यही परंपरा है।

गो को संगीतमय, आनन्ददायक धूप, गुग्गुल से सुगन्धित वातावरण लाभ देता है।

गोपालन करने वालों की मानसिकता दिव्य ज्योति से प्रकाशित होती है वे व्यवहार कुशल कर्मयोगी, द्रढ़ निश्चय वाले, अपने लक्ष्य से विचलित न होने वाले चक्रवर्ती राजा बनते हैं और अपने ज्ञान विज्ञान से समाज को उन्नति की ओर ले जाते हैं।

विद्वान जन सामाजिक नेतृत्त्व, गृहस्थ जन अपने योगदान से गोपालन की व्यवस्था सम्भव बना कर समाज में दान पुण्य की भावनाओं को स्थापित करते हैं तथा गो की प्रेरणा से समस्त ऊर्जा और विज्ञान के योग से संसार के सब सुख साधन प्राप्त करते हैं।, गौओं की ऊर्जा का संरक्षण करना चाहिए जिससे समाज में उत्पादकता का विकाश हो आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी प्रयोग इसी दिशा की ओर इंगित करते हैं।

गौ प्रजनन व्यवस्था– अथर्ववेद में कहा गया है कि जिस समाज में गो का प्रजनन सुव्यवस्थित तरीके से नहीं होता है वहां के लोग भीख मांगते हैं

गोचर की व्यवस्था का भी वर्णन अथर्ववेद में प्राप्त होता है। सब प्रकार के साधनों के कुशल प्रबंध से गौ समाज में संपन्नता और पौष्टिकता प्रदान करती है। सभी गौओं को श्रद्धा और सेवा भाव से प्रेरित होकर सुखमय वातावरण प्रदान करो जिससे गोवंश की उन्नति हो। गो की रक्षा के लिए हम निम्न कार्य कर सकते हैं

यदि आप भारतीय हैं तो समझिए कि गाय हम सब की माता है, और उसका रक्षण हमारा कर्तव्य है।आप किसान हैं तो कृषि को गोकृषि में परिवर्तित कीजिए।

यदि आप व्यवसायी हैं तो अर्थ व्यवस्था के आधार भूत गाय, बैलों को बचाने हेतु धन को दीजिए।

यदि आप सरकारी कर्मचारी हैं तो साथ काम करने वालों को गाय के महत्त्व को समझाइए।

आप विचारक हैं तो गो की रक्षा व महत्त्व पर लेख लिखिए जो लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के चित्त चरित्र को प्रभावित करें, जिससे स्वार्थवश वे गोहत्या न करें।

आप पुलिस हैं तो कानून का पालन करते हुए गाय बैलों को कत्लखाने ले जाने वालों को पकड़िए।

आप वकील हैं तो पशु व्यापारियों के चंगुल से गाय को छुड़ाने वालों का साथ निःशुल्क मुकदमा लड़कर दीजिए।

आप न्यायाधीश हैं तो संविधान के द्वारा सुरक्षित गाय बैलों के प्रति अपराध करने वालों को दण्डित कीजिए।

आप पशु व्यापारी हैं तो देश की अपार संपदा नष्ट करने वाला गौ व्यापार बंद कीजिए।

आप लेखक हैं तो गाय बैलों के आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक पक्ष को उजागर करने वाली रचनाऐं कीजिए।

आप कसाई हैं तो गाय बैलों पर छुरी चलाकर राष्ट्रघात न कीजिए।

आप पत्रकार हैं तो गो संबन्धित समाचारों को प्रमुखता दीजिए।

आप संवेदनशील हैं तो मर्यादित आत्मभाव लोगों तक पहुंचाने के लिए गो सेवा कीजिए।

आप कवि हैं तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की भांति गौ माता की पुकार को स्वर दीजिए कि

जारी रहा क्रम यदि यों ही हमारे ह्रास का।
तो अस्त समझो सूर्य भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पाएगी।
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट भट्टी बन जाएगी।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दर्भ सूचीः

1. अथर्ववेद की सूक्तियों का अध्ययन /शोध प्रबंध, विभा शुक्ला, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर,1997
2. अथर्ववेद–गोपथब्राह्मणगत–समाज–शिक्षानुशी–लन / शोध प्रबंध, राम किशोर मिश्र, पंडित रविशंकरशुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर 1997
3. अनुसंधान गतिविधियां, गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, कामधेनु प्रकाशन कामधेनु भवन चितारओली, पं.बच्छराज व्यास चौक, महल नागपुर 2015
4. अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्यन, डा. कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी द्वितीय संस्करण
5. आउट लुक इंडिया/ पत्रिका, देबर्शी दास गुप्ता, Kanpur Gaushala 17 August 2009, http://www.outlookindia.com/article.aspx?261173
6. आदर्शगौशाला –आदर्श गांव, योजना का पांच सूत्रीय अभिनव कार्यक्रम, राजस्थान गौसेवा आयोग, जयपुर
7. इंडिया टुडे पत्रिका, संपादक अरूण पुरी, अक्टूबर 2015 साप्ताहिक पत्रिका गाय पर राजनीति पृ 17.19' 21
8. किसान और गाय, स्वामी रामसुखदास, गीताप्रेस गोरखपुर,कोलकाता उन्तीसवां संस्करण
9. कल्यांण/ स्वदेशी गोमाता भारत को विकसित राष्ट्र बनायेंगी /पत्रिका, राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुरसंख्या 10 संस्करण अक्टूर, 2007
10. कल्याण/गोवंश हत्या पाबंदी पर उच्चतम न्यायालय का निर्णय / पत्रिका, राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुर संख्या 10 संस्करण अक्टूबर, 2007
11. कल्याण/गोमये वसते लक्ष्मी/पत्रिका, राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुर संख्या 11 संस्करण नवम्बर, 2006
12. कामधेनु शतकम पं. श्रीराम दवे, श्रीराम दवे, श्री ललिता आश्रम प्रन्यास 559 बी, सी रोड जोधपुर द्वितीय सं. 2013
13. गौ–अमृत, अब्दुल सादिक वारसी, मां कालीशंकर सेवासमिति, कवर्धा
14. गो–अंक कल्यांण, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस गोरखपुर वार्षिक, संस्करण चतुर्थ
15. गोसेवा–अंक कल्याण, राधेश्याम खेमका, गीताप्रेस गोरखपुर वार्षिक संस्करण द्वितीय
16. गोरक्षा एवं गो संवर्धन, राजेन्द्र दास जी, गीताप्रेस गोरखपुर, कोलकाता, दसवां संस्करण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

17. गो सुषमा, चेतसानंद, सुषमा सेवाप्रकाशन, कांदीवली पूर्व मुंबई, हिन्दी में प्रथम संस्करण
18. गो करूणा निधि, महर्षि दयानन्द सरस्वती, विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द नई दिल्ली, संस्करण 2010 इक्यानवेंवां वर्ष
19. गो गीत, गोरक्षण सभा, कामधेनु प्रकाशन, कामधेनु भवन चितारओली, पं.बच्छराज व्यास चौक, महल नागपुर नागपुर
20. गोरक्षा का घोषणापत्र, डा. रामजी सिंह, सुरभि शोध संस्थान रविन्द्रपुरी वाराणसी
21. गोसेवा के चमत्कार सच्ची घटनाऐं, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस गोरखपुर संस्करण बत्तीसवां
22. गोवेश संरक्षण प्रदीपिका, विजय कुमार जितेन्द्र, गेसंवर्धन सेवा समिति न्यास लखनऊ तृतीय संस्करण 2010
23. गो ज्ञान कोष, प्राचीन खंड वैदिक विभाग प्रथम खंड ऋग्वेद से उपनिषद तक, पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, श्री गोवर्धन संस्था वाई पूना बंबई
24. गो ज्ञान कोष, द्वितीय विभाग, पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, वसंत श्रीपाद सातवलेकर श्री गोवर्धन संस्था वाई पूना बंबई
24. गाय भारतीय जनजीवनऔर ग्राम्य अर्थतंत्र की धुरी, सम्पादक जनसंपर्क संचालनालय, आयुक्त जन सम्पर्क संचालनालय मध्यप्रदेश भोपाल
26. गोभक्तमाल,गोरंजिनी, कवित्तमयी टीका, रामस्वरूप दास, श्रीगोपाल गोवर्धन धर्मशाला आनन्दवन पथमेड़ा
27. गवार्चन प्रयोग, पं.गंगाधर पाठकः वैदिकः संपा. पं. सुरेश राज पुरोहितः, श्रीकामधेनु प्रकाशन समितिः पथमेड़ा राजस्थान
28. गोरक्षा आत्मरक्षा राष्ट्ररक्षा, परमानन्द मित्तल, गोयल स्टेशनर्स दिल्ली
29. गोधन ज्ञान एवं विज्ञान, कानपुर गोशाला का घोषणापत्र, कानपुर गौशाला सोसाइटी जनरलगंज कानपुर
30. जीरोबजट आध्यात्मिक कृषि में अनाज की फसलें कैसे लें, सुभाष पालेकर, अमित सुभाष पालेकर नमूना पेठ, अमरावती संस्करण तृतीय
31. देशी गौ एक कल्पवृक्ष कृषि संस्कृति, सुभाष पालेकर, अमित सुभाष पालेकर नमूना पेठ, अमरावती संस्करण द्वितीय
32. धर्म और विज्ञान की दृष्टि से शाकाहार, संगीता जैन, नवनीत प्रिंटिग प्रेस नागपुर प्रथम संस्करण
33. धर्मश्री पत्रिका, सं. डॉ. प्रकाश सोमण, मंदार प्रिंटर्स कसबा पेठ पुणे दिसम्बर 2015
34. पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा, गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, कामधेनु प्रकाशन कामधेनु भवन चितारओली, पं.बच्छराज व्यास चौक, महल नागपुर सप्तम संस्करण
35. पांचजन्य पत्रिका, हितेश शंकर, बिहारी लाल सिंहल द्वारा भारत प्रकाशन,संस्कृति भवन,दिल्ली 27 सितम्बर 2015
36. पांचजन्य पत्रिका, हितेश शंकर, भारत प्रकाशन,संस्कृति भवन,दिल्ली 3 मई 2015

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37. पांचजन्य पत्रिका, हितेश शंकर, भारत प्रकाशन,संस्कृति भवन,दिल्ली 27 मार्च 2016
38. ब्राह्मण ग्रंथों में आख्यानों का समालोचनात्मक अध्ययन,हरीराम रैदास, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर,1984
39. बालभारत, राजशेखर, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी
40. भारतीय संविधान द्वारा, निर्णायक सी.के. चतुर्वेदी, संकलन.विनियोग परिवार, विनियोग परिवार बोरीवली पश्चिम मुंबई
41. भारत की संस्कृति तथा कला, के.सी. श्रीवास्तव, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली संस्करण 2001
42. भारतीय संस्कृति का विकाश, डा. मंगलदेव शास्त्री, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी द्वितीय संस्करण
43. भविष्य पुराण, पंडित ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी, रणधीर प्रकाशन हरिद्वार संस्करण 2010
44. भारतीय गौ दर्शन, सुरेश कुमार सेन, भारतीय गौविज्ञान परीक्षा समिति सुभाश नगर भीलवाड़ा, राजस्थान
45. भारतीय अर्थव्यवस्था का प्राणतत्व– पशुधन, प्रो.मुरलीधर राव, स्वदेशी जागरण प्रकाशन नई दिल्ली
46. भारतीय साहित्य तथा शिल्प में विश्वकर्मा, ईश्वरशरण विश्वकर्मा, प्रतिभा प्रकाशन प्रथम संस्करण 2002
47. भारतीय गाय, संपादक आचार्य वेद भूषण, अंतराष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद
48. मुख्य उपनिषदों में चित्रित समाज व संस्कृति/शोध प्रबंध, राजेन्द्र कुमार त्रिवेदी, रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, 1972
49. सृष्टि की संरक्षक भारतीय गाय, शंकर लाल, गोसेवा विभाग, जयपुर, राजस्थान, आठवां संस्करण
50. सागरिका भारतीय संस्कृति, रामजी उपाध्याय, सगरिका समिति, महामनापुरी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी
51. सेवा साधना पत्रिका, गुरू शरण प्रसाद, 18 अगस्त 2014 पृ 38, अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स नई दिल्ली
52. श्रीमद्भगद्गीता साधक संजीवनी, परिशिष्ट सहित हिन्दी टीका, स्वामी सुखदास, गीताप्रेस गोरखपुर चौसठवां संस्करण
53. हिन्दू धर्म के सोलह संस्कार, सच्चिदानन्द शुक्ल, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली संस्करण 2012
54. वेदों मे भारतीय संस्कृति, आद्यादत्त ठाकुर, प्रतिभा प्रकाशन द्वितीय संस्करण 2000
55. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी संस्करण चतुर्थ 2008
56. वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता, मुंशीराम शर्मा, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली संस्करण 1998
57. Cows are cool, Dr. sahadeva dasa, Soul science university press

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

58. Kill cow, Dr. sahadeva dasa, Soul science university press
59. Lets be friends, Dr. sahadeva dasa, Soul science university press
60. Made for each other, Dr. sahadeva dasa, Soul science university press
61. Nobel Cow, Dr. sahadeva dasa, Soul science university press
62. Romance of the cow, Mr. dahyabhai h.jani, Soul science university press
63. The last mugals, William dalrympal, Penguin VIKING

चित्र सूची

इस शोध प्रबंध में चित्र भी दिए गए हैं जो इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त किए गए हैं–

चित्र	पृष्ठ संख्या
भारतवर्ष का चित्र	षष्ठ अध्याय पृष्ठ, 112
हृदय का चित्र	पृष्ठ, 127
गाय का पाचन तंत्र	पृष्ठ, 129

Central Library
167990
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 [struck out]-TIW-V आगत संख्या 167990

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ. रचना तिवारी

जन्म स्थान : झींझक, कानपुर (देहात), उत्तर प्रदेश

शिक्षा : पीएचडी, एमफिल, बीएड

पुरस्कार : स्वर्ण पदक विजेता-दो

सम्पर्क सूत्र : 609, गईया की गली, नया शास्त्री नगर, मेडिकल, गढा, जबलपुर, मध्य प्रदेश, पिनकोड-482003

ट्विटर:@DrRachanaTiwari

हिंदी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

फोन : 07065618655, 09213527666

E-mail : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

Website- www.hindisahityasadan.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar